Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सचित्र हिन्दी व्याकरण तथा रचना

...ाम्बर पब्लिशिंग कम्पनी

·८३५
८२ स

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सचित्र हिन्दी व्याकरण
तथा रचना

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सचित्र हिन्दी व्याकरण
तथा रचना

लेखक

सुरेन्द्र गम्भीर
एम० ए०, डि० लिङ्ग्वि०
मार्डर्न स्कूल, नई दिल्ली

रामकृष्ण शर्मा
एम० ए०
मार्डर्न स्कूल, नई दिल्ली

तथा

विमल कुमारी एम० ए०

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी
शैक्षिक प्रकाशक
888, ईस्ट पार्क रोड, करोल बाग़,
नई दिल्ली-110005. (भारत)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

संस्करण : 1984

Regmi Memorial Library
Kathmandu, Nepal
G. NO 806

मूल्य : 10/- रु० केवल

प्रकाशक

पीताम्बर पब्लिशिंग कम्पनी 888, ईस्ट पार्क रोड, करौल बाग, नई दिल्ली

मुद्रक

गायत्री आफसैट प्रैस, लाजपत नगर, नई दिल्ली

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रस्तावना

यह व्याकरण मुख्यतः मिडिल कक्षाओं के लिए ही है। परन्तु उच्च कक्षा के विद्यार्थियों के लिए भी अनेक स्थल उपयोगी होंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है। अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षा ग्रहण करने वाले छात्रों की आवश्यकताएँ कुछ मात्रा में अन्य छात्रों की अपेक्षा भिन्न होती हैं। उन आवश्यकताओं को पुस्तक की रचना में विशेष रूप से दृष्टि में रखा गया है।

इस पुस्तक के दो मुख्य भाग हैं—व्याकरण भाग एवं रचना भाग। व्याकरण भाग में स्थान-स्थान पर जो चित्र दिए गए हैं उनसे विषय मनोरंजक और सुग्राह्य बनेगा, ऐसा हमारा विश्वास है। अनेक परिभाषाओं को आधुनिकतम-ज्ञान की दृष्टि से युक्ति-युक्त बनाने का यत्न किया गया है। उदाहरण के लिए देखिए स्वर और व्यंजन की परिभाषा; इसी प्रकार सम्बन्धबोधक के बारे में पाद-टिप्पणी। हिन्दी के सभी अन्य व्याकरणों में अंग्रेज़ी के व्याकरण विषयक शब्दों के समानार्थक शब्द अशुद्ध दिए गए हैं, उन्हें भी यहाँ सुधारा गया है। इस प्रकार की अनेक अन्य विशेषताएँ पैदा करने का प्रयत्न किया गया है जिनका अध्यापक एवं छात्र स्वयं अनुभव करेंगे।

इसी प्रकार रचना भाग में भी अनुवाद-पद्धति, सवाद-लेखन, कहानी रचना, पत्र-लेखन तथा निबन्ध-लेखन के अन्तर्गत अनेक नए विषयों का चयन किया गया है। भाषा सर्वत्र सुबोध एवं सरस रहे, इस बात को दृष्टि से ओझल नहीं होने दिया गया है। हाकी के जादूगर ध्यानचन्द पर निबन्ध, लेखक की ध्यानचन्द से प्रत्यक्ष भेंट पर आधारित है। इसके अतिरिक्त घिसे-पिटे निबन्धों को छोड़कर अनेक नए विषयों पर निबन्ध दिए गए हैं।

पुस्तक का मूल्यांकन अध्यापक एवं छात्र स्वयं करेंगे। यदि पाठक इसमें कोई विशेषता पा सकेंगे तो हम अपना परिश्रम सफल मानेंगे।

पुस्तक को अधिक उपयोगी बनाने के लिए सुझावों को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार किया जाएगा।

—लेखक वृन्द

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

संशोधित संस्करण की भूमिका

इस संस्करण में पुस्तक को पूर्णतया संशोधित रूप से प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यन्त हर्ष हो रहा है। इस संस्करण में 'वाक्य रचना' पर एक नया अध्याय जोड़ा गया है। अनुवाद के लिए कुछ और उदाहरण तथा नये अनुच्छेद अभ्यास के लिए दिए गए हैं। कुछ नये निबन्ध इस संस्करण में जोड़ दिए गए हैं।

आशा है कि इन संशोधनों से पुस्तक बालकों के लिए और अधिक उपयोगी सिद्ध होगी।

अन्त में हम उन सभी अध्यापकों और स्कूलों का आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने पुस्तक का उपयोग किया है, सराहा है, और संशोधन के लिए सुझाव भेजे हैं।

—प्रकाशक

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विषय-सूची

अध्याय	विषय		पृष्ठ
	व्याकरण भाग		
१.	भाषा, व्याकरण तथा बोली	...	१
२.	वर्ण-विचार, शब्द-विचार और वाक्य-विचार	...	३
३.	शब्द-विचार	...	९
४.	संज्ञा	...	१३
५.	संज्ञा-विकार	...	१८
६.	वचन	...	२५
७.	कारक	...	२९
८.	सर्वनाम	...	३८
९.	विशेषण	...	४४
१०.	क्रिया	...	५२
११.	काल	...	५७
१२.	क्रिया-विशेषण	...	६२
१३.	सम्बन्ध-बोधक	...	६६
१४.	समुच्चय-बोधक	...	६८
१५.	विस्मयादि-बोधक	...	७०
१६.	शब्द-रचना	...	७३
१७.	प्रत्यय	...	७७
१८.	सन्धि	...	८१
१९.	समास	...	८६
२०.	पद-परिचय	...	९०
२१.	उपयोगी शब्द-संग्रह	...	९३
	(१) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द	...	९३
	(२) विपरीतार्थक (विलोम) शब्द	...	९५
	(३) पर्यायवाची (समानार्थक) शब्द	...	९७
	(४) एकार्थक प्रतीत होनेवाले शब्द	....	९७
	(५) समानदर्शी शब्द	...	९८

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(६) पशु-पक्षियों की बोलियाँ ९९
(७) कुछ तद्भव-तत्सम शब्द १००
(८) कुछ सामान्य अशुद्धियाँ १०१
(९) अंग्रेज़ी-हिन्दी शब्द-कोष १०२
२२. विराम-चिह्न १०६
२३. मुहावरे और लोकोक्तियाँ १०८
(१) कुछ प्रचलित मुहावरे १०८
(२) कुछ कहावतें ११५

रचना भाग

२४. अनुवाद १२४
२५. वाक्य १३०
२६. अर्थ के अनुसार वाक्य के प्रकार १३५
२७. अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करने की विधि १३९
२८. वार्तालाप (संवाद लेखन) १४२
२९. सार लेखन और अपठित गद्यांश १४६
३०. कहानी-रचना १५२
३१. पत्र-लेखन १५६
३२. निबन्ध-रचना १७४

—o—

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

व्याकरण भाग

: १ :

भाषा, व्याकरण तथा बोली

(LANGUAGE, GRAMMAR AND DIALECT)

भाषा तथा व्याकरण का सम्बन्ध

भाषा और व्याकरण का गहरा सम्बन्ध है। पहले भाषा बनती है और उसके बाद उसका व्याकरण। भाषा के निश्चित और शुद्ध स्वरूप को निर्धारित करने तथा उसे नियमों में बाँधना व्याकरण का काम है।

भाषा (Language)

मनुष्य विचारशील प्राणी है। वह सुनकर और पढ़कर विचारों को ग्रहण करता है तथा बोलकर और लिखकर अपने विचारों को प्रकट करता है। अपने विचारों को दूसरों पर प्रकट करने और दूसरों के विचारों को ग्रहण करने के लिए भाषा सबसे सुगम साधन है। यों तो संकेतों द्वारा भी मनुष्य अपने और दूसरों के विचारों को समझ और समझा सकता है, पर इस प्रकार व्यक्त किये गए विचार अपूर्ण और अस्पष्ट रहते हैं तथा इनसे सर्वसाधारण का कार्य नहीं चल सकता। भाषा द्वारा मनुष्य बड़ी सरलता से विचारों का लेन-देन कर सकता है।

परिभाषा—शब्दों द्वारा विचारों के आदान-प्रदान के साधन को भाषा कहते हैं। संसार में अनेक भाषाएँ प्रचलित हैं, जैसे—हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेज़ी, जर्मन, फ्रेंच आदि।

व्याकरण शास्त्र की आवश्यकता

भाषा के शुद्ध ज्ञान के लिए व्याकरण जानना आवश्यक है। व्याकरण शब्द का अर्थ है (वि+आ+करण) शब्दों के शुद्ध रूपों का विवेचन।

परिभाषा—व्याकरण वह शास्त्र है जो भाषा के स्वरूप सम्बन्धी नियमों का ज्ञान कराए।

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उद्देश्य

व्याकरण सीखना इसलिए आवश्यक है कि इसके द्वारा भाषा का **ठीक से बोलना, लिखना और समझना आ जाता है और भाषा के प्रयोग में कोई गलती नहीं होती।** व्याकरण के अभाव में भाषा की शुद्धता और एकरूपता आदि को बनाए रखना अत्यन्त कठिन हो जाता है।

बोली (Dialect)

भाषा और बोली में अन्तर है। **भाषा के क्षेत्रीय रूप को बोली कहते हैं,** अर्थात् बोली देश के किसी भी भाग में बोली जाने वाली वह भाषा है, जो केवल बोलने के प्रयोग में आती है और जिसका अपना रचित साहित्य नही होता।

लिपि (Script)

भाषा के लिखने की विधि को लिपि कहते हैं, अर्थात् भाषा में दिये गए अक्षर-चित्र ही उस भाषा की लिपि कहलाते हैं। हिन्दी और संस्कृत की लिपि 'देवनागरी' है, उर्दू की फ़ारसी तथा अंग्रेज़ी की रोमन।

साहित्य (Literature)

किसी भी भाषा के **ज्ञान के संचित कोष को साहित्य कहते हैं।** साहित्य में देश और जाति के लोगों के विचार तथा भाव मूर्तरूप स देखने को मिलते हैं। साहित्य की रचना पद्य और गद्य दोनों में होती है। कहानी उपन्यास, नाटक, एकांकी, पत्र, निबन्ध, डायरी आदि गद्य की विधाएँ हैं।

अभ्यास

१. भाषा किसे कहते हैं ?
२. व्याकरण किसे कहते हैं ? व्याकरण के अध्ययन के लाभ बताइए।
३. भाषा और व्याकरण में परस्पर क्या सम्बन्ध है ?
४. भाषा और लिपि के अन्तर को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
५. बोली किसे कहते हैं ? बोली और भाषा में क्या अन्तर है ?
६. साहित्य की परिभाषा लिखिए।
७. गद्य की विधाओं के नाम लिखिए।

————

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वर्ण विचार, शब्द विचार और वाक्य विचार
(PHONOLOGY, MORPHOLOGY AND SYNTAX)

व्याकरण के तीन मुख्य विभाग हैं—

१. वर्ण विचार।   २. शब्द विचार।   ३. वाक्य विचार।

१. **वर्ण विचार**—व्याकरण का वह विभाग है जिसमें अक्षरों के आकार, भेद, उच्चारण और उनके मिलाने की रीति बताई जाती है।

२. **शब्द विचार**—व्याकरण के उस विभाग को कहते हैं जिसमें शब्दों के भेद, रूप, व्युत्पत्ति (बनावट), रूपान्तर आदि का वर्णन होता है।

३ **वाक्य विचार**—व्याकरण का वह विभाग है जिसमें वाक्यों के भेद, वाक्य बनाने और अलग करने की रीति तथा विराम चिह्नों का वर्णन होता है।

वर्ण विचार (Phonology)

भाषा में वाक्य होते हैं। वाक्यों में शब्द होते हैं। शब्दों में वर्ण होते हैं। वर्ण को अक्षर भी कहा जाता है।

वर्ण (अक्षर) की परिभाषा—वह छोटी-से-छोटी स्वीकृत ध्वनि जिसके आगे टुकड़े न किए जा सकें, वर्ण या अक्षर कहलाती है।

वर्णमाला (Alphabet) **की परिभाषा**—किसी भाषा के वर्ण-समूह को वर्ण-माला कहते हैं।

लिपि (Script) **की परिभाषा**—हर भाषा को लिखने का एक विशेष ढंग होता है। इस लिखने के ढंग को ही लिपि कहते हैं, जैसे—हिन्दी या संस्कृत जिस ढंग से लिखी जाती है, उसे 'देवनागरी' लिपि कहते हैं। अंग्रज़ी जिस ढंग से लिखी जाती है, उसे 'रोमन लिपि' कहते हैं।

वर्ण भेद

वर्णों के दो भेद हैं—

१. **स्वर** (Vowels)—जिन अक्षरों के उच्चारण में फेफड़ों की वायु निर्बाध गति से मुख से बाहर निकाली जाए, उन्हें स्वर कहते हैं।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

२. व्यञ्जन (Consonants)—फेफड़ों से उठी वायु को बीच में पूर्ण रूप अथवा अपूर्ण रूप से रोकने तथा पुनः छोड़ने पर निकली ध्वनियाँ व्यञ्जन कहलाती हैं।

स्वर-भेद

स्वर तीन प्रकार के होते हैं—

१. ह्रस्व स्वर (Short Vowels)—जिन स्वरों के उच्चारण में कम-से-कम समय लगे; उन्हें ह्रस्व स्वर कहते हैं। हिन्दी में चार ह्रस्व स्वर हैं—अ, इ, उ, ऋ।

२. दीर्घ स्वर (Long Vowels)—जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से लगभग दुगुना समय लगे, उन्हें दीर्घ स्वर कहते हैं। हिन्दी में सात दीर्घ स्वर हैं—आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

३. प्लुत स्वर—जिन स्वरों के उच्चारण में ह्रस्व से लगभग तिगुना समय लगे, उन्हें प्लुत स्वर कहते हैं। इनका प्रयोग प्रायः दूर से बुलाने में होता है। पुकारते समय हम जिस स्वर को लम्बा करते हैं, लिखते समय उसी स्वर के आगे ३ का चिह्न लगा दिया जाता है। ३ का अर्थ है—तिगुना समय, जैसे—हे कृष्ण ३, 'ओ३म्'। परन्तु आजकल इसे प्रायः नहीं लिखा जाता।

अनुनासिक—जब स्वर केवल मुख से बोले जाते हैं, तो उनका रूप वही होता है जो ऊपर दिया गया है। परन्तु जब स्वर नाक से बोले जाते हैं तो उनके ऊपर चन्द्र बिन्दु (ँ) लगाया जाता है। ऐसे स्वर नाक से बोले जाने के कारण अनुनासिक कहलाते हैं।

स्वर जब व्यञ्जनों के साथ मिलाकर लिखे जाते हैं तो उनकी मात्राएँ ही लगती हैं। स्वरों की मात्राएँ इस प्रकार हैं—

आ	ा	इ	ि	ई	ी	उ	ु
ऊ	ू	ऋ	ृ	ए	े	ऐ	ै
ओ	ो	औ	ौ	अं	ं	अः	ः

'अ' की मात्रा नहीं होती। 'अ' से रहित व्यञ्जन इस प्रकार लिखे जाते हैं—

क् ख् ग् घ् ङ् च् इत्यादि,

और 'अ' के सहित व्यञ्जन इस प्रकार लिखे जाते हैं—

क ख ग घ ङ च इत्यादि,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

व्यञ्जन (Consonants)

व्यञ्जन के तीन भेद हैं—१. स्पर्श, २. अन्तःस्थ, ३. ऊष्म

१. स्पर्श व्यञ्जन निम्नलिखित हैं—

कवर्ग—	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
चवर्ग—	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
टवर्ग—	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
तवर्ग—	त्	थ्	द्	ध्	न्
पवर्ग—	प्	फ्	ब्	भ्	म्

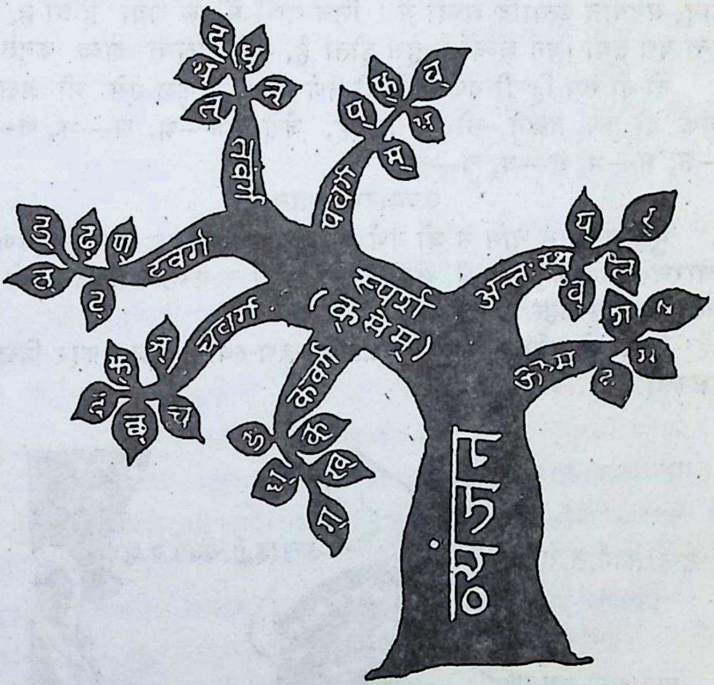

२. अन्तःस्थ व्यञ्जन निम्नलिखित हैं—

य् र् ल् व्

३. ऊष्म व्यञ्जन निम्नलिखित हैं—

श् ष् स् ह्

वैसे तो जो भी दो या दो से अधिक हलन्त (व्यञ्जन) मिल जाएँ उन्हें संयुक्त व्यञ्जन कहेंगे, किन्तु विशेष रूप में लिखे जाने के कारण देवनागरी लिपि में ये चार संयुक्त व्यञ्जन विशेष हैं—क्ष्, त्र्, ज्ञ्, श्र्।

ये दो-दो व्यञ्जनों से मिल कर बने हैं; जैसे—

क्ष्=क्+ष् त्र्=त्+र् ज्ञ्=ज्+ञ् श्र्=श+र

परन्तु 'ज्ञ्' का उच्चारण कई लोग 'ज्ञ' न करके 'ग्य' करते हैं।

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अनुस्वार (ं)—मंगल, विसर्ग (:)—अतः

अनुस्वार का उच्चारण 'म्' और विसर्ग का उच्चारण 'ह्' के समान होता है।

चन्द्र बिन्दु (ँ)—जब किसी स्वर का उच्चारण नाक और मुख से हो, तब उसके ऊपर चन्द्र बिन्दु लगा देते हैं, इसे अनुनासिक भी कहते हैं, जैसे—आँख, हँसना।

हलन्त (्)—जब किसी व्यञ्जन में स्वर नहीं होता तब उसके नीचे एक तिरछी रेखा (्) खींच देते हैं जिसे हलन्त कहते हैं, जैसे—महान्, भगवान् इत्यादि शब्दों में। जिन वर्णों में हल लगा होता है, उन्हें हलन्त वर्ण तथा जिन शब्दों में हल होता है, उन्हें हलन्त शब्द कहते हैं।

दो-दो रूप हिन्दी वर्ण—हिन्दी वर्ण माला में कुछ ऐसे भी अक्षर हैं जिनके दो रूप देखने को मिलते हैं, जैसे—अ—अ, झ—झ, ण—ण, श—श, भ—भ, ध—ध, ख—ख.

उच्चारण-स्थान

मुख के जिस भाग से जो वर्ण बोला जाता है, वह भाग उस वर्ण का उच्चारण-स्थान कहलाता है, जैसे—क् ख् ग् घ् ङ् कण्ठ से बोले जाते हैं, इसलिए कण्ठ्य कहलाते हैं।

हिन्दी के अधिकांश वर्णों का उच्चारण-स्थान इस प्रकार दिखाया जा सकता है :

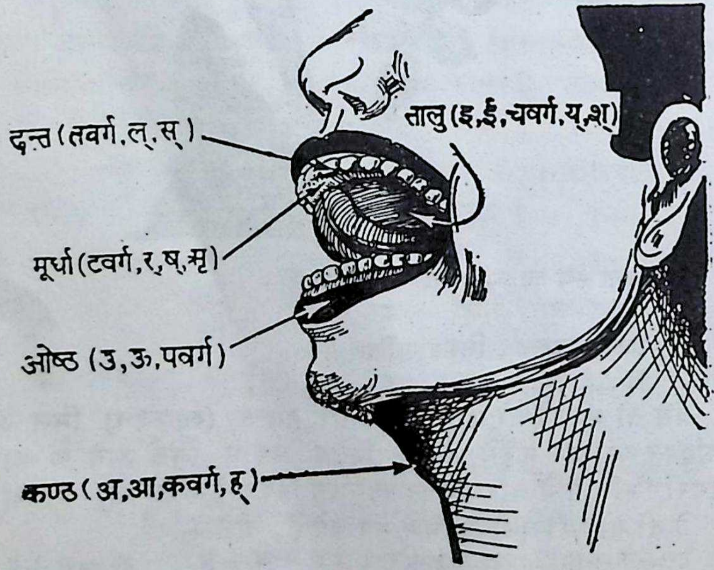

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उच्चारण-स्थानों की पूरी तालिका इस प्रकार है :

स्थान	वर्ण	नाम
कण्ठ	अ आ क् ख् ग् घ् ङ्	ये वर्ण कण्ठ्य कहलाते हैं।
तालु	इ ई च् छ ज् झ् ञ य् श्	ये वर्ण तालव्य कहलाते हैं।
मूर्धा	ऋ ट् ठ् ड् ढ् ण् र् ष्	ये वर्ण मूर्धन्य कहलाते हैं।
दन्त	त् थ् द् ध् न् ल् स्	ये वर्ण दन्त्य कहलाते हैं।
ओष्ठ	उ ऊ प् फ् ब् भ् म्	ये वर्ण ओष्ठ्य कहलाते हैं।
कण्ठतालु	ए ऐ	ये वर्ण कण्ठ-तालव्य कहलाते हैं।
कण्ठोष्ठ	ओ, औ	ये वर्ण कण्ठोष्ठ्य कहलाते हैं।
दन्तोष्ठ	व्	ये वर्ण दन्तोष्ठ्य कहलाते हैं।
नासिका	ङ्, ञ्, ण्, न्, म्	ये वर्ण नासिक्य कहलाते हैं।

अभ्यास

१. वर्ण किसे कहते हैं ? वर्ण और वर्णमाला में क्या भेद है ?

२. लिपि और भाषा में क्या अन्तर है ?

३. स्वर किसे कहते हैं ? स्वर के भेद उदाहरण सहित बताइए।

४. व्यञ्जन की परिभाषा लिखिए। स्वर और व्यञ्जन की परिभाषा में क्या भेद है ?

५. निम्नलिखित व्यञ्जनों में निर्दिष्ट स्वर-मात्राएँ लगाइए—

ह्+इ, र्+ऊ, म्+ऋ, च्+ऐ,
छ्+ऋ, ह्+ऋ, ट्+ओ, र्+उ।

६. वर्णमाला में संयुक्त अक्षर कौन-कौन से हैं ? प्रत्येक के तीन-तीन शब्द दीजिए जिसमें उनका प्रयोग हो।

७. निम्नलिखित वर्णों का उच्चारण स्थान बताइए—

र्, ड्, ख्, ए, व्, ज्, ञ्, ण्, म्, त्, य्, ष्, श्, ऊ, ऋ।

८. रिक्त-स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) भाषा के लिखने के प्रकार को.......कहते हैं।

(ख) तवर्ग का उच्चारण स्थान.......है।

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(ग) वर्णों के समूह को......कहते हैं।

(घ) स्वर के दो भेद हैं......और......।

(ङ) क्ष्, त्र्, ज्ञ् —ये तीनों......व्यञ्जन हैं।

९. हाँ या नहीं में उत्तर दीजिए—

(क) वर्ण और अक्षर पर्यायवाची हैं। ( )

(ख) हल् और हलन्त पर्यायवाची हैं। ( )

(ग) श् और ष् दोनों तालव्य हैं। ( )

(घ) स्वर तीन प्रकार के हैं। ( )

(ङ) व्यञ्जन तीन प्रकार के हैं। ( )

(च) अनुस्वार और अनुनासिक पर्यायवाची हैं। ( )

१०. प्रत्येक वर्ण का दूसरा रूप लिखिए :
ख, झ, ण, भ, ध, श

११. ऐसे चार शब्द लिखिए जिनके प्रारम्भ में ऋ आता हो।

१२. ऐसे चार शब्द लिखिए जिनके एक वर्ण पर ऋ की मात्रा लगती हो, जैसे कृपा।

१३ इन शब्दों के प्रारम्भिक वर्णों को ध्यान से पढ़िए। फिर सामने लिखे अर्थ को देखकर उसकी जगह ठीक वर्ण लिखिए।

क़रगोश	=	एक पशु
गर	=	मकान
चतरी	=	जिसे वर्षा में लगाते हैं।
जंडा	=	जिसे फहराते हैं।
बाई	=	भैया
थकली	=	जिससे सूत कातते हैं
तन	=	जो गाय, भैंस आदि दुधारू पशुओं के होते हैं
दनवान	=	मालदार।
टेला	=	जिस पर सामान ढोते हैं
डोल	=	जिसे बजाते हैं

— ———

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: ३ :

शब्द-विचार

(MORPHOLOGY)

परिभाषा—सार्थक ध्वनि या ध्वनि-समूह को शब्द कहते हैं; जैसे—एक अक्षर वाले शब्द **न** (नहीं), **क** अर्थात् जल (संस्कृत में), **ख** अर्थात् आकाश (संस्कृत में)। एक से अधिक अक्षर वाले ध्वनि-समूह या शब्द स्पष्ट ही हैं जैसे—अब, राम आदि।

शब्द-भेद

व्युत्पत्ति (बनावट) के विचार से शब्द तीन प्रकार के हैं—

१. **रूढ़**—जो शब्द परम्परा से किसी विशेष अर्थ को लिए चले आ रहे हों और जिनके टुकड़ों का कोई अर्थ नहीं होता, वे रूढ़ शब्द कहलाते हैं; जैसे—आदमी, पशु। इनमें आ, द, मी का अलग-अलग कुछ अर्थ नहीं है, इसी प्रकार पा, शु, भी निरर्थक है।

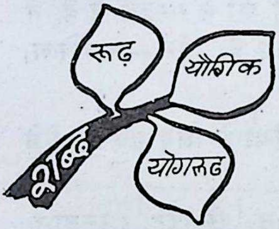

२. **यौगिक**—जो दो या दो से अधिक शब्दों अथवा शब्दांशों से मिलकर बने हों, उन्हें यौगिक शब्द कहते हैं; जैसे पाठ+शाला=पाठशाला, देव+दूत=देवदूत।

३. **योगरूढ़**—जो दो या अधिक शब्दों अथवा शब्दांशों से मिलकर बने हों और किसी **एक विशेष अर्थ** को प्रकट करने वाले हों, उन्हें योगरूढ़ शब्द कहते हैं; जैसे हिमालय=हिम (बर्फ)+आलय (घर) अर्थात् बर्फ का घर। परन्तु 'हिमालय' का अर्थ बर्फखाना आदि न होकर एक विशेष पर्वत का नाम है। इसी प्रकार जलद, जलज, दशानन, नीलकंठ, वारिज आदि शब्द हैं।

उत्पत्ति (जन्म) के अनुसार शब्दों के चार भेद हैं—

१. **तत्सम**—जो संस्कृत-शब्द ठीक उसी रूप में हिन्दी में भी

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रयुक्त होते हैं, उन्हें तत्सम शब्द कहते हैं; जैसे—आकाश, जल, पृथ्वी, पाठशाला, वायु, विद्यालय, घृत, सूर्य, दर्पण, स्नेह आदि।

२. **तद्भव**—हिन्दी के जो शब्द संस्कृत-शब्दों से बिगड़कर बने हैं, उन्हें तद्भव शब्द कहते हैं; जैसे—सूरज (संस्कृत शब्द—सूर्य), घी (संस्कृत शब्द—घृत), घोड़ा (संस्कृत शब्द—घोटक), कपड़ा (संस्कृत शब्द—कर्पट), दो (संस्कृत शब्द—द्वौ), पाँच (संस्कृत शब्द—पंच) आग (संस्कृत शब्द—अग्नि), साँप (संस्कृत शब्द—सर्प), दांत (संस्कृत शब्द—दन्त), गाय (संस्कृत शब्द—गौ) इत्यादि।

३. **देशज**—जो शब्द न संस्कृत से लिए गए हैं और न किसी और भाषा से, परन्तु हिन्दी में ही जो आवश्यकता के अनुसार बना लिए गए, उन्हें देशज शब्द कहते हैं; जैसे—पेट, पंटी, लड़का, पगड़ी, म्याऊं-म्याऊँ, भौं-भौं, खटखटाना, गाड़ी आदि।

४. **विदेशी**—हिन्दी में अनेक शब्द ऐसे हैं जो न संस्कृत से हैं, न हिन्दी के अपने, अपितु विदेशी भाषाओं से लिए गए हैं; जैसे—साईकिल, रेडियो, स्टेशन आदि।

ऐसे ही अनेक विदेशी शब्द अनेक भाषाओं से लिए गए हैं। ऐसे कुछ शब्दों की सूची नीचे दी गई है—

(क) **अंग्रेजी**—साईकिल, रेडियो, स्टेशन सिगरेट, फुटबाल, डाक्टर, बोतल, पैंसिल, पैंन, टिकट, स्कूल, कालेज, मशीन, डेस्क, इंजन, बटन, लैटरबक्स इत्यादि।

(ख) **पुर्तगाली**—बाल्टी, आलू, कमरा, प्याला, पादरी आदि।

(ग) **अरबी**—अमीर, ग़रीब, तारीख़, औरत, फ़कीर, आदत, इज्ज़त, मालिक इत्यादि।

(घ) **फारसी**—किताब, मदरसा, बाग़, ख़ूबसूरत, शर्म, गुलाब, जल्दी, आदमी, इत्यादि।

प्रयोग (Function) की दृष्टि से शब्दों के आठ भेद हैं—

१. संज्ञा (Noun), २. सर्वनाम (Pronoun), ३. विशेषण (Adjective), ४. क्रिया (Verb), ५. क्रिया-विशेषण (Adverb), ६. सम्बन्धबोधक

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(Post-position),* ७. समुच्चयबोधक (Conjunction), ८. विस्मयादिबोधक (Interjection)।

इन आठ प्रकार के शब्दों को भी हम दो भागों में बाँट सकते हैं—

(१) **विकारी**—जिन शब्दों का रूप प्रयोग-भेद के कारण बदलता रहता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं; जैसे, लड़का, लड़के, लड़कों आदि अनेक रूप बनते हैं। इसी प्रकार मैं, मुझे, हमें, हमारे, आदि; अच्छा, अच्छी, अच्छे, जाता, जाती, जाते, काला, काली, काले आदि।

पहले चार भेद—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण तथा क्रिया—ये शब्द विकारी हैं।

(२) **अविकारी**—जिन शब्दों में कभी परिवर्तन नहीं होता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं; जैसे—यहाँ, वहाँ, प्रतिदिन, बिना, और, परन्तु, हे, अरे इत्यादि।

अन्तिम चार भेद—क्रिया विशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक—ये शब्द अविकारी शब्द हैं।

संक्षेप में जिन शब्दों में विकार (परिवर्तन) होता है, वे विकारी हैं और जिनमें विकार अर्थात् परिवर्तन नहीं होता, वे अविकारी शब्द हैं।

शब्द (विकार की दृष्टि से)

- विकारी
  - संज्ञा
  - सर्वनाम
  - विशेषण
  - क्रिया
- अविकारी
  - क्रिया विशेषण
  - सम्बन्ध बोधक
  - समुच्चय बोधक
  - विस्मयादि बोधक

अर्थ की दृष्टि से शब्द के दो भेद—

अर्थ की दृष्टि से शब्द के दो भेद हैं—

१. **सार्थक शब्द**—जो शब्द अर्थवाले हैं, वे सार्थक कहलाते हैं; जैसे—डण्डा-वण्डा, पानी-वानी। इनमें डण्डा, पानी सार्थक शब्द हैं।

२. **निरर्थक शब्द**—बोलचाल में सार्थक शब्दों के साथ जो अर्थ-हीन शब्द आ जाते हैं, वे निरर्थक कहलाते हैं; जैसे उपर्युक्त उदाहरणों में वन्डा, वानी इत्यादि।

---

*अंग्रेजी में इसे preposition कहते हैं क्योंकि in, on आदि संज्ञा, सर्वनाम से पहले आते हैं, परन्तु हिन्दी में 'में,' 'पर', आदि संज्ञा, सर्वनाम के बाद आते हैं, इसलिए उन्हें post-position (पर सर्ग) कहा जाता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अभ्यास

१. शब्द की क्या परिभाषा है ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

२. बनावट, उत्पत्ति, प्रयोग, विकार तथा अर्थ की दृष्टि से शब्द के अलग-अलग भेद हैं। आपके विचार में बनावट, उत्पत्ति, प्रयोग तथा विकार का यहाँ क्या अभिप्राय है ? स्पष्ट कीजिए।

३. बनावट, उत्पत्ति, प्रयोग तथा विकार की दृष्टि से शब्द के भेदों के नाम लिखिए।

४. अनेक शब्द ऐसे हैं जिन्हें हम रूढ़ भी कह सकते हैं और तत्सम भी; जैसे—पशु, मनुष्य, पुस्तक। फिर रूढ़ और तत्सम में क्या भेद है ? स्पष्ट कीजिए।

५. निम्नलिखित शब्दों के तत्सम ढूँढिए—

दूध, सच, मुँह, रात, काम, भौंरा, गाँव, कुआँ, कीड़ा, दही।

६. ऐसे दस शब्द लिखिए जो विदेशी भाषाओं से हिन्दी में ले लिए गए हों।

७. निम्नलिखिन प्रश्नों के हाँ या नहीं में उत्तर दीजिए—

(i) जिन (अविकारी शब्द)
(ii) गाना (विकारी शब्द)
(iii) तीन भेद—रूढ़, यौगिक, योगरूढ़ (उत्पत्ति की दृष्टि से)
(iv) चार भेद—तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी (प्रयोग की दृष्टि से)
(v) आठ भेद—संज्ञा, सर्वनाम आदि (बनावट की दृष्टि से)
(vi) दो भेद—सार्थक और निरर्थक (अर्थ की दृष्टि से)

८. सही उत्तर पर ठीक का निशान (✓) लगाइए।

(i) जलचर (रूढ़, यौगिक, योगरूढ़)
(ii) प्रेम (तत्सम, तद्भव)
(iii) दस (तत्सम, तद्भव, देशज)
(iv) किताब (अंग्रेज़ी, फारसी, अरबी)
(v) किन्तु (विकारी, अविकारी)
(vi) खड़ाऊँ (देशज, तद्भव, विदेशी)
(vii) सर्वनाम शब्द (विकारी, अविकारी)
(viii) समुच्चयबोधक शब्द (विकारी, अविकारी)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: ४ :

संज्ञा

(NOUN)

संसार में प्रत्येक प्राणी, स्थान, वस्तु या भाव का कोई-न-कोई नाम अवश्य होता है। उन्हीं नामों के द्वारा हम उनको बुलाते हैं या उनका वर्णन करते हैं। वे नाम ही व्याकरण की भाषा में 'संज्ञा' कहे जाते हैं।

उदाहरण—

श्रीकृष्ण ने रणक्षेत्र में अर्जुन को गीता का उपदेश दिया। इस उदाहरण में—

प्राणी—श्रीकृष्ण, अर्जुन
स्थान—रणक्षेत्र
वस्तु—गीता
भाव—उपदेश
ये सब संज्ञा हैं।

संज्ञा की परिभाषा—किसी प्राणी, स्थान, वस्तु अथवा भाव के **नाम** को **संज्ञा** कहते हैं।

कुछ और उदाहरण लीजिए; जैसे—

प्राणी—राम, कृष्ण, बुद्ध, सोहन, प्रदीप, नर, नारी, सिंह, हाथी, मोर, तोता, कीड़ा आदि।

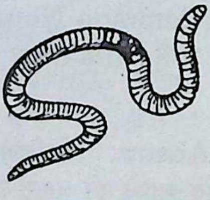

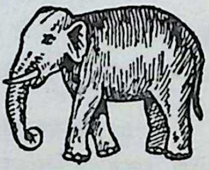

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

स्थान—दिल्ली, भारत, राजधानी, नगर, गाँव, चौक, गली, द्वीप, महाद्वीप, एशिया, यूरोप आदि।

वस्तु—पुस्तक, महाभारत, मेज़, कुर्सी, कमरा, चित्र, पर्वत, शीशा, पलग, लेखनी आदि।

भाव—गर्मी, सर्दी, सुन्दरता, शोभा, लम्बाई, चौड़ाई, विजय, दिखावट, खटाई, सुझाव, मिठास आदि।

उपर्युक्त उदाहरणों में—

कुछ ऐसे नाम हैं जो किसी विशेष (Particular) प्राणी, स्थान या वस्तु आदि की ओर संकेत करते हैं।

कुछ ऐसे नाम हैं जो किसी विशेष प्राणी, वस्तु आदि की ओर संकेत न करके साधारण जाति का बोध कराते हैं।

कुछ ऐसे नाम हैं जो ऐसे भावों का बोध कराते हैं जिन्हें न हम देख सकते हैं न छू सकते हैं, केवल इन्द्रियों द्वारा अनुभव ही कर सकते हैं।

इसी आधार पर संज्ञा के तीन भेद हैं—

१. **व्यक्तिवाचक संज्ञा** (Proper Noun)—किसी विशेष प्राणी, स्थान या वस्तु के नाम को व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—महात्मा गांधी, दिल्ली, रामायण।

२. **जातिवाचक संज्ञा** (Common Noun)—जो साधारण जाति का बोध करानेवाले नाम हैं, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—मनुष्य, नगर, पुस्तक।

३. **भाववाचक संज्ञा** (Abstract Noun)—जो नाम किसी के गुण, दोष, स्वभाव अथवा दशा आदि भावों को प्रकट करें उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—सुन्दरता, कड़वाहट, बचपन, बुढ़ापा आदि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अंग्रेज़ी व्याकरण के प्रभाव के कारण कुछ विद्वान संज्ञा के दो भेद और मानते हैं। इस प्रकार कुल भेद पाँच हो जाते हैं—

४. **समुदायवाचक संज्ञा** (Collective Noun)—समूह को प्रकट करनेवाले शब्द समुदायवाचक संज्ञा कहलाते हैं; जैसे—सेना, कक्षा, भीड़, सभा आदि।

५. **द्रव्यवाचक संज्ञा** (Material Noun)—जिन वस्तुओं से अन्य वस्तुओं का निर्माण किया जाता है, उन्हें द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—लोहा, मिट्टी, सोना आदि।

विशेष—समुदायवाचक संज्ञा तथा द्रव्यवाचक संज्ञा वास्तव में जातिवाचक सज्ञा के अन्तर्गत ही आ जाती हैं, इसलिए वस्तुत: ये जातिवाचक संज्ञा के उपभेद मात्र ही है, पृथक् नहीं।

भाववाचक संज्ञा बनाना

भाववाचक संज्ञाएँ चार प्रकार से बन सकती हैं—

१. **जातिवाचक संज्ञाओं से—**

मित्र	मित्रता	बच्चा	बचपन	पशु	पशुता/पशुत्व
स्त्री	स्त्रीत्व	सिंह	सिंहत्व	गज	गजत्व
हाथी	हाथीपन	क्षत्रिय	क्षत्रियत्व	मनुष्य	मनुष्यता (त्व)

२. **सर्वनाम शब्दों से—**

अपना	अपनापन	निज	निजत्व (ता)	सर्व	सर्वस्व
पराया	परायापन	स्व	स्वत्व	अहम्	अहंकार
मम	ममत्व (ता)	स्व	स्वार्थ	सम	समता(त्व)

३. **विशेषण शब्दों से—**

मधुर	मधुरता, माधुर्य	मीठा	मिठास
सफल	सफलता, साफल्य	खट्टा	खटास, खटाई
प्रवीण	प्रवीणता, प्रावीण्य	हरा	हरियाली
निपुण	निपुणता, नैपुण्य	सफ़ेद	सफ़ेदी
सुन्दर	सुन्दरता, सौन्दर्य	मैला	मैल

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

४. क्रिया शब्दों से—

हँसना	हँसी	उड़ना	उड़ान
लिखना	लेख, लिखाई	कमाना	कमाई
पढ़ना	पढ़ाई	रहना-सहना	रहन-सहन
उतरना	उतराई	लेना-देना	लेन-देन
चढ़ना	चढ़ाई	देखना-भालना	देख-भाल

अभ्यास

१. संज्ञा किसे कहते हैं ? पुस्तक में आए उदाहरणों को छोड़कर कोई और पाँच उदाहरण लिखिए।

२. संज्ञा के भेद लिखिए। परिभाषा के साथ-साथ पाँच-पाँच उदाहरण भी दीजिए।

३. भाववाचक संज्ञाएँ कैसी बनती हैं ? उदाहरण सहित बताइए।

४. भाववाचक संज्ञाएँ छाँटिए—

जालसाज़, लम्बाई, विद्वत्ता, हृदय, मृत्यु, आकाश, रोग, पुरुष, चीड़फाड़, क्रुद्ध, क्रोध, ऊँचाई, प्रेम, नियम, अभिमान।

५. उचित शब्दों से रिक्त स्थान भरिए—

(क) प्राणी, स्थान, वस्तु या भाव का वाची शब्द............... कहलाता है।

(ख) विशेष प्राणी, स्थान, वस्तु या भाव के नाम को.......... कहते हैं।

(ग) साधारण जाति का बोध कराने वाली संज्ञाएँ.............. कहलाती हैं।

(घ) गुण-दोष आदि के वाचक शब्द..............कहलाते हैं।

(ङ) समूह-वाची नाम..............संज्ञा कहलाते हैं।

(च) जिन वस्तुओं से दूसरी चीज़ें बनें, उन नामों को.......... संज्ञा कहते हैं।

६. संज्ञा-भेद बताइए—

बल	मिट्टी	कायरता
आकाश	ईश्वर	कोयल
मानवता	ऋग्वेद	क्रिकेट
सावित्री	देश	विजय

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दौड़	शहर	अहिंसा
कपड़ा	चन्द्रगुप्त	शेर
घबराहट	मेला	ताँबा
पराजय	उपनिषद्	घृणा

७. निम्नलिखित भाववाचक संज्ञा शब्द किससे बने हैं ?

लिखावट	(क्रिया से, विशेषण से)
अपनापन	(जातिवाचक संज्ञा से, सर्वनाम से)
फैलाव	(सर्वनाम से, क्रिया से)
रुलाई	(विशेषण से, क्रिया से)
निपुणता	(जातिवाचक संज्ञा से, विशेषण से)

८. भाववाचक संज्ञा का मूल रूप बताइए—

हारना	कृपालु	जीतना
भला	गाना	सजाना
अच्छा	दिखाना	बूढ़ा
देव	अपना	जंगली
जवान	स्व	माधुर्य

९. (अ) तुम तो विभीषण हो, यह आग तुमने ही लगाई है।

(आ) संसार में भामाशाहों की कमी नहीं है।

इन वाक्यों में दोनों रेखांकित शब्द व्यक्ति विशेष का नाम बताने के कारण व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्द हैं। परन्तु वस्तुतः ये उस प्रकार की कोटि (जाति) के मनुष्यों—घर का भेद बतानेवाले तथा दान करनेवाले—का बोध कराने के कारण जातिवाचक संज्ञा शब्द हैं।

अब आप ऐसे ही दो उदाहरण दीजिए जिनमें इसी प्रकार के प्रयोग हों।

१०. शब्दों के आगे आई, त्व, ता, पन, पा, वट, हट लगाकर एक-एक भाववाचक संज्ञा शब्द बनाइए।

———

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: ५ :

संज्ञा-विकार

(DECLENSION OF NOUNS)

प्रथम अध्याय में बताया जा चुका है कि संज्ञा-शब्द विकारी होते हैं, अर्थात् संज्ञा शब्दों में प्रसंग के अनुसार विकार (परिवर्तन) होता है; जैसे एक शब्द है—मनुष्य। इस शब्द का प्रयोग आवश्यकता के अनुसार कभी 'मनुष्य' होता है, कभी 'मनुष्यों को' या 'मनुष्यों में' आदि-आदि। इसी प्रकार 'लड़का' शब्द कभी 'लड़का', कभी 'लड़के', कभी 'लड़की' आदि रूप में बदल जाता है। यही इनका विकार या परिवर्तन है; और इसलिए ये शब्द विकारी कहलाते हैं।

लिंग, वचन, कारक इन तीनों कारणों से संज्ञा-शब्दों में विकार आ सकता है। अब इन्हीं तीनों की चर्चा की जाती है।

लिंग (Gender)

हिन्दी भाषा में 'लिंग' शब्द का अर्थ है 'चिह्न' या 'निशान'। इन्हीं चिह्नों से हम जानते हैं कि अमुक शब्द पुरुष-जाति का है या स्त्री-जाति का। पुरुष-जाति के शब्दों को 'पुँल्लिग' तथा स्त्री-जाति के शब्दों को 'स्त्रीलिंग' कहा जाता है।

परिभाषा—जिस चिह्न से यह ज्ञात हो कि संज्ञा-शब्द पुरुष-जाति का है या स्त्री-जाति का, उसे लिंग कहते हैं, जैसे—

बालक, बालिका, कटोरी, वर्षा, वसन्त आदि। इनमें 'बालक' तथा 'वसन्त' पुँल्लिग हैं तथा 'बालिका', 'कटोरी', 'वर्षा' स्त्रीलिंग हैं।

इन शब्दों में कौन-सा चिह्न ऐसा है जिससे यह पता लगता है कि अमुक शब्द पुँल्लिग है या स्त्रीलिंग ?

इन उदाहरणों में 'बालक' तथा 'बालिका' स्पष्ट रूप से ही क्रमशः पुँल्लिग तथा स्त्रीलिंग हैं, क्योंकि वे क्रमशः 'पुरुष-जाति' तथा 'स्त्री-जाति' का बोध कराते हैं। परन्तु दूसरे शब्दों का पुँल्लिग तथा स्त्रीलिंग होना व्यवहार से पता लगता है।

हिन्दी में लिंग के दो भेद हैं—

१. पुँल्लिग   २. स्त्रीलिंग

१. पुँल्लिग (Masculine)—जो शब्द पुरुष-जाति के हैं या व्याकरण

की दृष्टि से पुरुष-जाति के अन्तर्गत माने जाते हैं, वे पुँल्लिग हैं; जैसे—आदमी, दरवाज़ा, आदि।

२. स्त्रीलिंग (Feminine)—जो शब्द स्त्री-जाति के हैं या व्याकरण

की दृष्टि से स्त्री-जाति के अन्तर्गत माने जाते हैं, वे स्त्रीलिंग हैं, जैसे—औरत, कुर्सी, आदि।

लिंग की पहचान

प्राणिवाचक शब्दों की पहचान कठिन नहीं है। अगर वे शब्द नर को बताते हैं तो वे पुंल्लिग हैं, और अगर वे मादा को बताते हैं तो स्त्रीलिंग हैं।

परन्तु इस नियम का भी एक अपवाद है।

कुछ प्राणिवाचक शब्द ऐसे हैं जो या तो सदा पुंल्लिग रहते हैं या सदा स्त्रीलिंग। गरुड़, बाज, चीता, मच्छर आदि कुछ ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग सदा पुंल्लिग में ही होता है। मक्खी, मैना, मछली आदि कुछ ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग सदा स्त्रीलिंग में ही होता है।

हम हमेशा यही कहते हैं कि—

मच्छर गंदगी फैलाता है।
मक्खी गंदगी फैलाती है।

चाहे मच्छर, मक्खी नर हो या मादा, प्रयोग इसी प्रकार होगा।

परन्तु वास्तविक समस्या उन शब्दों की है जो नर या मादा प्राणियों का ज्ञान नहीं कराते अपितु प्राणहीन वस्तुओं का ज्ञान कराते हैं; जैसे—

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मेज़, कुर्सी, पैन, आकाश आदि। ऐसे शब्दों का लिंग जानने के लिए विशेष नियम नहीं हैं। इसलिए जिन लोगों की मातृभाषा हिन्दी नहीं है, वे कभी-कभी इस प्रकार गलती करते हैं, जैसे—यह कुर्सी अच्छा है, वह पैन मेरी है।

परन्तु फिर भी कुछ नियम नीचे दिए जा रहे हैं। ध्यान रहे कि ये नियम सब जगह लागू नहीं होते।

पुँल्लिग की पहचान

१. जिन शब्दों के अन्त में 'अ' आता है, वे प्रायः पुँल्लिग होते हैं; जैसे—तन, मन, धन, बन, जंगल, मेज़ आदि।

२. जिन शब्दों के अन्त में **पा, पन, त्व** आए, वे पुँल्लिग होते हैं; जैसे—बुढ़ापा, मोटापा, बड़प्पन, छुटपन, देवत्व, महत्त्व आदि।

३. पर्वतों के नाम पुँल्लिग होते हैं; जैसे—हिमालय, विन्ध्याचल, हिमाचल, आदि।

४. देशों के नाम पुँल्लिग होते हैं; जैसे—भारत, पाकिस्तान, चीन, जापान, अमरीका, आदि।

५. महीनों के नाम पुँल्लिग होते हैं; जैसे—जनवरी, फरवरी, मार्च, चैत, वैसाख, आदि।

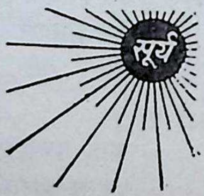

६. ग्रहों के नाम पुँल्लिग होते हैं; जैसै—सूर्य, चन्द्रमा, राहु, केतु, आदि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

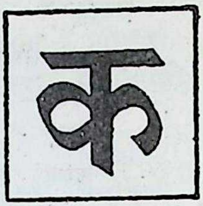

७. वर्णमाला के अक्षर पुँल्लिग होते हैं; जैसे—क, ख, अ, उ आदि (अपवाद—इ, ई, ऋ)

८. दिनों के नाम पुँल्लिग हैं; जैसे—सोमवार, मंगलवार, आदि ।

स्त्रीलिंग की पहचान

१. नदियों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे—गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, आदि ।

२. तिथियों के नाम स्त्रीलिंग हैं; जैसे—पहली तारीख, दूसरी, प्रतिपदा, पूर्णिमा आदि ।

३. भाषा, बोली और लिपियों के नाम स्त्रीलिंग हैं; जैसे—हिन्दी, संस्कृत, तेलुगू, पहाड़ी, देवनागरी, आदि ।

४. जिन शब्दों के अन्त में 'ई' आता है, वे प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं; जैसे—नगरी, कचहरी, बोली, चिट्ठी, लेखनी, आदि । (अपवाद—पानी, मोती, घी आदि) ।

५. जिन शब्दों के अन्त में 'इया' आता है, वे स्त्रीलिंग हैं; जैसे—कुटिया, खटिया, लुटिया आदि ।

६. जिन शब्दों के अन्त में हट, वट, ता, आई, या आ, आस आते हैं, वे स्त्रीलिंग हैं; जैसे—घबराहट, सजावट, मित्रता, सफ़ाई, मिठास, आदि ।

ध्यान रहे ये सब नियम बे-जान वस्तुओं के बारे में ही हैं ।

शब्दों का लिंग-परिवर्तन

पुँल्लिग से स्त्रीलिंग बनाने के लिए जो चिह्न लगाए जाते हैं, उन्हें स्त्री-प्रत्यय कहते हैं । कुछ मुख्य स्त्री-प्रत्यय इस प्रकार हैं—

सा, ई, इया, इका, इनी, इन, नी, आनी, अती ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उदाहरण—

१. कुछ संस्कृत-शब्दों के अन्तिम अक्षर 'अ' को 'आ' हो जाता है; जैसे—

बाल	बाला	शिष्य	शिष्या	प्रिय	प्रिया
कृष्ण	कृष्णा	सुत	सुता	आचार्य	आचार्या

२. अन्तिम अक्षर 'अ' या 'आ' को 'ई' हो जाता है; जैसे—

देव	देवी	घोड़ा	घोड़ी	गीदड़	गीदड़ी
दादा	दादी	दास	दासी	लड़का	लड़की
ब्राह्मण	ब्राह्मणी	बकरा	बकरी	बेटा	बेटी

३. अन्तिम अक्षर 'अ', 'आ' को 'इया' हो जाता है; जैसे—

चिड़ा	चिड़िया	बच्छा	बछिया	चूहा	चुहिया
लोटा	लुटिया	डिब्बा	डिबिया	गुड्डा	गुड़िया
बूढ़ा	बुढ़िया	खाट	खटिया	बाट	बटिया

४. अन्तिम 'अक' को 'इका' हो जाता है; जैसे—

गायक	गायिका	लेखक	लेखिका	नायक	नायिका
अध्यापक	अध्यापिका	बालक	बालिका	सेवक	सेविका

(अपवाद : नर्तक—नर्तकी)

५. व्यवसाय-सूचक शब्दों को 'इन' हो जाता है; जैसे—

लुहार	लुहारिन	कुम्हार	कुम्हारिन
कहार	कहारिन	धोबी	धोबिन
सुनार	सुनारिन	माली	मालिन

६. अन्तिम 'ई' को 'इनी' हो जाता है; जैसे—

स्वामी	स्वामिनी	तपस्वी	तपस्विनी
एकाकी	एकाकिनी	यशस्वी	यशस्विनी
अभिमानी	अभिमानिनी	मनोहारी	मनोहारिणी

७. शब्द के अन्त में 'नी' लग जाता है; जैसे—

शेर	शेरनी	भील	भीलनी	सिंह	सिंहनी
राजपूत	राजपूतनी	ऊँट	ऊँटनी	जाट	जाटनी

८. कुछ प्राणिवाचक शब्दों के अन्त में 'आनी' लगता है; जैसे—

आचार्य	आचार्याणी	देवर	देवरानी	जेठ	जेठानी
क्षत्रिय	क्षत्रियाणी	नौकर	नौकरानी	इन्द्र	इन्द्राणी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

९. अन्तिम 'आन्' को 'अती' हो जाता है; जैसे—

बुद्धिमान्	बुद्धिमती	रूपवान्	रूपवती	गुणवान	गुणवती
महान्	महती	भगवान्	भगवती	भाग्यवान्	भाग्यवती

१०. अन्तिम 'ता' को 'त्री' हो जाता है; जैसे—

कर्ता	कर्त्री	भर्त्ता	भर्त्री	वक्ता	वक्त्री
दाता	दात्री	नेता	नेत्री	रचयिता	रचयित्री

११. कुछ विशेष शब्द जिनका लिंग बताने के लिए 'नर' या 'मादा' शब्द का प्रयोग होता है; जैसे—

नित्य पुँल्लिग शब्द

खटमल	मादा खटमल	चीता	मादा चीता
उल्लू	मादा उल्लू	तोता	मादा तोता
कौआ	मादा कौआ	बाज़	मादा बाज़

नित्य स्त्रीलिंग शब्द

मछली	नर मछली	मक्खी	नर मक्खी
कोयल	नर कोयल	चील	नर चील
गिलहरी	नर गिलहरी		

१२. कुछ विशेष शब्द, जो स्त्रीलिंग में बिल्कुल बदल जाते हैं—

पिता	माता	ससुर	सास
भाई	भाभी	पुरुष	स्त्री
आदमी, मर्द	औरत	राजा	रानी
नर	मादा	युवक-युवा	युवती
बैल	गाय	वर	वधु
सम्राट्	सम्राज्ञी	विद्वान्	विदूषी
कवि	कवयित्री	विधुर	विधवा

अभ्यास

१. क्या संज्ञा शब्द विकारी होते हैं ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

२. लिंग का क्या अर्थ है ? उदाहरण सहित परिभाषा दीजिए।

३. लिंग के कितने भेद हैं ? सोदाहरण भेदों की परिभाषा दीजिए।

४. प्राणिवाचक शब्दों के लिंग की पहचान कैसे करोगे ?

५. प्राणहीन पुँल्लिग शब्दों की पहचान के लिए मुख्य नियम क्या-क्या हैं ? उदाहरण दीजिए।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

६. प्राणहीन स्त्रीलिंग शब्दों की पहचान के लिए मुख्य नियम क्या-क्या हैं ? उदाहरण दीजिए।

७. शब्दों के लिंग-परिवर्तन के लिए मुख्य स्त्री-प्रत्यय कौन-कौन से हैं ?

८. निम्नलिखित शब्दों का लिंग-परिवर्तन कीजिए—

पहाड़, नद, नाला, कौवा, बन्दर, खाट, बगीचा, नाना, दर्जी, विद्वान्, नर्तक, गायक, कवि, ग्वाला, स्वामी, क्षत्रिय, सिंह, बिलाव, ठठेरा, मुगल, कोयल, उल्लू, सम्राट्, नेता, विद्वान, विधुर, युवक, वरा।

९. निम्नलिखित शब्दों का लिंग बताइए—

खटास, कड़वाहट, वैसाख, फाल्गुन, कोमलता, थकावट, सफेदी, चिकनाहट, रावी, अंग्रेज़ी, साँवरिया, आहट, लाली, हरापन।

१०. दस ऐसे शब्द लिखिए जो नित्य एक लिंग हैं अर्थात् जिनका लिंग-परिवर्तन हो ही नहीं सकता।

(जैसे—कुर्सी, किताब, दरवाज़ा, पेड़ आदि)

११. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) पर्वतों के नाम प्राय:.................होते हैं।

(ख) नदियों के नाम प्राय:.................होते हैं।

(ग) महीनों के नाम प्राय:.................होते हैं।

(घ) भाषाओं के नाम प्राय:.................होते हैं।

१२. स्त्रीलिंग के दो रूप दिए गए हैं। अशुद्ध रूप को काट दीजिए—

जुलाहा	=	जुलाही, जुलाहिन
नौकर	=	नौकरी, नौकरानी
मोर	=	मोरनी, मोरी
मन्त्री	=	मन्त्राणी, मन्त्रिणी
नर्तक	=	नर्तकी, नर्तिका
गायक	=	गायकी, गायिका
युवक	=	युवका, युवती
चीता	=	चीता, मादा चीता

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: ६ :

वचन
(NUMBER)

घोड़ा दौड़ रहा है ।

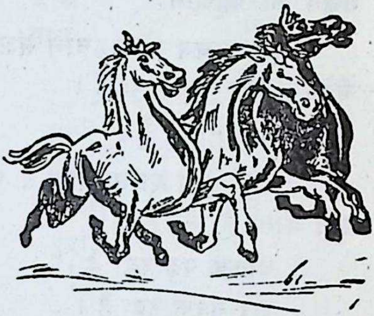

घोड़े दौड़ रहे हैं ।

बालक गेंद खेल रहा है ।

बालक गेंद खेल रहे हैं ।

उपर्युक्त चित्रों में—

बाईं ओर के चित्रों से ज्ञात होता है कि **घोड़ा** एक है और **बालक** भी एक है ।

दाईं ओर के चित्रों से ज्ञात होता है कि **घोड़े** एक से अधिक हैं और **बालक** भी एक से अधिक हैं ।

वचन की परिभाषा—शब्द के जिस रूप से ज्ञात हो कि वह एक के लिए है या एक से अधिक के लिए, उसे वचन कहते हैं ।

हिन्दी में वचन दो हैं—

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

एकवचन—शब्द के जिस रूप से एक संख्या का बोध हो, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे—किताब, शेर, दरवाज़ा।

बहुवचन—शब्द के जिस रूप से एक से अधिक संख्या का बोध हो, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे—किताबें, नारियाँ, दरवाज़े, पंखे, आदि।

वचन की पहचान

(i) वचन की पहचान संज्ञा या सर्वनाम शब्द से ही हो जाती है, जैसे—घोड़ा दौड़ रहा है। घोड़े दौड़ रहे हैं।

मैं जा रहा हूँ। हम जा रहे हैं।

(ii) संज्ञा या सर्वनाम से पता न लगे तो क्रिया से वचन का पता लग जाता है; जैसे—

बालक पढ़ रहा है। बालक पढ़ रहे हैं।

शेर गरज रहा है। शेर गरज रहे हैं।

एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग

(i) आदर प्रकट करने के लिए एकवचन के स्थान पर बहुवचन का प्रयोग होता है; जैसे—कृष्ण महान् थे।

(ii) लोग, दर्शन, प्राण, आँसू, बाल, रोम आदि कुछ ऐसे शब्द हैं जिनका प्रयोग प्रायः बहुवचन में होता है।

(iii) अपना बड़प्पन दिखाने के लिए कुछ लोग 'मैं' के स्थान पर 'हम' का प्रयोग करते हैं; जैसे—पिता अपने पुत्र से कहता है, "देखो! हम जा रहे हैं, काम ठीक करना!"

बहुवचन के स्थान पर एकवचन का प्रयोग

(i) जातिवाचक शब्दों का प्रयोग एकवचन में भी हो सकता है; जैसे—कुल्लू का सेब मीठा होता है। नागपुर का सन्तरा मीठा होता है।

(ii) वर्ग, वृन्द, जाति, दल, गण—ये शब्द अनेक को प्रकट करने वाले हैं, परन्तु इनका व्यवहार एकवचन के समान होगा; जैसे—

मेरा मित्र-वर्ग मुझे अच्छी प्रकार जानता है।

अध्यापकवृन्द छात्रों के लिए पूज्य होता है।

हिन्दू-जाति पुनर्जन्म में विश्वास करती है।

सैनिकदल शत्रु की ओर बढ़ रहा है।

आज का छात्रगण देश का भविष्य है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बहुवचन बनाने के नियम

(i) अ को एँ—

फौज	फौजें	बहिन	बहिनें
किताब	किताबें	पुस्तक	पुस्तकें
रात	रातें	आँख	आँखें
भैंस	भैंसें	गाय	गायें

(ii) आ (पुँल्लिग) को ए—

कपड़ा	कपड़े	मुर्गा	मुर्गे
घोड़ा	घोड़े	बेटा	बेटे
चीता	चीते	काला	काले
कौआ	कौए	हरा	हरे

(iii) आ (स्त्रीलिंग) को एँ—

शाला	शालाएँ	कथा	कथाए
वार्ता	वार्ताएँ	अध्यापिका	अध्यापिकाएँ
लता	लताएँ	कन्या	कन्याएँ
कला	कलाएँ	महिला	महिलाएँ

(iv) इ या ई (स्त्रीलिंग) को इयाँ—

नीति	नीतियाँ	रोटी	रोटियाँ
विधि	विधियाँ	नदी	नदियाँ
मक्खी	मक्खियाँ	नारी	नारियाँ
सखी	सखियाँ	थाली	थालियाँ

(v) या (स्त्रीलिंग) को याँ—

चिड़िया	चिड़ियाँ	कुतिया	कुतियाँ
चुहिया	चुहियाँ	डिबिया	डिबियाँ
लठिया	लठियाँ	गुड़िया	गुड़ियाँ
खटिया	खटियाँ	लुटिया	लुटियाँ

(vi) उ, ऊ, औ में एँ जोड़ देते हैं और दीर्घ ऊ के स्थान पर ह्रस्व उ हो जाता है—

वस्तु	वस्तुएँ	धेनु	धेनुएँ
वधु	वधुएँ	बहू	बहुएँ

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(vii) गण, वृन्द, जन, वर्ग, दल, लोग आदि शब्द लगाकर बहुवचन बनाए जाते हैं—

विद्यार्थी	विद्यार्थीगण	दुश्मन	दुश्मन लोग
सेना	सेनादल	आप	आप लोग
हम	हम लोग	गुरु	गुरुजन
धनी	धनी लोग	मित्र	मित्र वर्ग

अभ्यास

१. उदाहरण देकर वचन की परिभाषा लिखिए।

२. आप एकवचन से क्या समझते हैं ? पाँच उदाहरण दीजिए।

३. आप बहुवचन से क्या समझते हैं ? पाँच उदाहरण दीजिए।

४. निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन बनाइए—
भेड़िया, चन्द्रमा, सन्तरा, सेब, कापी, पाठशाला, आचार्य, बछड़ा, रानी, कली, तोता, बालिका, लड़की, हाथी, तू, वह, मैं, भारतीय।

५. निम्नलिखित वाक्यों को बहुवचन में बदलिए—
(क) जादूगर काला वस्त्र पहनता है।
(ख) महात्मा लोगों को उपदेश देता है।
(ग) मैं तेरे साथ चलता हूँ।
(घ) बच्चा रंग-बिरंगे वस्त्र पहनता है।
(ङ) मज़दूर कारखाने में काम कर रहा था।
(च) हाथी चिंघाड़ रहा है।
(छ) कोयल वसन्त आने पर गाती है।
(ज) मेरा-तेरा क्या सम्बन्ध है ?
(झ) बालक कक्षा में पढ़ रहा है।
(ञ) गर्मी का दिन बड़ा और रात छोटी होती है।

६. जिन शब्दों के रूप बहुवचन में नहीं बदलते, उनके सामने ✓ का निशान लगाइए—

आदमी	…………	किताब	…………
लड़का	…………	जूता	…………
फल	…………	मामा	…………
हाथी	…………	भाई	…………
नदी	…………	देश	…………

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: ७ :

कारक
(CASE)

१. **राम** ने युद्ध किया। २. उसने **रावण को** मार डाला।

३. राम ने रावण को **बाण से** मारा।

४. उसने सज्जनों तथा धर्मात्माओं की **रक्षा के** लिए दुष्ट **रावण** को मारा।

५. **धनुष से** बाण छूटा और **रावण के** हृदय में जा लगा।

६. **राम का** बाण अवश्य ही लक्ष्य-भेद करता था।

७. हे **राम** ! तुम्हारा स्मरण करके हम में वीरता का संचार होता है।

ऊपर लिखे वाक्यों में जो काले शब्द हैं, उनमें ने, को, से आदि कुछ विशेष चिह्न लगे हैं, जिनसे उनका स्वरूप भिन्न-भिन्न है।

कारक की परिभाषा—संज्ञा या सर्वनाम का वह रूप जिससे वाक्य के अन्य शब्दों से उसका सम्बन्ध जाना जाता है, **कारक** कहलाता है।

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विभक्ति—किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेष रूप रचना के लिए उनके आगे जो 'ने', 'को', 'से' आदि चिह्न लगाए जाते हैं उन्हें विभक्ति या परसर्ग (Post Position) कहते हैं; जैसे —अशोक कक्षा में प्रथम आता है—इस वाक्य में कक्षा शब्द है, 'कक्षा में' कारक है, और 'में' कारक का चिह्न अर्थात् विभक्ति है।

हिन्दी में आठ कारक होते हैं; परन्तु सम्बोधन में वही रूप होता है जो कर्त्ता में; अतः इन सात कारकों को समझ लीजिए—

कर्त्ता कारक (Nominative Case)—क्रिया के कर्त्ता (करनेवाले) को प्रकट करनेवाला शब्द कर्त्ता कारक कहलाता है; जैसे—**कृष्ण** ने गाया। **सोहन** जाता है। इन उदाहरणों में गाने वाला कृष्ण और जाने वाला है सोहन। हिन्दी में कर्त्ता कारक का प्रयोग 'ने' विभक्ति के सहित और 'ने' विभक्ति के बिना भी होता है; जैसे—कृष्ण ने (विभक्ति सहित) और सोहन (विभक्ति-रहित)।

अंग्रेज़ी में जिसे Subject कहते हैं, उसे ही हिन्दी में कर्त्ता कारक द्वारा व्यक्त किया जाता है।

कर्म कारक (Accusative Case)—क्रिया के कर्म को प्रकट करनेवाला शब्द कर्म कारक कहलाता है; जैसे—मैंने फल खाया। मोहन पुस्तक पढ़ता है। यहाँ खाया जा रहा है 'फल' और पढ़ी जा रही है 'पुस्तक'। ये दोनों कर्म हैं, इसलिए कर्म कारक हैं।

अंग्रेज़ी में जिसे Object कहते हैं, उसे ही हिन्दी में कर्म कारक द्वारा व्यक्त किया जाता है।

करण कारक (Instrumental Case)—कर्त्ता जिस साधन, उपाय, औज़ार या हथियार से क्रिया करता है, उसे 'करण कारक' कहते हैं। करण कारक की विभक्ति 'से' या 'द्वारा' होती है; जैसे—रमेश कलम से लिखता है। उमेश मोटर द्वारा वहाँ पहुँचा। यहाँ 'कलम से' और 'मोटर द्वारा' क्रिया के साधन हैं।

अंग्रेज़ी में जिन शब्दों को हम प्रायः with या by के साथ लिखते हैं, उन्हें हिन्दी में करण कारक में व्यक्त किया जाता है।

सम्प्रदान कारक (Dative Case)—जिस के लिए क्रिया की जाए,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उसको व्यक्त करनेवाला शब्द सम्प्रदाय कारक है; जैसे—दीपक **गरीब को** वस्त्र देता है। रूपेन्द्र **रोगी के लिए** दवाई लाता है। यहाँ दोनों क्रियाएँ 'गरीब' और 'रोगी' के लिए हैं। इसलिए इन वाक्यों में **गरीब को और रोगी के लिए** सम्प्रदान कारक हैं।

अंग्रेज़ी में जिन शब्दों को हम प्राय: For के साथ लिखते हैं, उनके लिए हिन्दी में सम्प्रदान कारक आता है।

अपादान कारक (Ablative Case)—संज्ञा या सर्वनाम का वह शब्द जिससे अलग होने का बोध हो, अपादान कारक कहलाता है; जैसे—**पेड़ से** फल गिरते हैं। छात्र **घर से** विद्यालय जाता है। इन उदाहरणों में 'पेड़ से' और 'घर से' अलग होने का अर्थ स्पष्ट है। अपादान का प्रयोग किसी से डरने, लजाने, तुलना करने, गिरने, उठने, उतरने, चढ़ने आदि में भी होता है, जैसे—वृक्ष से पत्ते गिरते हैं, लड़की शेर से डरती है, कमला पति से लजाती है, विमला शीला से बुद्धू है, पहाड़ से झरना उतरता है, अंकुर भूमि से बाहर आता है, वायुयान हवाई अड्डे से आकाश में उड़ता है, आदि।

अंग्रेज़ी में जिन शब्दों के साथ प्राय: from और than आता है, वहाँ हिन्दी में अपादान कारक का प्रयोग होता है।

सम्बन्ध कारक (Genetive Case)—संज्ञा या सर्वनाम का वह शब्द जिससे दूसरे के साथ सम्बन्ध ज्ञात हो, सम्बन्ध कारक कहलाता है; जैसे—**मोहन की** दुकान इधर है। **मेरा** चित्र देखिए। इन उदाहरणों में 'मोहन की' और 'मेरा' शब्दों का सम्बन्ध क्रमश: दुकान तथा चित्र के साथ है।

अंग्रेज़ी में जिन शब्दों के साथ of या apstrophe's आता है, वहाँ हिन्दी में सम्बन्ध कारक का प्रयोग होता है।

अधिकरण कारक (Locative Case)—जिस स्थान पर क्रिया हो, उसके सूचक शब्द को अधिकरण कारक कहते हैं; जैसे—लोग **उत्सव में** इकट्ठे होते हैं। राकेश **नदी में** तैरता है। इन उदाहरणों में 'उत्सव में' और 'नदी में' अधिकरण कारक हैं।

अंग्रेज़ी में जिन शब्दों के साथ in, on, into, at आता है वहाँ हिन्दी में अधिकरण का प्रयोग होता है।

सम्बोधन (Vocative)—संज्ञा या सर्वनाम का वह शब्द जिससे किसी को पुकारा जाए उसे सम्बोधन कहते हैं; जैसे—**हे प्रदीप** ! यह काम मत करो। **अरे विद्यार्थियो** ! दिल लगा कर पढ़ो।

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विभक्ति—

संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के बाद ने, को, से, के लिए आदि जो चिह्न लगते हैं, उन चिह्नों को कारक-विभक्ति कहते हैं।

विभक्तियों की पहचान

इन विभक्तियों से हम यह जान सकते हैं कि संज्ञा-सर्वनाम शब्द कर्त्ता कारक में हैं या कर्म कारक में या किसी और कारक में। ये विभक्तियाँ इस प्रकार हैं—

कारक	विभक्ति-चिह्न
कर्त्ता	×, ने
कर्म	×, को
करण	से, के द्वारा
सम्प्रदान	को, के लिए
अपादान	से (from)
सम्बन्ध	का, के, की
अधिकरण	में, पर
सम्बोधन	हे, अरे आदि

इन चिह्नों को किसी ने इस प्रकार कविता में बाँध दिया है। इससे विद्यार्थियों को याद करने में सुगमता हो जाएगी।

कर्त्ता ने, को कर्म है, से को करण बखान,
सम्प्रदान को, के लिए, अपादान से जान,
का, के, की सम्बन्ध हैं, में, पै, पर अधिकरण,
हे, ओ, अरे सम्बोधन, आठों कारक वरण।

कारकों के विशेष प्रयोग

१. कर्त्ता कारक के अर्थ में 'को' चिह्न का प्रयोग अनेक स्थानों पर होता है; जैसे—आप को चाहिए, बालक को जाना है।

देवदत्त को सुबह उठने की आदत है। लोगों को मालूम है। मुझ को पसन्द है, इत्यादि।

२. कर्म कारक में 'कहना' अर्थ में 'से' चिह्न का प्रयोग होता है; जैसे—पिता पुत्र से कहता है।

३. अधिकरण कारक में समय-सूचक शब्दों के साथ 'को' आता है; जैसे—वह रात को वहाँ आया था।

४. तुलना के लिए अपादान कारक का विभक्ति 'से' का प्रयोग होता है; जैसे—अर्जुन युधिष्ठिर से छोटे थे।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

संज्ञा-शब्दों के सब विभक्तियों में रूप

बालक (अकारान्त पुँल्लिग शब्द)

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	बालक, बालक ने	बालक, बालकों ने
कर्म	बालक को	बालकों को
करण	बालक से, के द्वारा	बालकों से, के द्वारा
सम्प्रदान	बालक को, के लिए	बालकों को, के लिए
अपादान	बालक से	बालकों से
सम्बन्ध	बालक का, के, की	बालकों का, के, की
अधिकरण	बालक में, पर	बालकों में, पर
सम्बोधन	हे बालक !	हे बालको !

घोड़ा (अकारान्त पुँल्लिग शब्द)

कर्ता	घोड़ा, घोड़े ने	घोड़े, घोड़ों ने
कर्म	घोड़े को	घोड़ों को
करण	घोड़े से, के द्वारा	घोड़ों से, के द्वारा
सम्प्रदान	घोड़े को, के लिए	घोड़ों को, के लिए
अपादान	घोड़े से	घोड़ों से
सम्बन्ध	घोड़े का, के, की	घोड़ों का, के, की
अधिकरण	घोड़े में, पर	घोड़ों में, पर
सम्बोधन	हे घोड़े !	हे घोड़ो !

मुनि (इकारान्त पुँल्लिग शब्द)

कर्ता	मुनि, मुनि ने	मुनि, मुनियों ने
कर्म	मुनि को	मुनियों को
करण	मुनि से, के द्वारा	मुनियों से, के द्वारा
सम्प्रदान	मुनि को, के लिए	मुनियों को, के लिए
अपादान	मुनि से	मुनियों से
सम्बन्ध	मुनि का, के, की	मुनियों का, के, की
अधिकरण	मुनि में, पर	मुनियों में, पर
सम्बोधन	हे मुनि !	हे मुनियो !

धोबी (ईकारान्त पुँल्लिग शब्द)

कर्ता	धोबी, धोबी ने	धोबी, धोबियों ने
कर्म	धोबी को	धोबियों को
करण	धोबी से, के द्वारा	धोबियों से, के द्वारा
सम्प्रदान	धोबी को, के लिए	धोबियों को, के लिए

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अपादान	धोबी से	धोबियों से
सम्बन्ध	धोबी का, के, की	धोबियों का, के, की
अधिकरण	धोबी में, पर	धोबियों में, पर
सम्बोधन	हे धोबी !	हे धोबियो !

गुरु (उकारान्त पुँल्लिग शब्द)

कर्ता	गुरु, गुरु ने	गुरु, गुरुओं ने
कर्म	गुरु को	गुरुओं को
करण	गुरु से, के द्वारा	गुरुओं से, के द्वारा
सम्प्रदान	गुरु को, के लिए	गुरुओं को, के लिए
अपादान	गुरु से	गुरुओं से
सम्बन्ध	गुरु का, के, की	गुरुओं का, के, की
अधिकरण	गुरु में, पर	गुरुओं में, पर
सम्बोधन	हे गुरु !	हे गुरुओ !

डाकू (ऊकारान्त पुँल्लिग शब्द)

कर्ता	डाकू, डाकू ने	डाकू, डाकुओं ने
कर्म	डाकू को	डाकुओं को
करण	डाकू से, के द्वारा	डाकुओं से, के द्वारा
सम्प्रदान	डाकू को, के लिए	डाकुओं को, के लिए
अपादान	डाकू से	डाकुओं से
सम्बन्ध	डाकू का, के, की	डाकुओं का, के, की
अधिकरण	डाकू में, पर	डाकुओं में, पर
सम्बोधन	हे डाकू !	हे डाकुओ !

बालिका (अकारान्त स्त्रीलिंग शब्द)

कर्ता	बालिका, बालिका ने	बालिकाएँ, बालिकाओं ने
कर्म	बालिका को	बालिकाओं को
करण	बालिका से, के द्वारा	बालिकाओं से, के द्वारा
सम्प्रदान	बालिका का, के लिए	बालिकाओं को, के लिए
अपादान	बालिका से	बालिकाओं से
सम्बन्ध	बालिका का, के, की	बालिकाओं का, के, की
अधिकरण	बालिका में, पर	बालिकाओं में, पर
सम्बोधन	हे बालिका !	हे बालिकाओ !

(**अपवाद**—जिन स्त्रीलिंग शब्दों का 'या' में अन्त होता है, उनका कर्ता कारक बहुवचन में एँ के साथ रूप नहीं बनेगा, केवल अनुनासिक हो जाएगा, जैसे—बुढ़िया, कुटिया, खटिया, लुटिया। इनके बहुवचन में रूप बनेंगे—बुढ़ियाँ, कुटियाँ, खटियाँ, लुटियाँ)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सखी (ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्द)

कर्ता	सखी, सखी ने	सखियाँ, सखियों ने
कर्म	सखी को	सखियों को
करण	सखी से, के द्वारा	सखियों से, के द्वारा
सम्प्रदान	सखी को, के लिए	सखियों को, के लिए
अपादान	सखी से	सखियों से,
सम्बन्ध	सखी का, के, की	सखियों का, के, की
अधिकरण	सखी में, पर	सखियों में, पर
सम्बोधन	हे सखी !	हे सखियो !

इसी प्रकार देवी आदि (ईकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों) के रूप बनेंगे।

वस्तु (उकारान्त स्त्रीलिंग शब्द)

कर्ता	वस्तु, वस्तु ने	वस्तुएँ, वस्तुओं ने
कर्म	वस्तु को	वस्तुओं को
करण	वस्तु से	वस्तुओं से
सम्प्रदान	वस्तु को, के लिए	वस्तुओं को, के लिए
अपादान	वस्तु से	वस्तुओं से
सम्बन्ध	वस्तु का, के, की	वस्तुओं का, के, की
अधिकरण	वस्तु में, पर	वस्तुओं में, पर
सम्बोधन	हे वस्तु !	हे वस्तुओ !

बहू (ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द)

कर्ता	बहू, बहू ने	बहुएँ, बहुओं ने
कर्म	बहू को	बहुओं को
करण	बहू से, के द्वारा	बहुओं से, के द्वारा
सम्प्रदान	बहू को, के लिए	बहुओं को, के लिए
अपादान	बहू से	बहुओं से
सम्बन्ध	बहू का, के, की	बहुओं का, के, की
अधिकरण	बहू में, पर	बहुओं में, पर
सम्बोधन	हे बहू !	हे बहुओ !

गौ (औकारान्त स्त्रीलिंग शब्द)

कर्ता	गौ, गौ ने	गौएँ, गौओं ने
कर्म	गौ को	गौओं को
करण	गौ से, के द्वारा	गौओं से, के द्वारा
सम्प्रदान	गौ को, के लिए	गौओं को, के लिए

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अपादान	गौ से	गौओं से
सम्बन्ध	गौ का, के, की	गौओं का, के, की
अधिकरण	गौ में, पर	गौओं में, पर
सम्बोधन	हे गौ !	हे गौओ !

अभ्यास

१. कारक की परिभाषा उदाहरण देकर लिखिए।

२. कारक कितने हैं ? उनके नाम बताइए। क्या सम्बन्ध और सम्बोधन भी कारक के भेद हैं ? स्पष्ट कीजिए।

३. मोटे छपे शब्दों का कारक का भेद बताइए—

व्याकरण पढ़ो। **पुस्तक** देख कर बोलो। **तुम्हारा घर** कहाँ है ? **देश** को हमारा **रक्त** चाहिए। **माता-पिता** तथा **गुरुओं का सम्मान** सभी को करना चाहिए। इस **कारक के पाठ में** तुमने क्या याद नहीं किया ? देखो ! वह अपने छोटे **भाई के साथ** जा रहा है। हे **वीरो**! **शत्रु पर** हमला करो ? **अरे पागल** ! तू कहाँ से आ गया ? **कपड़े** अलमारी में पड़े हैं।

४. विभक्ति किसे कहते हैं ? सब कारकों की विभक्ति लिखिए।

५. निम्नलिखित शब्दों के सब विभक्तियों के रूप लिखिए—

कवि, टापू, गाड़ी, झाड़ी, बिटिया, तोता, मैना।

६. निम्नलिखित वाक्यों में कारक-निर्देश कीजिए—

कुरुक्षेत्र की रणभूमि में दोनों ओर सेनाएँ खड़ी थीं। अपने गुरुजनों को देखकर अर्जुन मोह में पड़ गया। यह देख कृष्ण बोले, हे अर्जुन ! हे कुन्ती पुत्र ! धर्म की स्थापना के लिए धनुष उठाओ और अपने धनुष से बाणों की वर्षा कर इन अधर्मियों को नष्ट कर दो। वीरता से ही धर्म की रक्षा सम्भव है।

७. (क) बताइए ये वाक्य कर्म-कारक हैं या अपादान-कारक—

(i) कलम से लिख कर देखो। ....

(ii) व्यायाम से शरीर स्वस्थ रहता है। ....

(iii) बाज़ार से कुछ फल ले आओ। ....

(iv) खिड़की से बाहर का दृश्य देखो। ....

(v) वीरता दिखाने से यश मिलता है। ....

(ख) बताइए इन वाक्यों में कर्म कारक है या सम्प्रदान कारक—

(i) राम को तो देखो ! कितना सुन्दर है ? ....

(ii) यह पुस्तक कृष्ण को दे दो। ....

(iii) बालक को समझाओ। ....

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(iv) पुष्पों को ज़रा सूँघिए। ....

(v) पेंसिल बना दीजिए, कृपा होगी। ....

८. सही कथनों के सामने ✓ का निशान तथा ग़लत कथनों के सामने × का निशान लगाइए—

(क) कारक आठ हैं। (.....)

(ख) सम्प्रदान कारक के चिह्न का, के, की हैं। (.....)

(ग) समयसूचक शब्दों के साथ को आता है। (.....)

(घ) 'गुरु' शब्द उकारान्त पुँल्लिग है। (.....)

(ङ) 'धोबी' शब्द इकारान्त पुँल्लिग है। (.....)

९. '**दशरथ** के पुत्र **राम** ने अपनी भार्या **सीता** के लिए लंकेश **रावण** को लंका की **युद्ध-भूमि** में तीक्ष्ण **वाणों** से मार डाला।'

उपर्युक्त वाक्य को पढ़िए और अधिक काले शब्दों के कारक बताइए।

१०. **राम** ने **रावण** को मार डाला।

इस वाक्य में राम तथा रावण का पद-परिचय इस प्रकार होगा.

राम : व्यक्तिवाचक संज्ञा, एक वचन, पुँल्लिग, कर्ता कारक, 'मार डाला' क्रिया का कर्ता।

रावण : व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुँल्लिग, कर्म कारक, 'मार डाला' क्रिया का कर्म।

नीचे लिखे वाक्यों में अधिक काले शब्दों का पद-परिचय कीजिए :

(क) **छत** पर **बन्दर** बैठे हैं।

(ख) **सीता** कल अपनी **ससुराल** जाएगी।

(ग) **अरे भाई** ! **मैं** तो आप लोगों का सेवक हूँ।

□□

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: ८ :

सर्वनाम
(PRONOUN)

इन वाक्यों को पढ़िए—

विक्रम एक अच्छा बालक है। विक्रम प्रतिदिन स्कूल जाता है।
विक्रम गुरुओं का सम्मान करता है।
विक्रम पढ़ाई में बहुत होशियार है।
गुरुजन विक्रम को शाबाशी देते हैं।

इन वाक्यों में **'विक्रम'** शब्द के बार-बार आने से वाक्य बड़े अटपटे लगते हैं। यदि हम इन वाक्यों को निम्नलिखित प्रकार से कहें, तो अधिक स्वाभाविक और प्रभावशाली लगते हैं।

विक्रम एक अच्छा लड़का है। वह प्रतिदिन स्कूल जाता है।
वह गुरुओं का सम्मान करता है।
वह पढ़ाई में बहुत होशियार है।
गुरुजन उसे शाबाशी देते हैं।

'विक्रम' एक संज्ञा-शब्द है। उसे बार-बार कहने की बजाय जिस शब्द का प्रयोग उसके स्थान पर होगा, उसे सर्वनाम कहेंगे।

परिभाषा—संज्ञा के स्थान पर आने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं; जैसे—

मीरा नाच रही है, **उसे** देखो। बालकों से कहो कि **वे** यहाँ आ जाएँ। भारत हमारा देश है, **इसकी** रक्षा करना **हमारा** कर्त्तव्य है। तिलक महान् थे, हम **उनके** अनुयायी हैं।

इन उदाहरणों में—

मीरा को	के स्थान पर	उसे
बालक	के स्थान पर	वे
भारतीयों का	के स्थान पर	हमारा
भारत की	के स्थान पर	इसकी
भारतीयों का	के स्थान पर	हमारा
तिलक के	के स्थान पर	उनके

का प्रयोग हुआ है। इसलिए 'उसे, वे' आदि शब्द सर्वनाम हैं।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सर्वनाम के पाँच भेद हैं—

१. पुरुषवाचक सर्वनाम
(Personal Pronoun)

२. निश्चयवाचक सर्वनाम
(Demonstrative Pronoun)

३. अनिश्चयवाचक सर्वनाम
(Indefinite Pronoun)

४. सम्बन्धवाचक सर्वनाम
(Relative Pronoun)

५. प्रश्नवाचक सर्वनाम
(Interrogative Pronoun)

१. **पुरुषवाचक सर्वनाम**—जो सर्वनाम, बोलनेवाले, सुननेवाले या जिसके बारे में कुछ कहा जाए, उसके लिए आएँ, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। इसके तीन भेद हैं—

(क) **अन्यपुरुषवाचक** (Third Person)—अन्य-पुरुषवाचक वे सर्वनाम हैं जो उस व्यक्ति के लिए आते हैं जिसके बारे में कुछ कहा जा रहा हो; जैसे—वह, यह, उसका, कोई आदि।

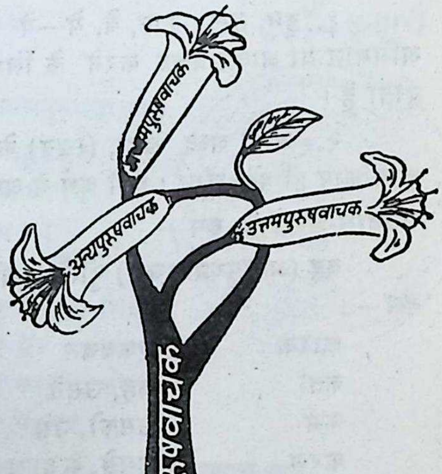

(ख) **मध्यमपुरुषवाचक** (Second Person)—सुननेवाले के लिए जिस सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है, उसे मध्यम-पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—तू, तुम, आप, तुम्हें, आपको आदि।

(ग) **उत्तमपुरुषवाचक** (First Person)—बोलनेवाला अपने लिए जिन सर्वनामों का प्रयोग करता है, उन्हें उत्तमपुरुषवाचक कहते हैं; जैसे—मैं, हम, हमने, हमारा, अपना, अपने-आप आदि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

नोट—कुछ लेखक अपने-आप, खुद, स्वयं आदि, शब्दों को निज-वाचक सर्वनाम कहते हैं। परन्तु वास्तव में ये शब्द उत्तमपुरुषवाचक सर्वनाम ही हैं।

२. **निश्चयवाचक सर्वनाम**—जिन सर्वनामों से निश्चित वस्तु का बोध हो, उन्हें निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—वह, वे, यह, ये।

३. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम**—जिन सर्वनामों से निश्चित वस्तु का बोध न हो, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—कुछ तुमने कहा, कुछ उसने, बस ऐसे ही बात बढ़ गई। इस डिबिया में कुछ है ज़रूर।

४. **सम्बन्धवाचक सर्वनाम**—वे सर्वनाम जो वाक्य में सदा एक-दूसरे के बाद आते हैं, उन्हें सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—**जो** करेगा **सो** भरेगा। जो वहाँ रहता है, वह मेरा भाई है। **जिसकी** लाठी **उसकी** भैंस। **जैसा** करोगे **वैसा** भरोगे।

५. **प्रश्नवाचक सर्वनाम**—जो सर्वनाम प्रश्न पूछने के लिए आते हैं, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे—मेला देखने **कौन** जाएगा ? आप **क्या** पढ़ रहे हैं ?

सर्वनाम-शब्दों के विशेष प्रयोग—

१. हम, तुम, आप, वे, ये—ये शब्द बहुवचन के रूप हैं। परन्तु अभिमान या आदर प्रकट करने के लिए इनका प्रयोग एकवचन में भी होता है।

२. 'आप' शब्द 'खुद', (स्वयं) के अर्थ में भी आता है; जैसे—मैं यह काम आप ही कर लूंगा। इसी अर्थ में अपने-आप का भी प्रयोग होता है।

सर्वनाम-शब्दों के रूप—

वह (अन्यपुरुषवाचक) पुंल्लिग और स्त्रीलिंग दोनों लिंगों के समान रूप—

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	वह, उसने	वे, उन्होंने
कर्म	उसको, उसे	उनको, उन्हें
करण	उससे, के द्वारा	उनसे, के द्वारा
सम्प्रदान	उसे, उसको, के लिए	उन्हें, उनको, के लिए
अपादान	उससे	उनसे
सम्बन्ध	उसका, के, की	उनका, के, की
अधिकरण	उसमें, पर	उनमें, पर

ज्ञातव्य—सर्वनाम शब्दों का सम्बोधन नहीं होता।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यह (अन्यपुरुषवाचक)

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	यह, इसने	ये, इन्होंने
कर्म	इसको, इसे	इनको, इन्हें
करण	इससे, इसके द्वारा	इनसे, इनके द्वारा
सम्प्रदान	इसे, इसको, इसके लिए	इन्हें, इनको, इनके लिए
अपादान	इससे	इनसे
सम्बन्ध	इसका, के, की	इनका, के, की
अधिकरण	इसमें, पर	इनमें, पर

तू (मध्यमपुरुषवाचक)

कर्ता	तू, तूने	तुम, तुमने
कर्म	तुझे, तुझको	तुम्हें, तुमको
करण	तुझसे, तेरे द्वारा	तुमसे, तुम्हारे द्वारा
सम्प्रदान	तुझे, तुझको, तेरे लिए	तुम्हें, तुमको, तुम्हारे लिए
अपादान	तुझ से	तुम से
सम्बन्ध	तेरा, तेरे, तेरी	तुम्हारा, तुम्हारे, तुम्हारी
अधिकरण	तुझ में, पर	तुम में, पर

आप (मध्यमपुरुषवाचक)

	बहुवचन
कर्ता	आप, आपने
कर्म	आप को
करण	आप से, के द्वारा
सम्प्रदान	आप को, के लिए
अपादान	आप से
सम्बन्ध	आप का, के, की
अधिकरण	आप में, पर

Kathmandu, Nepal

(अपने) आप (स्वयंवाचक) तीनों पुरुष के समान रूप
एकवचन बहुवचन (समानरूप)

कर्ता	(अपने) आप
कर्म	अपने-आप को
करण	अपने-आप से
सम्प्रदान	(अपने) आप को, के लिए, अपने लिए

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अपादान	(अपने) आप से, अपने से
सम्बन्ध	अपना, अपने, अपनी
अधिकरण	अपने-आप में, पर, अपने में, पर

सब (अनिश्चयवाचक)

	बहुवचन
कर्ता	सब, सब ने
कर्म	सब को
करण	सब से, के द्वारा
सम्प्रदान	सब को, के लिए
अपादान	सब से
सम्बन्ध	सब का, के, की
अधिकरण	सब में, पर

कोई (अन्यपुरुषवाचक)

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कोई, किसी ने	कोई, किन्हीं ने
कर्म	किसी को	किन्हीं को
करण	किसी से, के द्वारा	किन्हीं से, के द्वारा
सम्प्रदान	किसी को, के लिये	किन्हीं को, के लिये
अपादान	किसी से	किन्हीं से
सम्बन्ध	किसी का, के, की	किन्हीं का, के, की
अधिकरण	किसी में, पर	किन्हीं में, पर

जो (सम्बन्धवाचक)

कर्ता	जो, जिसने	जो, जिन्होंने
कर्म	जिसे, जिसको	जिन्हें, जिनको
करण	जिससे, के द्वारा	जिनसे, के द्वारा
सम्प्रदान	जिसे, जिनको, के लिए	जिन्हें, जिनको, के लिए
अपादान	जिस से	जिन से
सम्बन्ध	जिसका, के, की	जिनका, के, की
अधिकरण	जिसमें, पर	जिनमें, पर

कौन (प्रश्नवाचक)

कर्ता	कौन, किसने	कौन, किन्होंने
कर्म	किसे, किसको	किन्हें, किनको
करण	किससे, के द्वारा	किनसे, के द्वारा
सम्प्रदान	किसे, किसको, के लिए	किन्हें, किनको, के लिए

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अपादान	किस से	किन से
सम्बन्ध	किस का, के, की	किन का, के, की
अधिकरण	किस में, पर	किन में, पर

अभ्यास

१. सर्वनाम की सोदाहरण परिभाषा दीजिए।

२. संज्ञा और सर्वनाम में क्या भेद है ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

३. सर्वनामों के भेदों की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

४. सर्वनाम का सम्बोधन क्यों नहीं होता ?

५. क्या 'क्या' और 'कुछ' भी सर्वनाम है ? हैं तो क्यों ?

६. निर्दिष्ट विभक्ति में रूप लिखिए—

वह (करण, सम्प्रदान), यह (कर्म, अपादान), तू (सम्बन्ध, अधिकरण), आप (अपादान, सम्बन्ध), सब (कर्ता, कर्म), कौन (करण, अपादान), कोई (कर्म, सम्प्रदान), जो (सम्प्रदान, अपादान)।

७. 'आप' शब्द किन-किन अर्थों में प्रयुक्त हो सकता है ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

८. सर्वनामों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

एक नाव में तीन व्यक्ति बैठे।.......एक बोला, "अरे मल्लाह ! ....वकालत जानता है या नहीं ?" मल्लाह ने उत्तर दिया, 'जनाब ! ....इतने भाग कहाँ,...............तो बड़े आदमी ठहरे। फिर दूसरे ने ....पूछा, "पर..........डाक्टरी तो ज़रूर पढ़ी होगी।" मल्लाह फिर बोला, "..........तो मज़ाक करते हैं। कहाँ डाक्टरी और कहाँ............... लोग।"

९. बताइए निम्न कथन सही हैं या गलत—

(क) सर्वनाम संज्ञा का एक भेद है। (.......)

(ख) पुरुषवाचक सर्वनाम के तीन भेद हैं। (.......)

(ग) 'वह' शब्द अन्य पुरुषवाचक है। (.......)

(घ) 'सब' शब्द निश्चयवाचक सर्वनाम हैं। (.......)

(ङ) 'कौन' शब्द अन्य पुरुषवाचक है। (.......)

१०. इन वाक्यों में काले शब्दों के भेद बताइए—

(क) **आप** यहाँ से क्यों नहीं चले जाते ?

(ख) **हमारा** घर तो बहुत दूर है।

(ग) **जो** करेगा **सो** भरेगा।

(घ) अन्दर **कोई** है।

(ङ) वह इस काम को **अपने-आप** कर लेगा।

□□

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: ६ :

विशेषण

(ADJECTIVE)

अच्छा बालक

गन्दा बालक

लम्बा आदमी

छोटा आदमी

इन उदाहरणों में अच्छा, गन्दा, लम्बा, छोटा शब्द बालक या आदमी की कुछ-न-कुछ विशेषता बता रहे हैं। इन्हीं शब्दों को हम विशेषण कहते हैं।

परिभाषा—संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतानेवाले शब्द विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वीर पुरुष लड़ते हैं। कुछ दूध लाओ। पाण्डव पाँच भाई थे। हमारा देश भारत है।

विशेष्य—जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं; जैसे—अच्छा बालक। यहाँ 'अच्छा' विशेषण है और 'बालक' उसका विशेष्य।

विशेषण विशेष्य से पहले भी आते हैं और उसके बाद भी। पहले जैसे—

ईमानदार लोगों के सहारे ही देश बढ़ता है।

थोड़े-से फल ले आओ।

बाद में जैसे—

वह बुद्धिमान है। सन्तरा मीठा है।

विशेषण के चार भेद

विशेषण के चार भेद हैं—

१. गुणवाचक विशेषण (Qualitative Adjective)
२. परिमाणवाचक विशेषण (Quantitative Adjective)
३. संख्यावाचक विशेषण (Numeral Adjective)
४. सार्वनामिक विशेषण (Demonstrative Adjective)

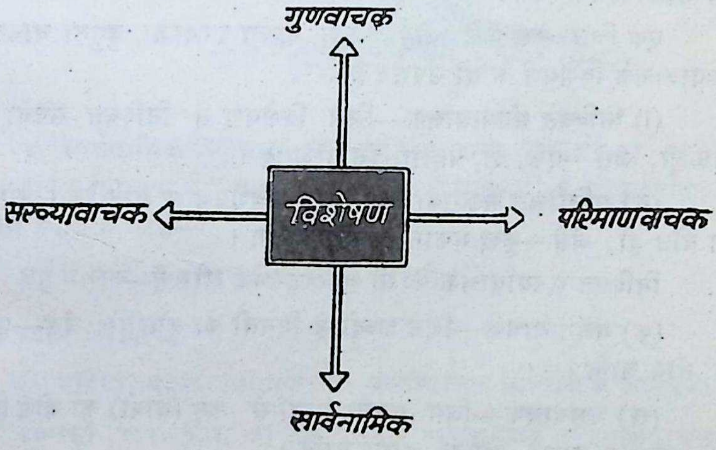

१. गुणवाचक विशेषण—जिस विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम का गुण अथवा दोष प्रकट हो, उसे गुणवाचक कहते हैं; जैसे—

गीदड़ डरपोक होता है। लोग बसन्त पर पीले वस्त्र पहनते हैं।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: ६ :

विशेषण

(ADJECTIVE)

अच्छा बालक

गन्दा बालक

लम्बा आदमी

छोटा आदमी

इन उदाहरणों में अच्छा, गन्दा, लम्बा, छोटा शब्द बालक या आदमी की कुछ-न-कुछ विशेषता बता रहे हैं। इन्हीं शब्दों को हम विशेषण कहते हैं।

परिभाषा—संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बतानेवाले शब्द विशेषण कहलाते हैं; जैसे—

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वीर पुरुष लड़ते हैं। कुछ दूध लाओ। पाण्डव पाँच भाई थे। हमारा देश भारत है।

विशेष्य—जिन शब्दों की विशेषता बताई जाती है, उन्हें विशेष्य कहते हैं; जैसे—अच्छा बालक। यहाँ 'अच्छा' विशेषण है और 'बालक' उसका विशेष्य।

विशेषण विशेष्य से पहले भी आते हैं और उसके बाद भी। पहले जैसे—

ईमानदार लोगों के सहारे ही देश बढ़ता है।

थोड़े-से फल ले आओ।

बाद में जैसे—

वह बुद्धिमान है। सन्तरा मीठा है।

विशेषण के चार भेद

विशेषण के चार भेद हैं—

१. गुणवाचक विशेषण (Qualitative Adjective)
२. परिमाणवाचक विशेषण (Quantitative Adjective)
३. संख्यावाचक विशेषण (Numeral Adjective)
४. सार्वनामिक विशेषण (Demonstrative Adjective)

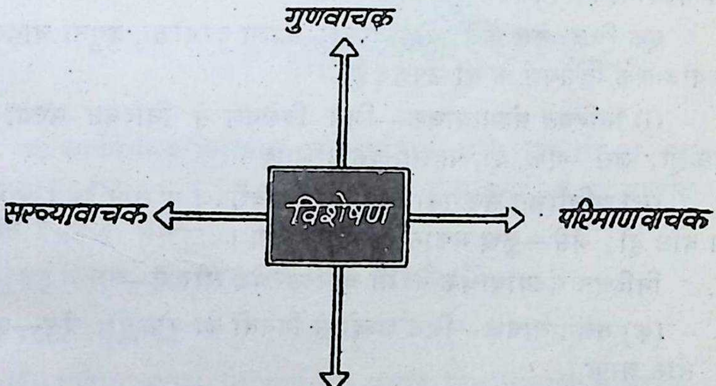

१. गुणवाचक विशेषण—जिस विशेषण से संज्ञा या सर्वनाम का गुण अथवा दोष प्रकट हो, उसे गुणवाचक कहते हैं; जैसे—

गीदड़ डरपोक होता है। लोग बसन्त पर पीले वस्त्र पहनते हैं।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यह टोपी **जापानी** हैं। यह रास्ता एकदम **सीधा** है। 'शक्तिपुत्र', एक **मासिक** पत्रिका है।

२. **परिमाणवाचक विशेषण**—जिस विशेषण से वस्तु की मात्रा पता लगे, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—**मन भर** लकड़ी, **छह मीटर** कपड़ा, **मुट्ठी भर** चावल, **बहुत सारी** मिट्टी।

(परिमाणवाचक विशेषण की पहिचान यह है कि जिन वस्तुओं को तोला जा सके या नापा जा सके)

परिमाणवाचक के दो उपभेद हैं—

(i) **निश्चित परिमाणवाचक**—जिस विशेषण से निश्चित नाप-तोल का ज्ञान हो; जैसे—**एक किलो** चावल, **पाँच** मीटर कपड़ा।

(ii) **अनिश्चित परिमाणवाचक**—जिस विशेषण से अनिश्चित नाप-तोल का ज्ञान हो; जैसे—**कुछ** आटा। **थोड़ी** मिठाई। **कुछ** कपड़ा।

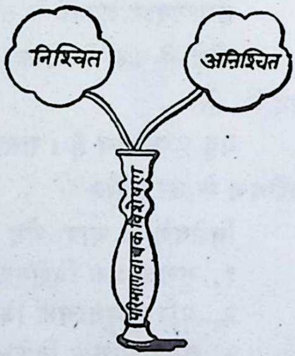

३. **संख्यावाचक विशेषण**—जिस विशेषण से संख्या का बोध हो, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं; जैसे—

एक चित्र, **कुछ** केले, **थोड़े** बालक, **पहला** दरवाज़ा, **दुगुना** चावल।

संख्यावाचक विशेषण के दो उपभेद हैं—

(i) **निश्चित संख्यावाचक**—जिस विशेषण से निश्चित संख्या का बोध हो; जैसे—एक, दो, पहला, दूसरा आदि।

(ii) **अनिश्चित संख्यावाचक**—जिस विशेषण से अनिश्चित संख्या का बोध हो; जैसे—**कुछ** मकान, **थोड़े से** पलंग।

निश्चित संख्यावाचक के भी चार उपभेद और हैं—

(क) **गणनावाचक**—जिन शब्दों से गिनती का बोध हो; जैसे—एक, दो, तीन आदि।

(ख) **क्रमवाचक**—जिन संख्या-शब्दों से क्रम (बारी) का बोध हो; जैसे—पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा आदि।

(ग) **आवृत्तिवाचक**—जिन संख्या-शब्दों से गुणन का बोध हो; जैसे—इकहरा, दोगुना, तिगुना, चौगुना आदि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(घ) **समुदायवाचक**—जिन संख्या-शब्दों से समूह का बोध हो; जैसे—दोनों, तीनों, चारों आदि।

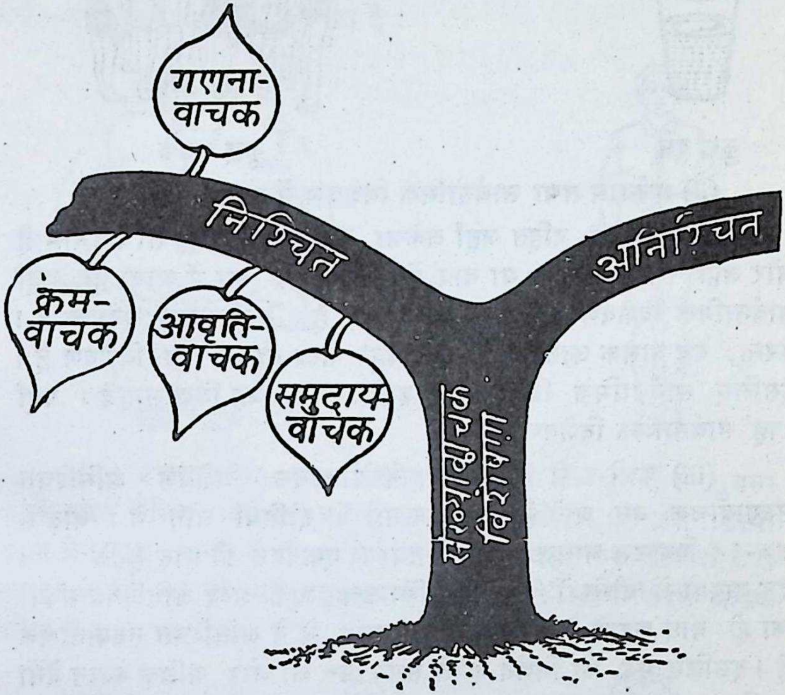

४. **सार्वनामिक विशेषण**—जो सर्वनाम शब्द संज्ञाओं से पहले प्रयुक्त होकर विशेषण का काम करते हैं, उन्हें सार्वनामिक या सांकेतिक विशेषण कहते हैं; जैसे—

यह बालक। वह विद्यालय। उस चोर ने।

विशेष ध्यान देने योग्य

(i) **परिमाणवाचक विशेषण तथा संख्यावाचक विशेषण में अन्तर**—

जिनको नापा-तोला जा सके, उनके वाचक शब्द परिमाणवाचक विशेषण कहलाते हैं और जिनकी गिनती की जा सके, उनके वाचक शब्द संख्यावाचक विशेषण कहलाते हैं; जैसे—कुछ दूध, कुछ लड़के। पहले उदाहरण में 'कुछ' परिमाणवाचक है और दूसरे उदाहरण में संख्यावाचक

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कुछ दूध

कुछ लड़के

(ii) सर्वनाम तथा सार्वनामिक विशेषण में अन्तर—

संज्ञा-शब्द से रहित जहाँ अकेला सर्वनाम हो, वह तो सर्वनाम है और जहाँ संज्ञा से पहले या बाद में विशेषण के रूप में आया हो, वहाँ सार्वनामिक विशेषण है; जैसे—वह जाता है। यहाँ 'वह' सर्वनाम है। परन्तु, वह बालक जाता है। यहाँ 'वह' शब्द बालक का विशेषण है। इसलिए सार्वनामिक विशेषण है। इसी प्रकार, यह विद्यालय है। यहाँ 'यह' सार्वनामिक विशेषण है।

(iii) कभी-कभी निश्चित संख्यावाचक विशेषण अनिश्चित संख्यावाचक बन जाते हैं; जैसे—सभा में **बीसियों** लोग थे। बाढ़ से ५०-६० **क्विण्टल** अनाज नष्ट हो गया। एक दिन की बात है कि.........। इन वाक्यों में 'बीसियों', '५०-६० क्विण्टल', 'एक' शब्द अनिश्चित संख्या का ही बोध कराते हैं। इसलिए इस प्रसंग में वे अनिश्चित संख्यावाचक हैं। इसलिए भेद का निर्णय करते समय अर्थ की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए।

विशेषणों की अवस्थाएँ—

किसी में साधारण विशेषता होती है, किसी में उससे अधिक होती है और किसी में सबसे अधिक। इसी आधार पर विशेषण की तीन अवस्थाएँ हैं।

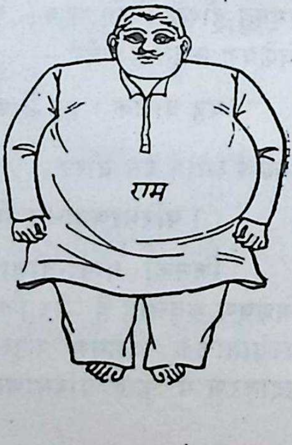

(i) **मूलावस्था**—जिस विशेषण से केवल एक व्यक्ति, वस्तु, आदि की विशेषता बताई जाए उसे विशेषण की मूलावस्था कहते हैं। दूसरे शब्दों में इसका अर्थ यह है कि इसमें किसी की दूसरे से तुलना नहीं की जाती; जैसे—**मीठा** आम। राम **मोटा** है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(ii) **उत्तरावस्था**—जिस विशेषण से एक की दूसरे से अधिकता बताई जाए, उसे विशेषण की उत्तरावस्था कहते हैं। दूसरे शब्दों में इसका अर्थ यह है कि जहाँ दो में तुलना करके एक की अधिकता बताई जाए; जैसे—राम विक्रम से अधिक मोटा है।

(iii) **उत्तमावस्था**—जिस विशेषण से एक की दूसरों से तुलना करके सबसे अधिक विशेषता बताई जाए, उसे विशेषण की उत्तमावस्था कहते हैं। दूसरे शब्दों में इसका अर्थ यह है कि जहाँ एक की अनेक से तुलना करके एक की अधिकता बताई जाए; जैसे—राम सबसे अधिक मोटा है।

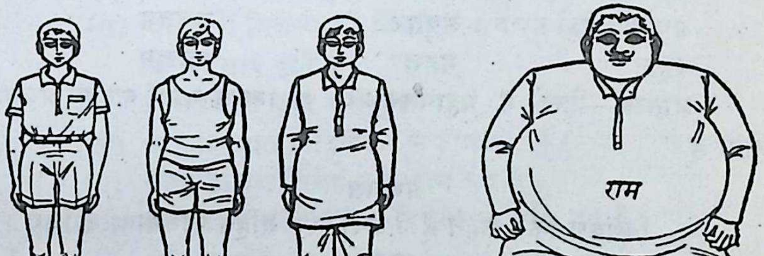

अवस्थाओं के रूप

१. अधिक और सबसे अधिक शब्द लगाकर हम उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था के रूप बना सकते हैं; जैसे—

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
बुद्धिमान	अधिक बुद्धिमान	सबसे अधिक बुद्धिमान
चतुर	अधिक चतुर	सबसे अधिक चतुर

इसी प्रकार अन्य सभी विशेषण शब्दों के रूप बन सकते हैं।

२. तर और तम लगा कर भी हम उत्तरावस्था तथा उत्तमावस्था के रूप बना सकते हैं। ये प्रत्यय केवल तत्सम शब्दों के साथ ही लगते हैं; जैसे—

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
दृढ़	दृढ़तर	दृढ़तम
चतुर	चतुरतर	चतुरतम
उच्च	उच्चतर	उच्चतम
विशाल	विशालतर	विशालतम
न्यून	न्यूनतर	न्यूनतम
अधिक	अधिकतर	अधिकतम
सुन्दर	सुन्दरतर	सुन्दरतम
मधुर	मधुरतर	मधुरतम
कोमल	कोमलतर	कोमलतम
तीव्र	तीव्रतर	तीव्रतम
बलवान्	बलवत्तर	बलवत्तम
लघु	लघुतर	लघुतम
महान्	महत्तर	महत्तम

ज्ञातव्य—हिन्दी में **महानतर** और **महानतम** शब्दों का भी प्रयोग होता है।

अभ्यास

१. विशेषण किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित परिभाषा दीजिए।

२. विशेषण के भेद स्पष्ट कीजिए।

३. परिमाणवाचक विशेषण तथा संख्यावाचक विशेषण में क्या भेद हैं ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

४. अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण तथा अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण में क्या भेद है ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

५. ऐसे दस उदाहरण दीजिए जिनसे प्राय: निश्चित संख्यावाचक

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विशेषण के रूप में प्रयुक्त होनेवाले शब्द अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण का अर्थ प्रकट करें।

६. आप 'विशेष्य' से क्या समझते हैं ? कोई एक उदाहरण दीजिए।

७. विशेषण की अवस्था से आप क्या समझते हैं ? उनके कितने भेद हैं ? भेदों के नाम लिखकर उनकी परिभाषा भी दीजिए।

८. अवस्थाओं के रूप कैसे बनते हैं ? दस उदाहरण भी दीजिए।

९. निम्नलिखित वाक्यों में विशेषण छाँटिए और भेद का नाम भी लिखिए—

(i) इन थोड़े से पैसों से क्या बनेगा ?
(ii) यहाँ से तीसरी कोठी जज साहब की है।
(iii) सभी लोग मिलकर काम करें तो सफलता निश्चित है।
(iv) लाल-पीले फूलों से बाग़ खिल उठा है।
(v) इस बगीचे में घास कम है।
(vi) निखट्टू आदमी किसे अच्छा लगता है ?
(vii) आप लोगों से मेरी प्रार्थना है कि चुप रहिए।
(viii) इन पर्दों के लिए बहुत अधिक कपड़े की आवश्यकता नहीं।

१०. सही कथनों पर ✓ निशान लगाइए—

(i) विशेषता का ही दूसरा नाम विशेषण है। ....
(ii) वाक्य में विशेष्य की विभक्ति व वचन विशेषण के अनुसार होते हैं। ....
(iii) विशेषण के चार भेद हैं। ....
(iv) परिमाणवाचक विशेषण के तीन भेद हैं। ....
(v) संख्यावाचक विशेषण के तीन भेद हैं। ....
(vi) अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण के पाँच भेद हैं। ....
(vii) सर्वनाम तथा सार्वनामिक बिशेषण पर्यायवाची शब्द हैं। ....
(viii) दो की तुलना में उत्तमावस्था का प्रयोग होता है। ....

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क्रिया

(VERB)

किसी भी भाषा में कोई भी वाक्य क्रिया के बिना पूर्ण नहीं होता। हिन्दी में क्रिया वाक्य के अन्त में आती है; जैसे—

हम खाना खाते हैं।

क्रिया की परिभाषा—जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाए उसे क्रिया कहते हैं; जैसे—

राम सीता को देखता है। सीता रोती है।

क्रिया के भेद

कर्म की दृष्टि से क्रिया के दो भेद हैं।

१. सकर्मक क्रिया (Transitive Root)

२. अकर्मक क्रिया (Intransitive Root)

१. सकर्मक क्रिया—जहाँ क्रिया का फल कर्म पर पड़े, उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे, मैं पुस्तक पढ़ता हूँ। यहाँ पढ़ने का फल पुस्तक पर पड़ रहा है। पुस्तक पढ़ी जा रही है।

मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।

२. अकर्मक क्रिया—जहाँ क्रिया का फल कर्ता पर पड़े, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे—वह भागता है। यहाँ भागने का फल कर्ता पर ही पड़ता है।

वह भागता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सकर्मक और अकर्मक क्रिया की पहचान

सकर्मक क्रिया की पहचान यह है कि क्रिया के साथ 'क्या' का प्रश्न कीजिए, जैसे, ऊपर के उदाहरण में प्रश्न होगा—क्या पढ़ता हूँ ? उत्तर है—पुस्तक। इसलिए यहाँ 'पढ़ना' क्रिया सकर्मक क्रिया हुई। जहाँ 'क्या' द्वारा प्रश्न करने की आवश्यकता ही प्रतीत न हो वहाँ क्रिया अकर्मक होती है, जैसे, ऊपर के उदाहरण में प्रश्न करें—'वह क्या भागता है ?' तो यह प्रश्न ही ठीक नहीं होगा।

सकर्मक और अकर्मक क्रिया की दूसरी ठीक पहचान यह है कि जिस क्रिया के साथ कर्म हो या आ सकता हो, वह क्रिया सकर्मक होगी; जैसे—वह पुस्तक लिखता है। यहाँ कर्म स्पष्ट ही है। परन्तु वह लिखता है। यहाँ कर्म नहीं है परन्तु आ सकता है; जैसे—वह पुस्तक लिखता है या कहानी लिखता है या कुछ और लिखता है। इसलिए यह क्रिया सकर्मक हुई। परन्तु, वह उठता है। यहाँ हमारे चाहने पर भी कर्म नहीं आ सकता। हम अधिक-से-अधिक यह कह सकते हैं कि वह अब उठता है, वह वहाँ से उठता है, वह सुबह उठता है, आदि। पर इनमें कर्म कोई नहीं है इसलिए यह क्रिया अकर्मक हुई।

नीचे लिखे अर्थोंवाली क्रियाएँ प्रायः अकर्मक होती हैं—जागना, हँसना, सोना, रोना, जाना, मरना, डरना, चमकना, चलना, बढ़ना, घटना, लजाना, उठना, होना, बैठना, ठहरना, भागना, नष्ट होना, लड़ना, खेलना आदि।

विशेष ध्यान देने योग्य

कभी-कभी अकर्मक क्रिया सकर्मक बन जाती है; जैसे—वह रोता है, वह हँसता है, वह सोता है, ये क्रियाएँ प्रायः अकर्मक हैं। परन्तु कभी-कभी निम्नलिखित प्रयोग भी हिन्दी में किए जाते हैं—

वह अपना रोना रोता है। यह हँसी हँसता है। वह सुख की नींद सोता है।

इन वाक्यों में क्रमशः 'रोना', 'हंसी' और 'नींद' कर्म के आ जाने से वही क्रियाएँ सकर्मक हो गई हैं।

इसलिए अर्थ देखकर ही इस प्रकार की क्रिया के सकर्मक या अकर्मक होने का निर्णय करना चाहिए।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सकर्मक क्रिया के भेद

१. एककर्मक क्रिया—जिस क्रिया का केवल एक कर्म हो, उसे एककर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे—मोहन **पुस्तक** पढ़ता है। इसमें केवल एक कर्म है—पुस्तक।

मोहन पुस्तक पढ़ता है।

२. द्विकर्मक क्रिया—जिस क्रिया के दो कर्म हों, उसे द्विकर्मक क्रिया कहते हैं; जैसे—राजीव **प्रभुदत्त** को **संस्कृत** पढ़ाता है। इसमें प्रभुदत्त और संस्कृत—दो कर्म हैं।

राजीव प्रभुदत्त को संस्कृत पढ़ाता है।

प्रयोग की दृष्टि से क्रिया के पाँच भेद हैं।

१. सामान्य क्रिया—किसी एक क्रिया का प्रयोग हो तो सामान्य क्रिया कहलाती है; जैसे—वह **गया**। उसने **खाया**, इत्यादि।

२. संयुक्त क्रिया—यदि दो या अधिक क्रियाओं का साथ-साथ प्रयोग हो, तो उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं; जैसे—वह **पढ़ चुका**। राम **आ गया** है।

३. नामधातु क्रिया—संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण शब्दों से बने क्रियापद नामधातु क्रिया कहलाते हैं; जैसे—लजाना, अपनाना, झठलाना, शर्माना, आदि शब्द क्रमशः लाज, अपना, झूठ और शर्म से बने हैं।

४. प्रेरणार्थक क्रिया—कर्ता कोई काम करता है और यदि वह काम स्वयं न करके दूसरे को उसके लिए प्रेरित करे, तो वहाँ अकर्मक क्रिया सकर्मक बन जाती है और सकर्मक क्रिया द्विकर्मक बन जाती है। ऐसी क्रियाओं को प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं; जैसे—

अकर्मक से	**सकर्मक**
राम सोता है।	राम बच्चे को सुलाता है।
मोहन हँसता है।	मोहन सबको हँसाता है।
तुम जागते हो।	तुम मुझे जगाते हो।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पहले वाक्यों में आपने देखा है कि **सोना** अकर्मक क्रिया दूसरे से करने पर 'सुलाना' सकर्मक बन गई। इसी प्रकार 'हँसना' से 'हँसाना' और 'जागना' से 'जगाना' सकर्मक बन गई हैं।

सकर्मक से	**द्विकर्मक**
राम पुस्तक पढ़ता है।	राम मनु को पुस्तक पढ़ाता है।
गोपाल खाना खाता है।	गोपाल शचीन्द्र को खाना खिलाता है।
मैं पत्र लिखता हूँ।	मैं आशुलिपिक (स्टैनो) को पत्र लिखाता हूँ।
तुम गीत सुनाते हो।	तुम उन्हें गीत सुनाते हो।

पहले वाक्य में **'पढ़ना'** सकर्मक क्रिया **'पढ़ाना'** होकर द्विकर्मक बन गई, अर्थात् इसके 'मनु को' और 'पुस्तक' ये दो कर्म बन गए। इसी प्रकार अन्य वाक्यों में सकर्मक क्रियाएँ 'खाना' से 'खिलाना'; 'लिखना' से 'लिखाना' और 'सुनना' से 'सुनाना' द्विकर्मक क्रियाएँ बन गई हैं।

५. **पूर्वकालिक क्रिया**—मुख्य क्रिया से पहले आने वाली क्रिया का वाचक पद पूर्वकालिक क्रिया कहलाता है; जैसे—वह **खाकर** विद्यालय गया। '(पूर्वकालिक क्रिया शब्दों को एक ही शिरोरेखा में लिखते हैं; जैसे, खाकर, देखकर आदि।)

अभ्यास

१. क्रिया क्या है? होने वाले कार्य का नाम क्रिया है या उसके वाचक शब्द को क्रिया कहते हैं? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

२. कर्म की दृष्टि से क्रिया के कितने भेद हैं? सोदाहरण बताइए।

३. प्रयोग की दृष्टि से क्रिया के कितने भेद हैं? सोदाहरण बताइए।

४. निम्नलिखित क्रियाओं में से सकर्मक और अकर्मक को अलग-अलग लिखिए।

टूटना, तोड़ना, रोकना, रुकना, मरना, जाना, पिसना, पीसना, गिराना, गिरना, हटना, हटाना।

५. बताइए, निम्नलिखित क्रियाएँ प्रयोग की दृष्टि से क्रिया के कौन-से भेद हैं—

दिलवाना, हथियाना, मार डालना, हट जाना, खेलकर, सुलाना, कहना, धुलाना, धो डालना, फटकारना, खचना, बरसना, लगना, गर्माना, दे मारना, पटकना, पटक मारना।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

६. अकर्मक क्रियाओं को सकर्मक बनाइए।

उत्तर संकेत—(ii) रोना, (iii) अपना जीवन, (iv) सुलेख, (v) मैच।

(i) माँ देखती है।	माँ बच्चे को देखती है।
(ii) बच्चा रोता है।	....
(iii) हम जीते हैं।	....
(iv) कौन लिखता है ?	....
(v) खिलाड़ी जीतते हैं।	....

७. सही क्रिया-भेद पर ✓ निशान लगाइए—

(i) बड़बड़ाना	(पूर्वकालिक, नामधातु, संयुक्त)
(ii) गिरवाना	(नामधातु, सामान्य, प्रेरणार्थक)
(iii) खा जाना	(सामान्य, प्रेरणार्थक, संयुक्त)
(iv) बिकना	(सामान्य, संयुक्त, पूर्वकालिक)
(v) लेकर	(संयुक्त, नामधातु, पूर्वकालिक)
(vi) तोड़ डालना	(सामान्य, प्रेरणार्थक, संयुक्त)
(vii) रुलाना	(सामान्य, प्रेरणार्थक, संयुक्त)
(viii) रंगना	(सामान्य, नामधातु, संयुक्त)

८. इन शब्दों से नामधातु क्रिया शब्द बनाइए तथा उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

हाथ, लात, बात, मस्त, पागल।

९. ऐसे दो वाक्य लिखिए जिनमें दो कर्म हों ताकि उस वाक्य की क्रिया को द्विकर्मक क्रिया कहा जा सके।

१०. सोचिए : क्या संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण की भाँति क्रिया पर भी वचन, लिंग और कारक का प्रभाव पड़ सकता है ? कैसे ? उदाहरण दीजिए।

———

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: ११ :

काल
(TENSE)

परिभाषा—क्रिया के होने या करने के समय को काल कहते हैं।

काल के तीन भेद हैं—

१. भूतकाल (Past Tense)—बीते हुए समय को भूतकाल कहते हैं; जैसे—१९३९ में द्वितीय महायुद्ध हुआ। यहाँ स्पष्ट रूप से क्रिया भूतकाल की है।

२. वर्तमानकाल (Present Tense)—उपस्थित समय को वर्तमानकाल कहते हैं; जैसे—सैनिक युद्ध-भूमि में जा रहे हैं। यहाँ स्पष्ट रूप से क्रिया वर्तमानकाल की है।

३. भविष्यत्काल (Future Tense)—आने वाले समय को भविष्यत्काल कहते हैं; जैसे—हम कन्याकुमारी जाएँगे। यहाँ स्पष्ट रूप से क्रिया भविष्यत्काल की है।

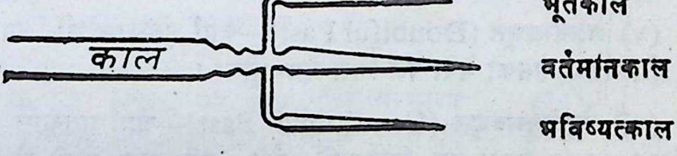

उपभेद

भूतकाल के छह उपभेद हैं—

(i) सामान्यभूत (Simple Past)—भूतकाल के साधारण रूप को सामान्यभूत कहते हैं; जैसे—राम गया।

(ii) आसन्नभूत (Recent Past)—जो क्रिया अभी-अभी समाप्त हुई हो, उसे आसन्नभूत कहते हैं; जैसे—आदर्श ने निबन्ध लिख लिया है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(iii) अपूर्णभूत (Incomplete Past)—जहाँ भूतकाल की क्रिया अभी समाप्त न हुई हो; जैसे—वह गाँव की ओर जा रहा था।

(iv) पूर्णभूत (Complete Past)—जहाँ भूतकाल की क्रिया समाप्त हो चुकी हो; जैसे—वह दवाई खा चुका था।

(v) सन्दिग्धभूत (Doubtful Past)—जहाँ भूतकाल की क्रिया में सन्देह हो; जैसे—उसको मेरा पत्र मिल गया होगा।

(vi) हेतुहेतुमद्भूत (Conditional Past)—जहाँ भूतकाल की एक क्रिया दूसरी क्रिया पर निर्भर हो; जैसे—यदि वर्षा होती तो खेत लहलहाते।

वर्तमानकाल के तीन उपभेद हैं—

(i) सामान्य वर्तमान (Present Indefinite)—वर्तमान क्रिया के साधारण रूप को सामान्य वर्तमान कहते हैं; जैसे—मुनि आता है।

(ii) अपूर्ण वर्तमान (Present Continuous)—जो क्रिया अभी हो रही हो, उस अपूर्ण वर्तमान कहते हैं; जैसे—गवैया गा रहा है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

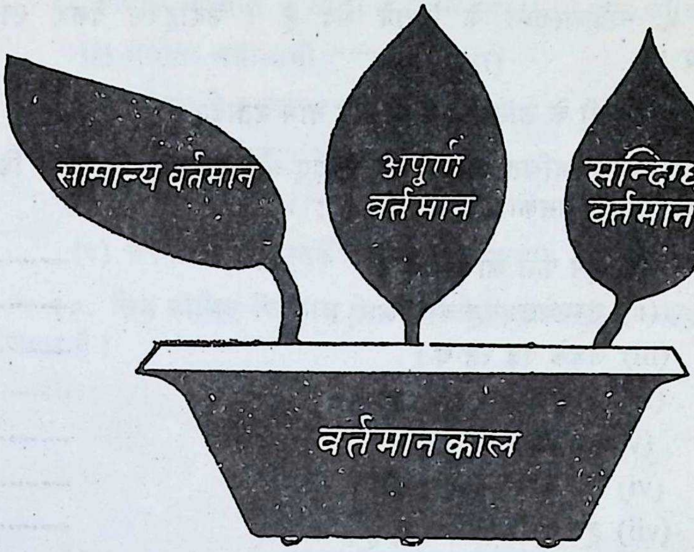

(iii) **सन्दिग्ध वर्तमान** (Doubtful Present)—वर्तमान क्रिया में जहाँ सन्देह पाया जाए, उसे सन्दिग्ध वर्तमान कहते हैं; जैसे—इस समय दुकान खुली होगी।

भविष्यत्काल के दो उपभेद हैं—

(i) **सामान्य भविष्यत्** (Simple Future)—भविष्यत्काल के साधारण रूप को सामान्य भविष्यत् कहते हैं; जैसे—हम छुट्टियों में गाँव जाएँगे।

(ii) **सम्भाव्य भविष्यत्** (Doubtful Future)—भविष्यत्काल की जिस क्रिया में सम्भावना या सन्देह पाया जाए, उसे सम्भाव्य भविष्यत् कहते हैं; जैसे—शायद आज शाम को वर्षा हो। जब तुम उसके यहाँ पहुँचोगे तो शायद वह सो रहा होगा।

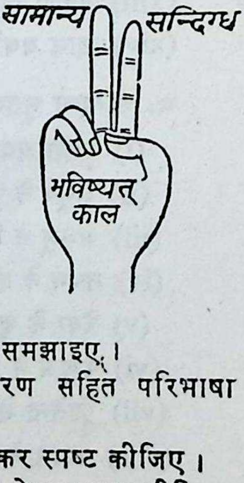

अभ्यास

१. काल का क्या अर्थ है? परिभाषा देकर समझाइए।

२. काल के कितने भेद हैं? सबकी उदाहरण सहित परिभाषा दीजिए।

३. भूतकाल के कितने भेद हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

४. वर्तमानकाल के कितने भेद हैं? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

५. भविष्यत्काल के कितने भेद हैं ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

६. हिन्दी के कालभेदों के अँग्रेज़ी नाम बताइए।

७. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और बताइए कि क्रिया किस काल की है तथा उसका कौन-सा भेद है :

(i) हम फल खा चुके थे। ....
(ii) सम्भवतः वह आज आए। ....
(iii) लड़के पढ़ रहे थे। ....
(iv) आज बाज़ार खुला होगा। ....
(v) हम लिख रहे हैं। ....
(vi) हम आपके साथ चलेंगे। ....
(vii) हम अभी-अभी आए हैं। ....
(viii) यदि आप सहायता करें तो सफलता निश्चित है। ....
(ix) क्या हम आपके लिए कुछ कर सकते हैं ? ....
(x) हो सकता है कि वे आज ही आ जाएँ। ....
(xi) बालक पढ़ रहे हैं। ....
(xii) आप सब खेलते हैं। ....
(xiii) महेश यहाँ अवश्य आया होगा। ....
(xiv) छात्र वर्षा में भी तैर रहे थे। ....

८. सन्दिग्ध भूतकाल के शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(i) रमेश अवश्य..........। (रोना)
(ii) अनूप ने पुस्तक..........। (समाप्त करना)
(iii) अञ्जू ने सितार..........। (बजाना)
(iv) तपन ने दौड़..........। (लगाना)
(v) रेवा ने खूब पढ़ाई..........। (करना)
(vi) पङ्कज ने प्रथम स्थान..........। (प्राप्त करना)
(vii) जितेन्द्र ने भाषण..........। (देना)
(viii) श्याम ने उसे..........। (ठीक करना)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

९. आसन्न भूतकाल के शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(i) प्रमीता अभी-अभी..........। (जाना)

(ii) कोमल ने दूरभाष.... —....। (करना)

(iii) दीपक ने चित्र...........। (बना लेना)

(iv) राजन ने सौ रन —........। (बनाना)

(v) रूपेन्द्र अपनी पुस्तकें..........। (दे जाना)

१०. सिद्ध कीजिए कि काल के प्रभाव से क्रिया शब्दों का रूपान्तर हो जाता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: १२ :

क्रियाविशेषण

(ADVERB)

परिभाषा—क्रिया की विशेषता बतानेवाले शब्द क्रियाविशेषण कहलाते हैं; जैसे—

वह **प्रतिदिन** पढ़ता है।

रमेश **यहाँ** रहता है।

कुछ खा लो, **कुछ** बाँट दो।

मोहन **सुन्दर** लिखता है।

ऊपर लिखे उदाहरणों में **प्रतिदिन, यहाँ, कुछ, सुन्दर**—ये सारे शब्द क्रिया की विशेषता बता रहे हैं। इसलिए ये क्रियाविशेषण हैं।

क्रियाविशेषण के भेद

क्रियाविशेषण के चार भेद हैं—

१. कालवाचक क्रियाविशेषण।

२. स्थानवाचक क्रियाविशेषण।

३. परिमाणवाचक क्रियाविशेषण।

४. रीतिवाचक क्रियाविशेषण।

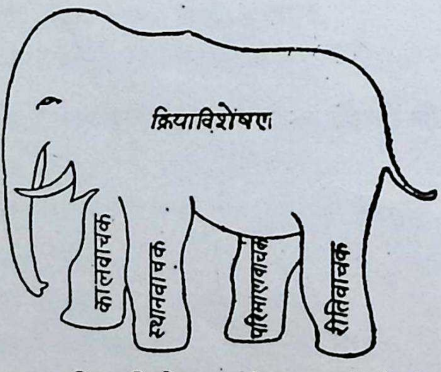

१. **कालवाचक क्रियाविशेषण**—जिन शब्दों से क्रिया के समय का पता लगे, उन्हें कालवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे—आपको **अभी** जाना चाहिए।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अन्य उदाहरण—अब, जब, तब, कब, अभी, जभी, तभी, कभी, फिर, तुरन्त, पहले, पश्चात्, बाद में, आज, कल, परसों, सदा, प्रतिदिन, देर से, लगातार, बार-बार इत्यादि।

२. **स्थानवाचक क्रियाविशेषण**—जिन शब्दों से क्रिया के स्थान का पता लगे, उन्हें स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे—अन्दर जाओ और वहाँ पढ़ो।

अन्य उदाहरण—यहाँ, वहाँ, जहाँ, कहाँ, बाहर, अन्दर, ऊपर, नीचे, पास, दूर, इधर, उधर, जिधर, किधर, इधर-उधर, चारों ओर, आर-पार, आस-पास इत्यादि।

३. **परिमाणवाचक क्रियाविशेषण**—जिन शब्दों से क्रिया की अधिकता-न्यूनता आदि परिमाण का पता लगे, उन्हें परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे—उतना खाओ जितना आवश्यक हो।

अन्य उदाहरण—थोड़ा, थोड़ा-सा, अधिक, कुछ, ज़रा, इतना-कितना, खूब, बिल्कुल, काफ़ी (पर्याप्त), इत्यादि।

४. **रीतिवाचक क्रियाविशेषण**—जिन शब्दों से क्रिया के होने की रीति या ढंग का पता लगे, उन्हें रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे—राकेश मधुर गाता है।

अन्य उदाहरण—ऐसे, वैसे, कैसे, जैसे, ज्यों, त्यों, ठीक, गलत, झूठ, सच, तेज़, धीरे-धीरे, अचानक, ध्यानपूर्वक, शान्तिपूर्वक, सुखपूर्वक, इत्यादि।

अभ्यास

१. क्रियाविशेषण से आप क्या समझते हैं? अच्छी प्रकार समझाइए और उसकी परिभाषा भी दीजिए।

२. परिमाणवाचक विशेषण तथा परिमाणवाचक क्रियाविशेषण में क्या अन्तर है? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

३. क्रियाविशेषण के भेद परिभाषा सहित लिखिए।

४. निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाविशेषण छाँटिए—

(i) साफ़-साफ़ यह बताओ कि यह चोरी किसने की है।

(ii) थोड़ा-सा खा लो, भूखा रहना ठीक नहीं।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(iii) लगातार व्यायाम करने से थकावट आ जाती है।
(iv) ईश्वर सब ओर, और सब जगह है।
(v) उसके एकाएक चिल्लाने से बच्चा डर गया।
(vi) नियमानुसार पढ़ने से सफलता ज़रूर मिलती है।
(vii) आप आगे-आगे चलिए, हम पीछे-पीछे आते हैं

५. निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाविशेषण का भेद उस वाक्य के सामने लिखिए—

(i) खाते हुए चलना शिष्टता नहीं। ....
(ii) चुपके-चुपके बढ़ो, शत्रु सामने है। ....
(iii) परसों लौट आना, नहीं तो झगड़ा हो जाएगा। ....
(iv) सारा कपड़ा हाथों-हाथ बिक गया। ....
(v) सरोवर निकट है, बहुत दूर नहीं। ....
(vi) अभी तो इतना खा लो, फिर और ला दूंगा। ....
(vii) जो अब तक नहीं आया, वह अब क्या आएगा ? ....

६. उचित क्रियाविशेषण लगाकर रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए—

(i) भाई रास्ता बड़ा उबड़-खाबड़ है, ज़रा..........चलो।
(ii) सोने के लिए तो रात है, दिन में..........न सोओ।
(iii) ....आप चलो, मैं भी..........पहुँचता हूँ।
(iv) या..........करो या..........करो, क्यों बात को बीच में लटकाए फिरते हो।
(v) रोगी ने एक हिचकी ली और उसके बाद वह अनन्तकाल के लिए..........सो गया।
(vi) आज तो मुश्किल है,..........तक काम अवश्य पूरा हो जाएगा।
(vii) वह..........भी जाए हमें क्या ?
(viii) आज वर्षा होने से..........पानी-ही-पानी नज़र आता है।
(ix) ....नहीं बोल सकते, तो कम-से-कम..........तो मत बोलो।
(x) आप..........आज कहाँ से टपक पड़े !

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

७. "क्रियाविशेषण शब्द अविकारी होते हैं। उनका रूप परिवर्तित नहीं होता।" इस कथन के समर्थन में चार उदाहरण दीजिए।

८. नीचे लिखे वाक्यों में उचित क्रियाविशेषण लगाकर उन्हें दुबारा लिखिए :

(i) राम दौड़ता है।
(ii) शेर गरजता है।
(iii) राम जाएगा।
(iv) बच्चा रो रहा है।
(v) गाड़ी पुल पर चल रही है।
(vi) मैं मन्दिर जाता हूँ।
(vii) वह आया था।
(viii) वह आएगा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: १३ :

सम्बन्धबोधक

(POST-POSITION)

राम दूकान है। छत बन्दर है।

क्या इन वाक्यों को पढ़कर कोई बात समझ में आती है ? नहीं आती है न ! यदि इन्हें इस तरह लिख दिया जाए :

राम दूकान में है। छत पर बन्दर है।

तो फिर दोनों वाक्यों से पूरी-पूरी बात समझ में आ जाती है।

परिभाषा—सम्बन्धबोधक वे अविकारी शब्द हैं जो संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ आकर उनका सम्बन्ध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ बताते हैं; जैसे – तुम्हारे **बिना** यहाँ हमारा कौन है ? घर के **अन्दर** पड़े रहना ठीक नहीं। अन्य उदाहरण देखिए :

विद्या **से** मनुष्य की शोभा बढ़ती है।

मारे खुशी **के** वह फूल कर कुप्पा हो गया।

मित्र के **लिए (वास्ते)** सब कुछ न्योछावर है।

अमिताभ के **द्वारा** यह काम सम्भव था।

मेरे **योग्य** कोई सेवा हो तो अवश्य बताइए।

वन में **कई** प्रकार के वृक्ष होते हैं।

राष्ट्रपति भवन **पर** उनका झण्डा फहराता है।

मनुष्य को चाहिए कि अन्त **तक** जी-तोड़ परिश्रम करे।

यह उसके दिवालिये होने से **पहले** की बात है।

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य सम्बन्धबोधक शब्द—

रहित, सहित, पास, दूर, नीचे, ऊपर, पहले, बाद, समान, विरुद्ध, कारण, अनुकूल, प्रतिकूल, अनुसार इत्यादि।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क्रियाविशेषण और सम्बन्धबोधक में अन्तर

ऐसे कई शब्द हैं जो क्रियाविशेषण भी हैं और सम्बन्धबोधक भी हैं। फिर उनका निर्णय कैसे हो ?

जो शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट करें, वे क्रियाविशेषण हैं और जो संज्ञा या सर्वनाम के साथ आकर उसका सम्बन्ध अन्य शब्दों से बताएँ उन्हें सम्बन्धबोधक कहते हैं; जैसे—

अन्दर जाओ। (क्रियाविशेषण)

कमरे के **अन्दर** जाओ। (सम्बन्धबोधक)

इसलिए अर्थ देखकर ही भेद का निश्चय करना चाहिए।

अभ्यास

१. सम्बन्धबोधक की परिभाषा उदाहरण सहित दीजिए।

२. निम्नलिखित वाक्यों में से सम्बन्धबोधक छाँटिए—

(i) काश्मीर हिमालय की घाटियों में बसा है।
(ii) रञ्जन की अपेक्षा भरत अधिक ताकतवर है।
(iii) रवीन्द्र के अतिरिक्त पंकज को भी बुलाओ।
(iv) धन के लिए मनुष्य न जाने क्या-क्या पाप करता है।
(v) वृक्ष के तले छाया का आनन्द लो।
(vi) घर से दूर जंगल में भक्त भजन करते हैं।

३. निम्नलिखित वाक्यों में सम्बन्धबोधक शब्द भरिए—

(i) प्रणव से·······जयन्त को बुलाओ।
(ii) पुत्र के·······घर दीपक से·······घर के समान है।
(iii) घर के·······मैदान·······बच्चे खेल रहे हैं।
(iv) लक्ष्मण के·······भाई की सेवा किसने की ?
(v) बड़ों के·······तर्क-वितर्क करना अनुचित है।
(vi) तुम्हारे·······मैं किसी और को नहीं जानता।
(vii) यमुना दिल्ली के·······बहती है।
(viii) बाहरी शत्रु के·······हम सब एक हैं।
(ix) राष्ट्रहित के·······काम देश-द्रोह है।
(x) बच्चों के·······घर जंगल है।

४. सिद्ध कीजिए कि सम्बन्धबोधक के बिना वाक्य लँगड़ा है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: १४ :

समुच्चयबोधक
(CONJUNCTION)

परिभाषा—दो शब्दों, वाक्यांशों अथवा वाक्यों को मिलानेवाले अविकारी शब्द समुच्चयबोधक कहलाते हैं; जैसे—

कपिला और माधवी चित्र बनाती हैं।
बेशक यह अमीर है परन्तु है कंजूस।
प्रतीप को बुलाओ क्योंकि मुझे उससे मिलना है।
ऊपर के वाक्यों में—
"और" दो शब्दों को मिलाता है।
"परन्तु" दो वाक्यों को मिलाता है।
"क्योंकि" दो वाक्यों को मिलाता है।
समुच्चयबोधक शब्दों के तीन भेद हैं—

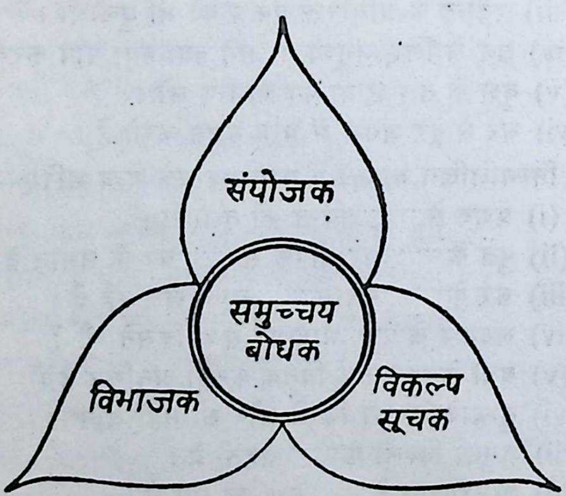

१. **संयोजक**—जो समुच्चयबोधक शब्द जोड़ने के अर्थ में आएँ, उन्हें संयोजक कहते हैं; जैसे—और, तथा, एवं इत्यादि।

२. **विभाजक**—जो समुच्चयबोधक शब्द भेद प्रकट करते हुए दो वाक्यांशों को मिलाएँ, उन्हें विभाजक कहते हैं; जैसे—परन्तु, किन्तु, मगर,

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क्योंकि, ताकि, इसलिए, तथापि, कि, अगर—तो इत्यादि।

३. विकल्पसूचक—जो समुच्चयबोधक शब्द विकल्प का बोध कराएँ, उन्हें विकल्पसूचक शब्द कहते हैं; जैसे—या, अथवा, न कि, या-या इत्यादि। मेरी पुस्तक राम ने चुराई है या माधवी ने। इस वाक्य में राम और माधवी के चुराने की क्रिया करने में विकल्प है।

अभ्यास

१. समुच्चयबोधक की परिभाषा उदाहरण सहित लिखिए।

२. समुच्चयबोधक के भेद बताइए! प्रत्येक के दो-दो उदाहरण भी दीजिए।

३. निम्नलिखित वाक्यों में समुच्चयबोधक शब्द छाँटिए—

(i) प्रतिदिन व्यायाम कीजिए ताकि शरीर स्वस्थ रहे।

(ii) वह काम करो जिससे सबका लाभ हो।

(iii) तुम भले ही अभी चले जाओ लेकिन मैं तो बाद में आऊँगा।

(iv) यह पुस्तक मेरी है न कि तुम्हारी।

(v) यद्यपि भारत स्वतन्त्र है तथापि हमारे हृदय अभी पूरी तरह स्वतन्त्र नहीं।

(vi) अगर वर्षा होगी तो फसल अच्छी होगी।

(vii) चाहे बड़ा हो, चाहे छोटा आदमी, आदर सब चाहते हैं।

४. क्या समुच्चयबोधक अविकारी शब्द हैं ? यदि हैं तो क्यों ?

५. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए·

वरना, नहीं तो, तथा, बल्कि, अथवा, एवं, पर, अतः।

६. समुच्चयबोधक शब्द लगाकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(i) विश्व ने कोशिश तो काफ़ी की,·······सफल न हुआ।

(ii) अञ्चला आजकल केवल फ्रेंच भाषा ही नहीं सीखती,···· साथ-साथ चित्रकला भी सीख रही है।

(iii) वीणा हँसे, हँसाए न·······घर में चुप्पी ही पड़ी रहे।

(iv) ·······नीना है छोटी·······उसकी बुद्धि बड़ी प्रखर है।

(v) ·······आँधी हो या तूफ़ान, प्रदीप तैरने अवश्य जाएगा।

(vi) कपिला·······शिञ्जा दोनों बहनें हैं।

(vii) अशोक बोला, "अविनाश भय्या ! हमें भी ले चलो······· हम तुम्हारे साथ नहीं बोलेंगे।"

(viii) इन्द्रेश·······सतीश, दोनों में से एक-न-एक की ही यह शरारत है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: १५ :

विस्मयादिबोधक
(INTERJECTION)

मन के भावों को हम अनेक प्रकार के शब्दों द्वारा प्रकट करते हैं; जैसे—

शाबाश ! तुमने कमाल कर दिया !
अहा ! आप आ गए !
हाय रे ! क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ?
वाह-वाह ! अचल, प्रथम आया है !
हाय-हाय ! उसने यह क्या कर डाला ?
छिः-छिः ! ऐसे आदमी के नाम से ही मुझे घृणा है !
बाप रे बाप ! यह क्या हो गया ?
बाप रे ! मैं तो लुट गया।
ओ हो ! तो यह आपकी करतूत है !

ऊपर के वाक्यों में हर्ष, दुःख, आश्चर्य, घृणा, आदि भावों को प्रकट करने वाले 'शाबाश', 'अहा', 'हाय रे' इत्यादि शब्द विस्मयादिबोधक कहलाते हैं।

परिभाषा—हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा आदि मनोभावों को प्रकट करने वाले अविकारी शब्द विस्मयादिबोधक कहलाते हैं; जैसे—

हर्ष-सूचक शब्द—ओह !, वाह !, वाह-वाह !

हर्ष

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शोक-सूचक शब्द—हाय-हाय !, हाय रे ! बाप रे !

शोक

आश्चर्य-सूचक शब्द—अहो !, ओह !, ओहो !

आश्चर्य

घृणा-सूचक शब्द—छि !, छिः छिः !, धिक् !

घृणा

स्वीकृति-सूचक शब्द—अच्छा !, ठीक !, हाँ, जी हाँ !

स्वीकृति

सम्बोधन-सूचक शब्द—अरे !, रे !, आ !

सम्बोधन

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अन्य संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, आदि शब्दों को भी विस्मय आदि की ध्वनि के साथ बोला जाए तो वहाँ वे भी विस्मयादिबोधक बन जाते हैं; जैसे—

संज्ञा—राम-राम : राम ! राम ! ऐसा कभी न करना !
सर्वनाम—आप : भला आप कैसे प्रथम आ सकते हैं !
विशेषण—पहला : पहला नम्बर तो मेरा था !
क्रिया—हट : हट ! नहीं तो मारूँगा !
क्रियाविशेषण—कहाँ : अब घी कहाँ है !
सम्बन्धबोधक—अन्दर : चोर तो हमारे अन्दर है !
समुच्चयबोधक—किन्तु : किन्तु-विन्तु क्या लगा रखा है ?

अभ्यास

१. विस्मयादिबोधक किसे कहते हैं ? उदाहरण सहित बताइए।

२. बताइए, निम्नलिखित में काले शब्दों से मन का कैसा भाव प्रकट होता है।

अरे मूर्ख ! तूने यह क्या कर डाला ?
शाबाश ! तुमसे तो हमें पहले ही उम्मीद थी।
ओ हो ! तो आप हैं।
उफ़ ! मैं तो बाज़ आया !
हैं ! यह कौन !
हा ! यह क्या हो गया !
बाप रे बाप ! इतना काम ?

३. निम्नलिखित वाक्यों में विस्मयादिबोधक छाँटिए—

(i) धन्यवाद ! मैं आपका कृतज्ञ हूँ।
(ii) मैया री ! मैं नहीं माखन खायो।
(iii) चुप ! सो जा, भालू आ रहा है।
(iv) क्यों रे बुद्धू ! कभी तो अक्ल का काम किया कर।
(v) नालायक ! तुम कभी पास भी हुए हो ?
(vi) अभी ! अभी तो मैं नहीं जा सकता।
(vii) हाँ ! हाँ आपका काम हो जाएगा।
(viii) क्यों जी ! तो आप नहीं मानेंगे ?

———

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: १६ :

शब्द-रचना
(WORD-BUILDING)

भाषा में जिन शब्दों का हम प्रयोग करते हैं, वे किस प्रकार से बनते हैं, यह एक बड़ा रुचिकर प्रश्न है। न तो रुपये और सिक्कों आदि की तरह टकसाल में उनका निर्माण होता है और न ही घड़े आदि की तरह कोई कुम्हार उन्हें घड़ता है। उन्हें समाज और जीवन घड़ता है।

व्याकरण के प्राचीन विद्वानों ने भाषा के स्वभाव की बड़ी गहराई से खोज की और अपने सतत् परिश्रम तथा अपनी अद्वितीय प्रतिभा से कुछ ऐसे उपकरण ढूंढ निकाले, जिनकी सहायता से अनेक शब्दों की रचना हो चुकी है, अब भी होती रहती है और आगे भी होती रहेगी। यह संस्कृत भाषा की विशेष देन है और इस देन के कारण भारतीय भाषाओं का भण्डार प्रतिदिन बढ़ता रहता है। अपेक्षा केवल परिश्रम की है। यदि योग्य व्यक्ति इन उपकरणों की सहायता से साहित्य और भाषा को समृद्ध करते रहेंगे तो देशी भाषाओं का भण्डार अद्वितीय हो जाएगा।

शब्द-रचना के चार प्रकार हैं—

(१) **उपसर्ग** लगाकर (२) **प्रत्यय** लगाकर

(३) **सन्धि** द्वारा (४) **समास** द्वारा

आगे के अध्यायों में क्रमशः इनका वर्णन किया जाएगा।

उपसर्ग
(PREFIX)

कुछ शब्दांश ऐसे होते हैं जिनका न तो अपना स्वतन्त्र प्रयोग हो सकता है और न अपना विशेष अर्थ ही होता है, परन्तु अन्य शब्दों के पूर्व लगकर उनके अर्थ में कुछ विशेषता या परिवर्तन ला देते हैं; जैसे—**अतिनिपुण, अतिरिक्त** आदि। यहाँ 'अति' उपसर्ग के कारण अर्थ में क्रमशः विशेषता और परिवर्तन आ गया है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

परिभाषा—जो शब्दांश शब्दों के पूर्व लगकर रूप के अर्थ में विशेषता या परिवर्तन ला दें, उन्हें **उपसर्ग** कहते हैं।

हिन्दी के सारे उपसर्गों को चार भागों में बाँटा जा सकता है—

१. संस्कृत के उपसर्ग २. हिन्दी के उपसर्ग ३. उर्दू के उपसर्ग ४. उपसर्ग की तरह प्रयुक्त होनेवाले संस्कृत के अव्यय।

१. संस्कृत के उपसग

उपसर्ग	**अर्थ (लगभग)**	**उदाहरण**
प्र	आगे, अधिक, उत्कृष्ट,	प्रगति, प्रख्यात, प्रबल
परा	पीछे, उल्टा	पराभव, पराजय
अप	बुरा, हीन	अपकार, अपमान, अपयश
सम	पूर्ण, अच्छा	संचय, संस्कार, संगति
अनु	समान, पीछे	अनुरूप, अनुज, अनुकरण
अव	बुरा, नीचे	अवगुण, अवनति, अवतरण
निस्	बिना	निश्चल, निश्चित, निश्छल
निर्	बिना	निर्जन, निर्गुण, निर्धन
दुस्	बुरा	दुष्कर्म, दुश्चरित्र, दुस्साहस
दुर्	बुरा, कठिन	दुर्दशा, दुर्जन, दुर्गम
वि	भिन्न, विशेष	वियोग, विजन, विशुद्ध
आ	तक, से लेकर, उल्टा	आजन्म, आबालवृद्ध, आगमन
नि	अभाव, विशेष	निवारण, नियुक्त, नियोग
अधि	ऊपर	अधिकार, अधिपति, अध्यक्ष
अति	अधिक, ऊपर	अत्युत्तम, अत्यन्त, अतिकाल
सु	अच्छा, सरल	सुडौल, सुकन्या, सुगम
उत	ऊपर	उत्पत्ति, उद्धार, उत्कर्ष
अभि	सामने	अभिमुख, अभ्यागत, अभिमान
प्रति	सामने, उल्टा, हर एक	प्रत्यक्ष, प्रतिकूल, प्रत्येक
परि	सब ओर	परिजन, परिक्रमा, परिपूर्ण
उप	निकट, गौण	उपकार, उपनाम, उपमंत्री

नोट—(i) कभी-कभी दो उपसर्ग एक साथ आ जाते हैं; जैसे—प्रति+उप+कार=प्रत्युपकार, सु+सम्+कार=सुसंस्कार, प्रति+आ+गमन=प्रत्यागमन इत्यादि।

(ii) ऊपर दिए उदाहरणों में कई जगह उपसर्ग का अर्थ या भाव स्पष्ट दिखाई नहीं देता। परन्तु यदि उन्हीं उदाहरणों के मूल शब्द तथा उपसर्गादि को पृथक्-पृथक् कर दिया जाए, तो स्पष्ट रूप से न सही, परन्तु

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उपसर्ग के अर्थ की झलक अवश्य दिखाई पड़ती है; जैसे उत्पत्ति=उत्+पत्ति, अर्थात् जन्म अर्थात् शून्य से ऊपर उठना, अभिमान=अभि+मान, अर्थात् सबके सामने ही जो अपना मान स्वयं करे, परिजन=परि+जन, अर्थात् चारों ओर रहनेवाले जन अर्थात् सेवक।

(iii) उपसर्ग-युक्त शब्द विशेष अर्थों में रूढ़ हो जाते हैं; जैसे, अभ्यागत=सामने से आया हुआ अर्थात् अतिथि। 'अतिथि' के अतिरिक्त किसी अन्य अर्थ में इसका प्रयोग नहीं हो सकता। इसी प्रकार से अन्य शब्द देखिए।

२. हिन्दी के उपसर्ग

ये उपसर्ग संस्कृत शब्दों के ही बिगड़े हुए रूप हैं—

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अन	रहित	अनमोल, अनजान, अनबन, अनपढ़
नि	रहित	निडर, निकम्मा, निहत्था
अध	आधा	अधमरा, अधपका, अधखिला
औ	रहित	औगन, औतार, औघट
भर	पूरा	भरपेट, भरपूर

३. उर्दू के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
बे	रहित	बेजान, बेचैन, बेईमान
ला	रहित	लापरवाह, लाजवाब, लाच.
ना	निषेध	नालायक, नाराज़, नापसन्द
कम	थोड़ा	कमज़ोर, कमबख्त, कमउम्र
बद	बुरा	बद्‌बू, बदसूरत, बदतमीज़
बा	अनुसार	बाकायदा, बा-इज़्ज़त, बामौका
खुश	अच्छा	खुशदिल, खुशमिजाज़, खुशबू
हम	साथ	हमउम्र, हमदर्द, हमवतन
सर	मुख्य	सरताज, सरपंच, सरहद
गैर	निषेध	गैरहाज़िर, गैरकौम, गैरमुल्क
हर	प्रति	हर एक, हर रोज़, हर साल
दर	में	दरअसल, दरहकीकत

४. उपसर्ग की तरह प्रयोज्य संस्कृत अव्यय

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अ (व्यञ्जनों से पूर्व)	निषेध	अभाव, अचेत, अज्ञान
अन् (स्वरों से पूर्व)	निषेध	अनागत, अनादि, अनर्थ
कु, क	बुरा	कुपुत्र, कुसमय, कपूत

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
स	सहित	सहर्ष, सजल, सपत्नीक
अधः	नीचे	अधोगति, अधःपतन, अधोमुख
चिर	बहुत (देर)	चिरायु, चिरकाल, चिरन्तन
अन्तर	अन्दर	अन्तर्राष्ट्रीय, अन्तःप्रान्तीय, अन्तरात्मा
पुरा	प्राचीन	पुराचीन, पुरातन, पुरातत्व
पुनः	फिर	पुनरागमन, पुनर्जन्म, पुनर्निर्माण
सत्	अच्छा	सज्जन, सत्कार्य, सत्कार
अलम्	पर्याप्त	अलंकार, अलंकृत
बहिर्	बाहर	बहिर्मुख, बहिर्गमन
तिरस्	बुरा	तिरस्कार, तिरोभाव
पुरस्	आगे	पुरस्कार, पुरोहित
प्रादुर्	प्रकट	प्रादुर्भाव
आदि	प्रकट	आविष्कार, आविर्भाव

अभ्यास

१. उपसर्ग किसे कहते हैं ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

२. उपसर्ग नये शब्दों के निर्माण में किस प्रकार योग देते हैं ? पाठ में न आए दस नये उदाहरण दीजिए ।

३. निम्नलिखित शब्दों के साथ उचित उपसर्ग लगाइए—

......+आधार=निराधार	......+लिहाज=बेलिहाज़
......+एक =प्रत्येक	......+गठित =सुसंगठित
......+आकार=साकार	......+विवाह=पुनर्विवाह

४. बताइए, निम्नलिखित उपसर्ग किस भाषा से लिए गए हैं—

बा	......	आ	......
नि	......	हर	......
ला	......	प्र	......
पुरा	......	अधः	......

५. विपरीतार्थक उपसर्ग ढूंढ़ कर सामने लिखिए—

सु	......	अनु	......
दुर्	......	बा	......
अन्तर्	......	सु	......

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

प्रत्यय
(SUFFIX)

कुछ शब्दांश ऐसे होते हैं, जो शब्दों के अन्त में लगते हैं। उन्हीं का नाम प्रत्यय है। इन प्रत्ययों का अपना अर्थ कुछ नहीं होता और न ही उपसर्गों की भांति इनका प्रयोग स्वतन्त्र रूप से हो सकता है। परन्तु इनके योग से नया शब्द बन जाता है।

परिभाषा—प्रत्यय वे शब्दांश हैं जो शब्दों के अन्त में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता पैदा कर दें; जैसे—सुत+आ=सुता। यहाँ 'आ' प्रत्यय लगने से अर्थ बदल गया।

प्रत्यय दो प्रकार के हैं—

(क) संज्ञा के अन्त में लगनेवाले

(ख) धातु के अन्त में लगनेवाले

(क) संज्ञाओं के अन्त में आनेवाले प्रत्यय चार प्रकार के हैं—

(i) स्त्री-प्रत्यय (ii) तद्धित-प्रत्यय

(iii) विभक्ति (iv) नाम-धातु प्रत्यय

(i) स्त्री-प्रत्यय—जिन प्रत्ययों के लगने से **स्त्रीलिंग** शब्द बनते हैं, स्त्री-प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे—लड़का+ई=लड़की, शेर+नी=शेरनी आदि।

इनका वर्णन लिंग-प्रकरण में आ चुका है। विस्तार के लिए वहीं देखना चाहिए।

(ii) तद्धित-प्रत्यय—ये प्रत्यय संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के अन्त में लगकर उनके अर्थ में परिवर्तन ला देते हैं; जैसे—पुरुष+त्व=पुरुषत्व, मानव+ता=मानवता, बुद्धि+मान्=बुद्धिमान्, इत्यादि।

ये प्रत्यय संख्या में बहुत अधिक हैं, परन्तु कुछ मुख्य प्रत्यय उदाहरण सहित नीचे दिए जाते हैं—

वाला—सब्ज़ी	सब्ज़ीवाला	साईकिल	साईकिलवाला
घर	घरवाला	किताब	किताबवाला
वान्—धन	धनवान्	ज्ञान	ज्ञानवान्
वती—बल	बलवती	पुत्र	पुत्रवती

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मान्—	शक्ति	शक्तिमान्	बुद्धि	बुद्धिमान्
	मति	मतिमान्	कीर्ति	कीर्तिमान्
इक—	धर्म	धार्मिक	नीति	नैतिक
	इतिहास	ऐतिहासिक	नगर	नागरिक
अव्—	पुरु	पौरव	कुरु	कौरव
	रघु	राघव	पाण्डु	पाण्डव
आई—	ऊँचा	ऊँचाई	चौड़ा	चौड़ाई
	लम्बा	लम्बाई	बड़ा	बड़ाई
ता—	पशू	पशुता	नीच	नीचता
	कृपण	कृपणता	उच्च	उच्चता
त्व—	सिंह	सिंहत्व	देव	देवत्व
	पशु	पशुत्व	ईश्वर	ईश्वरत्व
शाली—	बल	बलशाली	शक्ति	शक्तिशाली
	भाग्य	भाग्यशाली	धन	धनशाली
इत—	क्रोध	क्रोधित	उत्साह	उत्साहित
	शोभा	शोभित	आनन्द	आनन्दित

इनके अतिरिक्त और अनेक प्रत्यय हैं जिनके लगने से अनेक शब्दों की रचना होती है।

(iii) **विभक्ति**—विभक्तियों के चिह्न 'ने, को' आदि भी प्रत्यय हैं। सातों कारकों के चिह्न प्रत्यय होने के कारण पूर्व आए शब्दों के अभिन्न अंग हैं। इन प्रत्ययों का वर्णन कारक प्रकरण में हो चुका है।

(iv) **नाम-धातु प्रत्यय**—ये प्रत्यय संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के बाद लगकर उन्हें धातु बना देते हैं; जैसे—

प्रत्यय	**शब्द**	**नामधातु**	**क्रिया का सामान्य रूप**
आ	लाड़	लड़ा	लड़ाना
आ	अपना	अपना	अपनाना
आ	खटखट	खटखटा	खटखटाना
इया	हाथ	हथिया	हथियाना
इया	जूता	जुतिया	जुतियाना
ला	झूठ	झुठला	झुठलाना

इत्यादि।

(ख) धातुओं के अन्त में आनेवाले प्रत्यय दो प्रकार के हैं।

(i) क्रिया प्रत्यय (ii) कृत् प्रत्यय

(i) क्रिया प्रत्यय—क्रिया के साथ कालानुसार या प्रेरणार्थक आदि

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बनाने के लिए जो प्रत्यय लगाए जाते हैं, वे क्रिया प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे—जा+ता=जाता, जा+ए=जाए, गा+ऊँ=गाऊँ, भेज+वाना=भिजवाना इत्यादि।

(ii) **कृत् प्रत्यय**—ये प्रत्यय धातुओं के बाद लगकर उन्हें संज्ञा बना देते हैं; जैसे—बेचना+आऊ=बिकाऊ, अड़ना+इयल=अड़ियल, इत्यादि। जिन शब्दों के बाद कृत् प्रत्यय लगते हैं, वे शब्द **कृदन्त** कहलाते हैं—

कृत् प्रत्यय पाँच प्रकार के होते हैं—

१. **कर्तृवाचक**—जो कृत् प्रत्यय कार्य करने वाले (कर्त्ता) का बोध कराएँ; जैसे—जाना+**वाला**=जानेवाला, मिलना+**सार**=मिलनसार, पीना+**अक्कड़**=पियक्कड़, खेलना+**आड़ी**=खिलाड़ी आदि।

२. **कर्मवाचक**—जो कृत् प्रत्यय कर्म का बोध कराएँ; जैसे—खेल+**औना**=खिलौना, ओढ़+**नी**=ओढ़नी, बिछा+**औना**=बिछौना आदि।

३. **करणवाचक**—जो कृत् प्रत्यय क्रिया के साधन का बोध कराएँ; जैसे—झाड़+**न**=झाड़न, झूल+**आ**=झूला, मथ+**आनी**=मथानी आदि।

४. **भाववाचक**—जिन कृत् प्रत्ययों से भाववाचक संज्ञाएँ बनें; जैसे—पढ़+**आई**=पढ़ाई, लिख+**आवट**=लिखावट, चल+**न**=चलन, हँस+**ई**=हँसी आदि।

५. **क्रियावाचक**—जिन कृत् प्रत्ययों से क्रिया-शब्द से युक्त विशेषण बनें; जैसे—भागता हुआ (लड़का), खाया हुआ (फल), आया हुआ (मनुष्य) चमकता (सूरज), दौड़ती (लड़की) आदि।

विशेष—**(क) तद्धित और कृत् प्रत्यय में अन्तर**—

जो प्रत्यय संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के अन्त में लगकर अर्थ में विशेषता पैदा करें, वे तद्धित प्रत्यय कहलाते हैं; परन्तु जो प्रत्यय क्रिया शब्दों के अन्त में लगकर अर्थ में विशेषता पैदा करें, वे कृत् प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे—पशु+ता=पशुता, झूल+ओ=झूलो। इन उदाहरणों में '**ता**' प्रत्यय संज्ञा में लगा होने के कारण तद्धित है और '**ओ**' प्रत्यय क्रिया में लगा होने के कारण कृत् है।

(ख) उपसर्ग और प्रत्यय में अन्तर—

जो शब्दांश शब्दों के पहले लगकर अर्थ में विशेषता लाएँ, वे उपसर्ग कहलाते हैं और जो शब्दांश शब्दों के अन्त में लगकर अर्थ में विशेषता प्रकट करें, वे प्रत्यय कहलाते हैं; जैसे—प्र+गति=प्रगति, घबराना+हट=घबराहट। इन उदाहरणों में '**प्र**' उपसर्ग और **हट**' प्रत्यय है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अभ्यास

१. प्रत्यय किसे कहते हैं ? उपसर्ग और प्रत्यय में क्या अन्तर है ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

२. निम्नलिखित शब्दों में प्रकृत (मूल शब्द) और प्रत्यय को अलग-अलग कीजिए—

नागरिक ....
कृपालु ....
इन्द्राणी ....
छिड़काव ....
हँसोड़ ....

३. ठीक कथन के सामने ✓ का निशान लगाइए—

(i) तद्धित प्रत्यय क्रियाओं में लगते हैं। ....
(ii) कर्मवाचक प्रत्यय कृत् प्रत्यय का भेद है। ....
(iii) नामधातु प्रत्यय धातुओं में लगते हैं। ....
(iv) कृत् प्रत्यय के पांच भेद हैं। ....
(v) प्रत्यय शब्द नहीं, शब्दांश है। ....

४. निम्नलिखित प्रत्ययों से बने दो-दो उदाहरण सोचकर लिखिए—

आव ....
आवट ....
इत ....
नीय ....
आहट ....
वाला ....
वान् ....

५. नीचे लिखे शब्दों में प्रत्यय लगाकर नये शब्द बनाइए—

बुद्धि, नीति, भूत, धर्म, व्यवहार, जीव,

६. शब्दों में हारा और इया प्रत्यय लगाकर दो-दो शब्द बनाइए।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: १८ :

सन्धि

सन्धि शब्द का अर्थ है—मेल; जैसे—

वद्या+आलय=विद्यालय   रमा+ईश=रमेश

यदि+अपि=यद्यपि   इति+आदि=इत्यादि

व्याकरण में इस प्रकार के मेल को सन्धि कहा जाता है।

परिभाषा—पास-पास पड़े दो अक्षरों के मिलने से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे सन्धि कहते हैं।

सन्धि के तीन भेद हैं

१. स्वर-सन्धि—स्वर से स्वर के मेल को स्वर-सन्धि कहते हैं।

२. व्यञ्जन सन्धि—व्यञ्जन के साथ व्यञ्जन या स्वर के मेल को व्यञ्जन सन्धि कहते हैं।

३. विसर्ग सन्धि—विसर्ग के साथ व्यञ्जन या स्वर के मेल को विसर्ग सन्धि कहते हैं।

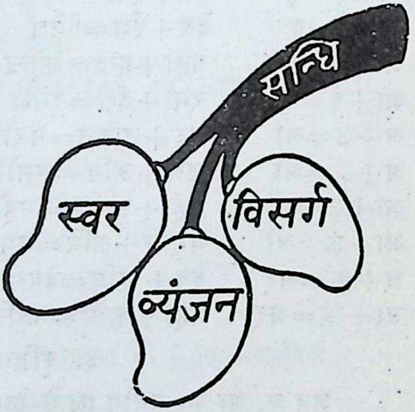

नोट—सन्धि केवल तत्सम शब्दों में होती है।

स्वर-सन्धि पाँच प्रकार की होती है—

१. दीर्घ सन्धि

ह्रस्व या दीर्घ अ इ उ पास-पास आते हैं, तो उनके स्थान पर सवर्ण दीर्घ हो जाता है। यह 'दीर्घ सन्धि' कहलाती है, उदाहरणार्थ :

अ+अ=आ	भाव+अर्थ=भावार्थ	चर+अचर=चराचर
अ+आ=आ	हिम+आलय=हिमालय	शिव+आलय=शिवालय
आ+अ=आ	विद्या+अर्थी=विद्यार्थी	सीता+अर्थ=सीतार्थ (सीता के लिए)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आ+आ=आ	विद्या+आलय=विद्यालय	विद्या+आनन्द=विद्यानन्द
इ+इ=ई	मुनि+इन्द्र=मुनीन्द्र	कवि+इन्द्र=कवीन्द्र
इ+ई=ई	मुनि+ईश्वर=मुनीश्वर	कवि+ईश्वर=कवीश्वर
ई+इ=ई	मही+इन्द्र=महीन्द्र	नारी+इन्दु=नारीन्दु
ई+ई=ई	नदी+ईश=नदीश	मही+ईश=महीश
उ+उ=ऊ	गुरु+उपदेश=गुरूपदेश	भानु+उदय=भानूदय
उ+ऊ=ऊ	सिन्धु+ऊर्मि=सिन्धूर्मि	साधु+ऊर्जा=साधूर्जा
ऊ+उ=ऊ	वधू+उत्सव=वधूत्सव	वधू+उल्लेख=वधूल्लेख
ऊ+ऊ=ऊ	भू+ऊर्ध्व=भूर्ध्व	वधू+ऊर्जा=वधूर्जा

२. गुण सन्धि

जब अ, आ का संयोग इ, उ, ऋ के साथ होता है, तब क्रमशः ए, ओ, अर् हो जाता है। यह गुण सन्धि कहलाती है, उदाहरणार्थ :

अ+इ=ए	नर+इन्द्र=नरेन्द्र	सुर+इन्द्र=सुरेन्द्र
अ+ई=ए	देव+ईश=देवेश	गण+ईश=गणेश
आ+इ=ए	महा+इन्द्र=महेन्द्र	रमा+इन्द्र=रमेन्द्र
आ+ई=ए	रमा+ईश=रमेश	धरा+ईश=धरेश
अ+उ=ओ	नर+उचित=नरोचित	पुरुष+उत्तम=पुरुषोत्तम
अ+ऊ=ओ	जल+ऊर्मि=जलोर्मि	नव+ऊढ़ा=नवोढ़ा
आ+उ=ओ	महा+उत्सव=महोत्सव	महा+उष्ण=महोष्ण
आ+ऊ=ओ	यमुना+ऊर्मि=यमुनोर्मि	गंगा+ऊर्मि=गंगोर्मि
अ+ऋ=अर्	देव+ऋषि=देवर्षि	राज+ऋषि=राजर्षि
आ+ऋ=अर्	महा+ऋषि=महर्षि	वर्षा+ऋतु=वर्षर्तु

३. वृद्धि-सन्धि

जब अ, आ का संयोग ए, ऐ के साथ होता है तब ऐ हो जाता है तथा अ, आ का ओ, औ से संयोग होने पर 'औ' हो जाता है; उदाहरणार्थ :

अ+ए=ऐ	एक+एक=एकैक	लोक+एषणा=लोकैषणा
अ+ऐ=ऐ	धन+ऐश्वर्य=धनैश्वर्य	मत+ऐक्य=मतैक्य
आ+ए=ऐ	सदा+एव=सदैव	विद्या+एषणा=विद्यैषणा
आ+ऐ=ऐ	महा+ऐश्वर्य=महैश्वर्य	विद्या+ऐश्वर्य=विद्यैश्वर्य
अ+ओ=औ	दन्त+ओष्ठ्य=दन्तौष्ठ्य	घृत+ओदन=घृतौदन
अ+औ=औ	वन+औषधि=वनौषधि	परम+औषध=परमौषध
आ+ओ=औ	महा+ओदन=महौदन	महा+ओज=महौज
आ+औ=औ	महा+औत्सुक्य=महौत्सुक्य	महा+औषध=महौषध

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

४. यण्-सन्धि

ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ के पश्चात् यदि अन्य असमान स्वर आता है तब इ का य् तथा उ का व् हो जाता है, उदाहरणार्थ :

इ+अ=य्+अ यदि+अपि=यद्यपि पंक्ति+अन्वय=पंक्त्यन्वय
इ+आ=य्+आ इति+आदि=इत्यादि अति+आचार=अत्याचार
ई+अ=य्+अ देवी+अर्पण=देव्यर्पण दासी+अपराध=दास्यपराध
ई+आ=य्+आ देवी+आगमन=देव्यागमन नदी+आगमन=नद्यागमन

इसी प्रकार अन्य शब्दों में भी इ या ई के बाद इ, ई को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तो इ, ई को य् हो जाएगा।

उ+अ=व्+अ गुरु+अर्पण=गुर्वर्पण अनु+अय=अन्वय
उ+आ=व्+आ सु+आगत=स्वागत गुरु+आकृति=गुर्वाकृति

इसी प्रकार अन्य शब्दों में भी उ, ऊ के बाद उ, ऊ को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तो उ, ऊ को व् हो जाता है।

५. अयादि सन्धि

ए, ऐ, ओ, औ के पश्चात् किसी अन्य स्वर का आगमन हो तो क्रमशः अय्, आय्, अव्, आव् होता है :

ए+कोई स्वर→अय् ने+अन=नयन
ऐ+कोई स्वर→आय् गै+अक्=गायक
ओ+कोई स्वर→आव् भो+अन=भवन
ओ+कोई स्वर→अव् पो+अन=पवन
औ+कोई स्वर→आव् भौ+उक=भावुक
पौ+अक=पावक; नौ+इक=नाविक

६. व्यञ्जन सन्धि

व्यञ्जन सन्धि के तीन वर्ग बनाए जा सकते हैं :—

(i) व्यञ्जन एवं स्वर का योग—उदाहरण
वाक्+ईश=वागीश
जगत्+ईश=जगदीश

(ii) स्वर एवं व्यञ्जन का योग—उदाहरण
आ+छादन=आच्छादन
परि+छेद=परिच्छेद

(iii) व्यञ्जन एवं व्यञ्जन का योग—उदाहरण
दिक्+दर्शन=दिग्दर्शन
उत्+ज्वल=उज्ज्वल

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

व्यञ्जन सन्धि के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :

क्+अ→दिक्+अम्बर=दिगम्बर	त्+ध्→सत् +धर्म=सद्धर्म
क्+ज्→वाक्+जाल =वाग्जाल	त्+ज्→विपत् +जाल=विपज्जाल
क्+द्→वाक् +दान =वाग्दान	त्+ह→उत् +हार=उद्धार
त्+न्→जगत्+नाथ =जगन्नाथ	त्+च्→सत् +चित्=सच्चित्
त्+ल्→तत् +लीन =तल्लीन	त्+ग्→भगवत+गीता=भगवद्गीता
त्+ल→उत् + लास=उल्लास	त्+भ्→भगवत्+भक्ति=भगवद्भक्ति
क्+द्→दिक्+दर्शन=दिग्दर्शन	त्+ल्→उत् +लेख =उल्लेख
अ+छ्→वृक्ष+छाया=वृक्षच्छाया	प्+म्→अप् +मय =अम्मय

६. विसर्ग सन्धि

जब स्वर अथवा व्यंजन मिलकर विसर्ग (:) को परिवर्तित करते हैं तब विसर्ग सन्धि होती है। विसर्ग सामान्यत: र्, श्, ष् तथा स् में परिवर्तित होते हैं। कहीं-कहीं विसर्ग (:) 'ओ' का रूप धारण कर लेता है, उदाहरणार्थ :

निः + रव =नीरव	निः + कलंक =निष्कलंक
निः + फल =निष्फल	निः + आश्रय=निराश्रय
निः + चल =निश्चल	यशः + गान =यशोगान
निः + सन्देह=निस्सन्देह	मनः + हर =मनोहर
निः + छल =निश्छल	मनः + रथ =मनोरथ
निः + चिन्त=निश्चिन्त	पयः + द =पयोद
निः + रोग =नीरोग	मनः + योग =मनोयोग
निः + रस =नीरस	दुः + कर =दुष्कर
निः + पाप =निष्पाप	मनः + ताप =मनस्ताप
निः + कपट =निष्कपट	अन्तः + मुख =अन्तर्मुख
निः + धन =निर्धन	बहिः + मुख =बहिर्मुख
निः + गुण =निर्गुण	नमः + कार =नमस्कार
दुः + जन =दुर्जन	पुरः + कार =पुरस्कार

अभ्यास

१. सन्धि किसे कहते हैं ? स्पष्ट कीजिए।

२. सन्धि कितने प्रकार की हैं ? प्रत्येक की परिभाषा दीजिए।

३. स्वर सन्धि कितने प्रकार की हैं ? प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

४. सन्धि करके बताइए :—

निः + आधार = ...		हिम + आलय = ...	
उत् + चरण = ...		सूर्य + उदय = ...	
कवि + ईश्वर = ...		प्रति + एक = ...	
अनु + एषण = ...		स्व + इच्छा = ...	
मनः + रञ्जन = ...		वेद + अन्त = ...	
दिव्य + आनन्द = ...		अति + उत्तम = ...	
स्व + अर्थ = ...		इति + आदि = ...	
नमः + ते = ...		उत् + शिष्ट = ...	

५. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि कीजिए। सन्धि का नाम भी दीजिए कि वह स्वर सन्धि है, व्यञ्जन सन्धि है या विसर्ग सन्धि :

(i) तत् + लीन ....
(ii) षट् + दर्शन ....
(iii) पितृ + आनन्द ....
(iv) धनुः + टंकार ....
(v) चन्द्र + उदय ....
(vi) शीत + ऋतु ....
(vii) लक्ष्मी + ईश ....
(viii) वृक्ष + छाया ....
(ix) प्रभु + आज्ञा ....

६. सन्धिविच्छेद कीजिए, सन्धि का नाम भी दीजिए :

(i) नरोत्तम ...... + ...
(ii) स्वागत ...... + ...
(iii) जगदीश ...... + ...
(iv) उद्गार ...... + ...
(v) प्रत्युपकार ...... + ...
(vi) नीरव ...... + ...
(vii) सदैव ...... + ...
(viii) राजर्षि ...... + ...
(ix) मनोहर ...... + ...
(x) तल्लीन ...... + ...

□□

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: १९ :

समास
(COMPOUND)

'समास' शब्द का अर्थ है—संक्षेप अर्थात् छोटा करना; जैसे—राजा का महल, इसे हम 'राजमहल' भी कह सकते हैं। शब्द कुछ छोटा हो गया और अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। इसी संक्षेप करने की विधि को समास कहते हैं।

परिभाषा—अर्थ में बिना परिवर्तन किए दो या अधिक परस्पर सम्बंधित शब्दों को मिलाकर एक शब्द में संक्षिप्त कर देने की विधि समास कहलाती है।

समस्त शब्द—समास करने के बाद जो एक शब्द बन जाता है, उसे समस्त पद या समस्त शब्द कहते हैं।

विग्रह—समस्त शब्द को फिर पहले जैसी अवस्था में तोड़ देना विग्रह कहलाता है; जैसे—'राजमहल' का विग्रह हुआ : **राजा का महल**।

समास के भेद—

समास के चार भेद हैं—अव्ययीभाव, तत्पुरुष, वहुव्रीहि, द्वन्द्व।

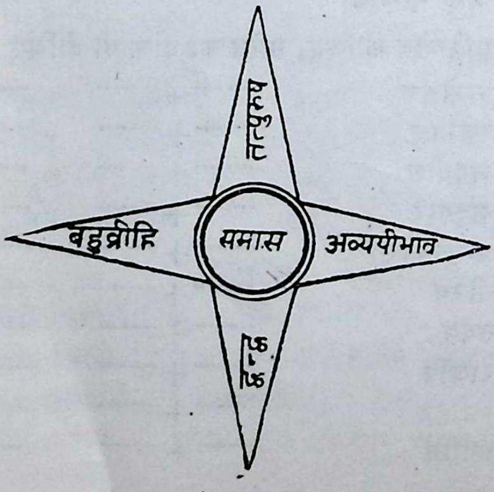

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

१. अव्ययीभाव समास—जिसमें पहला शब्द प्रधान हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं; जैसे—यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार), प्रतिदिन (दिन-दिन)।

कुछ अन्य उदाहरण—

रातों-रात	रात ही रात में
कानों-कान	एक कान से दूसरे कान
हाथों-हाथ	एक हाथ से दूसरे हाथ
हर रोज़	रोज़-रोज़
यथासामर्थ्य	सामर्थ्य के अनुसार
भर-पेट	पेट भर कर
आजीवन	जीवन तक
आमरण	मृत्यु तक

अव्ययीभाव समास की पहचान—समस्त शब्द अव्यय बन जाता है, अर्थात् उसके रूप कभी नहीं बदलते। इनके साथ विभक्ति चिह्न भी नहीं लगते।

२. तत्पुरुष समास—जिसमें दूसरा शब्द प्रधान हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं; जैसे—राजकुमार=राजा का कुमार; देशभक्ति=देश के लिए भक्ति। विग्रह में जो कारक प्रकट हो, उसी कारकवाला वह समास होता है; जैसे—

(i) कर्त्ता तत्पुरुष—इसी का दूसरा नाम कर्मधारय तत्पुरुष है। आगे इसका वर्णन आएगा।

(ii) कर्म तत्पुरुष	ग्रामगत	=गाँव को गया हुआ
	पुरस्कारप्राप्त	=पुरस्कार को प्राप्त
(iii) करण तत्पुरुष	प्रसादकृत	=प्रसाद द्वारा कृत
	प्रभुदत्त	=प्रभु द्वारा दत्त (दी हुई)
(iv) सम्प्रदान तत्पुरुष	शयनकक्ष	=शयन के लिए कक्ष (कमरा)
	हवनसामग्री	=हवन के लिए सामग्री
(v) अपादान तत्पुरुष	देशनिकाला	=देश से निकाला
	आकाशपतित	=आकाश से पतित
(vi) सम्बन्ध तत्पुरुष	सीतापति	=सीता का पति
	पवनपुत्र	=पवन का पुत्र
(vii) अधिकरण तत्पुरुष	आनन्दमग्न	=आनन्द में मग्न
	कूपपतित	=कूप में पतित

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: १६ :

समास
(COMPOUND)

'समास' शब्द का अर्थ है—संक्षेप अर्थात् छोटा करना; जैसे—राजा का महल, इसे हम 'राजमहल' भी कह सकते हैं। शब्द कुछ छोटा हो गया और अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। इसी संक्षेप करने की विधि को समास कहते हैं।

परिभाषा—अर्थ में बिना परिवर्तन किए दो या अधिक परस्पर सम्बंधित शब्दों को मिलाकर एक शब्द में संक्षिप्त कर देने की विधि समास कहलाती है।

समस्त शब्द—समास करने के बाद जो एक शब्द बन जाता है, उसे समस्त पद या समस्त शब्द कहते हैं।

विग्रह—समस्त शब्द को फिर पहले जैसी अवस्था में तोड़ देना विग्रह कहलाता है; जैसे—'राजमहल' का विग्रह हुआ : **राजा का महल**।

समास के भेद—

समास के चार भेद हैं—अव्ययीभाव, तत्पुरुष, वहुव्रीहि, द्वन्द्व।

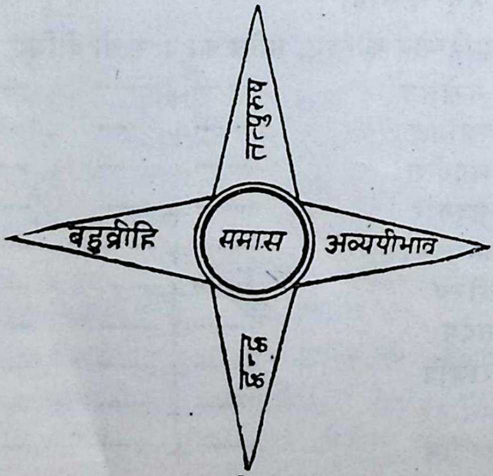

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

१. अव्ययीभाव समास—जिसमें पहला शब्द प्रधान हो उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं; जैसे—यथाशक्ति (शक्ति के अनुसार), प्रतिदिन (दिन-दिन)।

कुछ अन्य उदाहरण—

रातों-रात	रात ही रात में
कानों-कान	एक कान से दूसरे कान
हाथों-हाथ	एक हाथ से दूसरे हाथ
हर रोज़	रोज़-रोज़
यथासामर्थ्य	सामर्थ्य के अनुसार
भर-पेट	पेट भर कर
आजीवन	जीवन तक
आमरण	मृत्यु तक

अव्ययीभाव समास की पहचान—समस्त शब्द अव्यय बन जाता है, अर्थात् उसके रूप कभी नहीं बदलते। इनके साथ विभक्ति चिह्न भी नहीं लगते।

२. तत्पुरुष समास—जिसमें दूसरा शब्द प्रधान हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं; जैसे—राजकुमार=राजा का कुमार; देशभक्ति=देश के लिए भक्ति। विग्रह में जो कारक प्रकट हो, उसी कारकवाला वह समास होता है; जैसे—

(i) **कर्त्ता तत्पुरुष**—इसी का दूसरा नाम कर्मधारय तत्पुरुष है। आगे इसका वर्णन आएगा।

(ii) **कर्म तत्पुरुष**	ग्रामगत	=गाँव को गया हुआ
	पुरस्कारप्राप्त	=पुरस्कार को प्राप्त
(iii) **करण तत्पुरुष**	प्रसादकृत	=प्रसाद द्वारा कृत
	प्रभुदत्त	=प्रभु द्वारा दत्त (दी हुई)
(iv) **सम्प्रदान तत्पुरुष**	शयनकक्ष	=शयन के लिए कक्ष (कमरा)
	हवनसामग्री	=हवन के लिए सामग्री
(v) **अपादान तत्पुरुष**	देशनिकाला	=देश से निकाला
	आकाशपतित	=आकाश से पतित
(vi) **सम्बन्ध तत्पुरुष**	सीतापति	=सीता का पति
	पवनपुत्र	=पवन का पुत्र
(vii) **अधिकरण तत्पुरुष**	आनन्दमग्न	=आनन्द में मग्न
	कूपपतित	=कूप में पतित

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तत्पुरुष के तीन उपभेद और भी हैं—

(क) **नञ् समास**—जहाँ निषेध के अर्थ में 'अ' या 'अन्' के साथ समास हो; जैसे—असभ्य=न सभ्य; अनन्त=न अन्त; अनादि=न आदि; असम्भव=न सम्भव।

(ख) **द्विगु समास**—जहाँ पहला पद संख्यावाची हो और समस्त पद समूहवाचक बन जाए; जैसे—

त्रिलोकी	तीन लोकों का समूह
चौमासा	चार मासों का समूह
नवरात्र	नौ रात्रियों का समूह
शताब्दी	सौ अब्दों (सालों) का समूह

(ग) **कर्मधारय समास**—जहाँ विशेषण-विशेष्य या उपमान-उपमेय शब्दों में समास हो; जैसे—

विशेषण-विशेष्य—

नीलकमल	नीला कमल
पीताम्बर	पीला कपड़ा
महाराज	महान राजा
सज्जन	सत् (अच्छा) जन

उपमान-उपमेय—

चन्द्रमुख	चन्द्रमा के समान मुख
नरसिंह	नरों में सिंह के समान
करकमल	कमल के समान कर (हाथ)
चरणकमल	कमल के समान चरण

३. **द्वन्द्व समास**—जिसमें दोनों पद प्रधान हों, उसे द्वन्द्व समास कहते हैं; जैसे—

रामलक्ष्मण	राम और लक्ष्मण
सुख-दुःख	सुख और दुःख
पाप-पुण्य	पाप और पुण्य
दिन-रात	दिन और रात
सीता-सावित्री	सीता और सावित्री
सीता-राम	सीता और राम
राधा-कृष्ण	राधा और कृष्ण

४. **बहुव्रीहि समास**—जिसमें दोनों पद प्रधान न हों, बल्कि समस्त शब्द किसी और ही शब्द का वाचक हो; जैसे—दशानन। यहाँ 'दश' और 'आनन' प्रधान नहीं हैं बल्कि समस्त शब्द रावण का वाचक है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अन्य उदाहरण—

धर्मात्मा	धर्म में आत्मावाला
दुरात्मा	बुरी आत्मावाला
पीताम्बर	पीले कपड़ेवाला
दीर्घबाहु	दीर्घ बाहुवाला
दशमुख	दस मुखवाला
लम्बोदर	लम्बे उदरवाला
चन्द्रमुख	चन्द्रमा के समान मुखवाला

विशेष—

जैसा विग्रह होगा वैसा ही समास होगा; जैसे,
पीताम्बर=पीले कपड़ेवाला (बहुव्रीहि)
पीताम्बर=पीला कपड़ा (कर्मधारय)
चन्द्रमुख=चन्द्रमा जसा मुख (कर्मधारय)
चन्द्रमुख=चन्द्रमा जैसे मुखवाला (बहुव्रीहि)

सन्धि और समास में अन्तर—

(i) सन्धि वर्णों में होती है, समास शब्दों में होता है।

(ii) सन्धि में विभक्ति या शब्द का लोप नहीं होता परन्तु समास में विभक्ति या शब्द का लोप भी हो सकता है।

(iii) एक ही शब्द सन्धि और समास शब्द हो सकता है।

अभ्यास

१. निम्नलिखित की सोदाहरण परिभाषा दीजिए—
समास, समस्त पद, विग्रह।

२. समास के भेदों की उदाहरण सहित परिभाषा दीजिए।

३. तत्पुरुष के कौन-कौन से भेद हैं ?

४. निम्नलिखित का विग्रह कीजिए और समास का नाम भी बताइए—

(i) अयोध्यापति	....	....
(ii) संस्कृत-सुधा	....	....
(iii) देवकन्या	....	....
(iv) सुकन्या	....	....
(v) शशिप्रभा	....	....
(vi) रामायण-महाभारत	....	....
(vii) लड़के-लड़कियाँ	....	....
(viii) निर्मूल	....	....
(ix) आकाश-पाताल	....	....
(x) यथाविधि	....	....

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: २० :

पद-परिचय

(PARSING)

'पद-परिचय' के नाम से ही इसका काम स्पष्ट है, अर्थात् पद् (शब्द) का परिचय। जैसे किसी व्यक्ति का परिचय कराते समय हम उसका नाम, काम, धाम आदि बताते हैं, उसी प्रकार शब्दों का परिचय भी दिया जा सकता है। इस परिचय में शब्दों का व्याकरण की दृष्टि से क्या स्थान है, यही बताना अभीष्ट होता है और इसे ही पद-परिचय या शब्द-बोध कहते हैं।

परिभाषा—वाक्य में आए हुए प्रत्येक शब्द का व्याकरण की दृष्टि से पूर्ण परिचय पद-परिचय कहलाता है।

प्रयोग की दृष्टि से शब्द आठ प्रकार के होते हैं—संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि, जैसा कि हम पहले पढ़ चुके हैं। भाषा में आया प्रत्येक शब्द इन्हीं में से कोई-न-कोई होता है। प्रत्येक शब्द के परिचय में क्या-क्या देना चाहिए, इसका सार नीचे दे दिया गया है—

१. **संज्ञा**—भेद, लिंग, वचन, कारक, क्रिया या अन्य शब्दों से सम्बन्ध।

२. **सर्वनाम**—भेद, पुरुष, लिंग, वचन, कारक, क्रिया या अन्य शब्दों से सम्बन्ध। किस संज्ञा के स्थान पर आया है (यदि ज्ञात हो)!

३. **विशेषण**—भेद, लिंग, वचन, अवस्था, विशेष्य।

४. **क्रिया**—काल, भेद, लिंग, वचन, पुरुष, सकर्मक या अकर्मक, वाच्य, कर्त्ता, कर्म।

५. **क्रिया विशेषण**—भेद, विशेष्य, क्रिया।

६. **सम्बन्ध-बोधक**—भेद, सम्बन्धित शब्द।

७. **समुच्चय-बोधक**—भेद, योजित शब्द।

८. **विस्मयादिबोधक**—भेद।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इसी को स्पष्ट करने के लिए नीचे कुछ उदाहरण दिए जाते हैं—

१. मैं पिछले वर्ष उसे यूरोप में मिला था।

मैं—सर्वनाम, पुरुषवाचक, उत्तमपुरुष, पुँल्लिग, एकवचन, कर्त्ता कारक, 'मिला था' क्रिया का कर्त्ता।

पिछले—विशेषण, गुणवाचक विशेषण, पुँल्लिग, एकवचन, मूलावस्था, विशेष्य—वर्ष।

वर्ष—संज्ञा, जातिवाचक, पुँल्लिग, एकवचन, अधिकरण कारक, 'मिला था' क्रिया का समय।

उसे—सर्वनाम, पुरुषवाचक, अन्यपुरुष, पुँल्लिग या स्त्रीलिंग (दोनों सम्भव हैं), एकवचन, कर्म कारक, 'मिला था' क्रिया का कर्म।

यूरोप में—संज्ञा, व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुँल्लिग, एकवचन, अधिकरण कारक, 'मिला था' क्रिया का स्थान।

मिला था—क्रिया, भूतकाल, पूर्णभूत, पुँल्लिग, एकवचन, उत्तमपुरुष, सकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्त्ता—मैं; कर्म—उसे।

२. बच्चे को देखते ही माँ बोली, रे तू यहाँ कैसे !

बच्चे को—संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, पुँल्लिग, एकवचन, कर्म कारक 'बोली' क्रिया का कर्म।

देखते—क्रिया, तात्कालिक क्रिया, सकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्त्ता—माँ, कर्म—बच्चा।

ही—क्रिया विशेषण, रीतिवाचक।

माँ—संज्ञा, जातिवाचक संज्ञा, स्त्रीलिंग, एकवचन, कर्त्ता कारक, 'बोली' क्रिया का कर्त्ता।

बोली—क्रिया, भूतकाल, सामान्यभूत, स्त्रीलिंग, एकवचन, अन्यपुरुष, सकर्मक, कर्तृवाच्य, कर्त्ता—माँ; कर्म—बच्चा।

रे—द्योतक, आश्चर्य का सूचक।

तू—सर्वनाम, पुरुषवाचक, मध्यमपुरुष, पुँल्लिग, एकवचन, कर्त्ता कारक, (है) क्रिया का कर्त्ता, बच्चे के लिए प्रयुक्त सर्वनाम।

यहाँ—क्रिया विशेषण, स्थानवाचक।

कैसे—क्रिया विशेषण, रीतिवाचक।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सम्पूर्ण व्याकरण का ज्ञान प्राप्त कर लेने पर ही पद-परिचय कर पाना सम्भव है। इसलिए पद-परिचय का अभ्यास करने से सारे व्याकरण की आवृत्ति हो जाती है।

अभ्यास

१. पद-परिचय किसे कहते हैं। उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

२. संज्ञा सर्वनाम, क्रिया तथा विस्मयादिबोधक शब्दों के पद-परिचय में क्या-क्या बताना अपेक्षित होता है ?

३. निम्नलिखित वाक्यों में आए शब्दों का पद-परिचय दीजिए—

(क) जल्दी-जल्दी चलो, नहीं तो गाड़ी निकल जाएगी।

(ख) शाबाश वीरो ! बढ़े चलो !

(ग) भारत हमारी पवित्र मातृभूमि है।

(घ) सफलता के लिए दृढ़ निश्चय चाहिए।

(ङ) हमारे उद्देश्य महान हों।

४. उत्पत्ति की दृष्टि से शब्द के कितने भेद हैं ? देशज शब्दों के कुछ उदाहरण दीजिए।

५. व्युत्पत्ति के विचार से शब्द के कितने भेद हैं ? योगरूढ़ शब्द बहुव्रीहि समास होते हैं। क्या आप इस कथन से सहमत हैं ? उदाहरण सहित बताइए।

६. राजपुत्र सामासिक शब्द है, सन्धि-शब्द नहीं। विद्यालय सन्धि शब्द भी है और सामासिक भी। इन दोनों कोटि के चार-चार शब्द बताइए।

७. वचन एवं कारक से प्रभावित मैं शब्द के विकारी रूप लिखिए।

८. कुछ शब्द सर्वनाम (अनिश्चय वाचक) भी है और विशेषण (अनिश्चित संख्या वाचक) भी। इस कथन की सत्यता सिद्ध करने के लिए दोनों का एक-एक उदाहरण दीजिए।

९. पाँच तद्भव शब्द तथा उनके तत्सम रूप बताइए।

१०. क्रिया विशेषण शब्द विकारी नहीं होते। इस तथ्य का समर्थन सोदाहरण कीजिए।

□□

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: २१ :

उपयोगी शब्द-संग्रह

इस अध्याय में अनेक प्रकार के शब्दों का संग्रह किया गया है; जैसे—अनेक शब्दों के लिए एकशब्द, विलोम, पर्यायवाची, एकार्थक प्रतीत होनेवाले, समानदर्शी शब्द। इनके अतिरिक्त कुछ पशु-पक्षियों की बोलियों के शब्द भी दे दिए गए हैं। विद्यार्थी प्रायः इन बोलियों से अनभिज्ञ होते हैं। इन सभी का सुचारु रूप से अभ्यास करने पर भाषा सरल और सुन्दर बनाने में सहायता मिलती है।

(१) अनेक शब्दों के लिए एक शब्द
(ONE WORD SUBSTITUTION)

१. जो ईश्वर में विश्वास रखता हो	आस्तिक
२. जो ईश्वर में विश्वास न रखता हो	नास्तिक
३. जिसका भाग्य खराब हो	अभागा
४. अच्छे भाग्यवाला	भाग्यवान्
५. जहाँ अनाथ रहते हों	अनाथालय
६. जो पढ़ा-लिखा हो	शिक्षित
७. जो पढ़ा-लिखा न हो	अशिक्षित, अनपढ़
८. जो कभी न मरे	अमर
९. जो काम कठिन हो	दुष्कर
१०. जिसे देखा न जा सके	अदृश्य
११. जिसका अन्त न हो	अनन्त
१२. जिसमें धैर्य न हो	अधीर
१३. दिन में एक बार होनेवाला	दैनिक
१४. सप्ताह में एक बार होनेवाला	साप्ताहिक
१५. पन्द्रह दिन में एक बार होनेवाला	पाक्षिक
१६. मास में एक बार होनेवाला	मासिक
१७. तीन महीने में एक बार होनेवाला	त्रैमासिक
१८. वर्ष में एक बार होनेवाला	वार्षिक
१९. जिसके बराबर कोई दूसरा न हो	अद्वितीय
२०. जो सब कुछ जानता हो	सर्वज्ञ

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

२१. जिसका आकार हो	साकार
२२. जिसका कोई आकार न हो	निराकार
२३. जिसे अनुभव हो	अनुभवी
२४. जिस भूमि में खूब उपज हो	उपजाऊ, उर्वरा
२५. जिस भूमि में उपज न हो	ऊसर, बंजर
२६. जो शक्तिहीन हो	अशक्त
२७. जो किसी के किए हुए उपकार को माने	कृतज्ञ
२८. जो किसी के किए उपकार को न माने	कृतघ्न
२९. उच्च कुलवाला	कुलीन
३०. जो बहुत अधिक काम करता हो	कर्मठ
३१. काम से जी चुरानेवाला	कामचोर
३२. कठिनाई से मिलनेवाली	दुर्लभ
३३. जानने की इच्छा	जिज्ञासा
३४. सरलता से समझ में आनेवाला	सुबोध
३५. जहाँ जाने में कठिनाई हो	दुर्गम
३६. दूर की सोचनेवाला	दूरदर्शी
३७. लज्जा न करनेवाला	निर्लज्ज
३८. जिसमें रस न हो	नीरस
३९. जिसको भय न हो	निर्भय
४०. जिसमें बल न हो	निर्बल
४१. जो किसी का पक्ष न ले	निष्पक्ष
४२. दूसरों का उपकार करनेवाला	परोपकारी
४३. सच बोलनेवाला	सत्यवादी
४४. जो बात पहले हो चुकी हो	भूतपूर्व
४५. जिसका पति मर गया हो	विधवा
४६. विष्णु की भक्ति करनेवाला	वैष्णव
४७. शिव की भक्ति करनेवाला	शैव
४८. जो परीक्षा में पास हुआ हो	उत्तीर्ण
४९. जो परीक्षा में पास न हुआ हो	अनुत्तीर्ण
५०. जिसका रूप अच्छा न हो	कुरूप
५१. जिसे दिखाई न देता हो	अन्धा, प्रज्ञाचक्षु
५२. दूसरे के मन को जाननेवाला	अन्तर्यामी
५३. जिसका आचरण अच्छा हो	सदाचारी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

५४.	जिसका आचरण अच्छा न हो	दुराचारी
५५.	केवल फलों पर निर्वाह करनेवाला	फलाहारी
५६.	माँस खानेवाला	माँसाहारी
५७.	माँस न खानेवाला	शाकाहारी
५८.	जिस पर विश्वास न किया जा सके	अविश्वसनीय
५९.	जिसका वर्णन कठिन हो	अवर्णनीय
६०.	जिसकी कोई कीमत न हो	अमूल्य
६१.	जो पृथ्वी पर रहता हो	स्थलचर
६२.	जो जल में रहता हो	जलचर
६३.	जो वन में रहता हो	वनचर
६४.	जो बात पहले न हुई हो	अभूतपूर्व
६५.	जिसकी सहन-शक्ति अच्छी हो	सहिष्णु
६६.	जो सिद्ध न हो सके	असाध्य
६७.	वेतन के बिना काम करनेवाला	अवैतनिक
६८.	जिसकी उपमा न हो सके	अनुपम
६९.	जिसकी गणना न हो	असंख्य
७०.	जो उत्तर न दे सके	निरुत्तर
७१.	जो इस लोक की बात न हो	लौकिक
७२.	जो इस लोक के बाहर की बात हो	अलौकिक
७३.	दूसरों से ईर्ष्या करनेवाला	ईर्ष्यालु
७४.	जिसका सम्बन्ध पश्चिम से हो	पाश्चात्य
७५.	जिसके नीचे रेखा हो	रेखांकित

---

(२) विपरीतार्थक (विलोम) शब्द

(ANTONYMS)

शब्द	विपरीत शब्द	शब्द	विपरीत शब्द
अर्थ	अनर्थ	असन्तोष	सन्तोष
अपना	पराया	आदि	अनादि, अन्त
अन्धकार	प्रकाश	आदान	प्रदान
अनुकूल	प्रतिकूल	आलस्य	स्फूर्ति
अभिमान	नम्रता	इच्छित	अनिच्छित
आरम्भ	अन्त	उपकार	अपकार

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शब्द	विपरीत शब्द	शब्द	विपरीत शब्द
नवीन	प्राचीन	उन्नति	अवनति
प्रेम	घृणा	उत्तीर्ण	अनुत्तीर्ण
वीर	कायर	उचित	अनुचित
उपस्थित	अनुपस्थित	विष	अमृत
उत्थान	पतन	विश्वास	सन्देह
कुटिल	सरल	जय	पराजय
कटु	मधुर	जन्म	मृत्यु
कृतज्ञ	कृतघ्न	जड़	चेतन
क्रय	विक्रय	दयालु	निर्दय
क्रुद्ध	शान्त	त्यागी	स्वार्थी
कपट	निष्कपट	जीवन	मरण
गुरु	लघु	तम	तेज
गुण	अवगुण	नूतन	पुरातन
चिन्तित	निश्चिन्त	धनी	निर्धन
चतुर	मूर्ख	निन्दनीय	प्रशंसनीय
चल	अचल	निकट	दूर
चंचल	निश्चल	दानी	कृपण
कोमल	कठोर	वीर	कायर
दक्षिण	वाम	विलास	तपस्या
पुरस्कार	तिरस्कार	विरोध	समर्थन
पंडित	मूर्ख	शयन	जागरण
पतिव्रता	कुलटा	स्वदेश	विदेश
पूर्ण	अपूर्ण	स्वतन्त्र	परतन्त्र
प्रवृत्ति	निवृत्ति	सरल	कुटिल
पवित्र	अपवित्र	सन्धि	विग्रह
न्याय	अन्याय	सार्थक	निरर्थक
निन्दा	स्तुति, प्रशंसा	सज्जन	दुर्जन
प्रसन्न	अप्रसन्न, क्रुद्ध	सदुपयोग	दुरुपयोग
बन्धन	मुक्ति	क्षुद्र	महान
रक्षक	भक्षक	ज्ञान	अज्ञान
लाभ	हानि	नश्वर	अनश्वर

विशेष : दिन-रात, सुबह-शाम, आज-कल आदि शब्द युग्म शब्द हैं, इनमें वैपरीत्य नहीं है ।

□□

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(३) पर्यायवाची (समानार्थक) शब्द

(SYNONYMS)

पानी—जल, नीर, सलिल, वारि, अम्बु ।
बादल—जलद, जलधर, नीरद, अम्बुद, मेघ ।
कमल—जलज, नीरज, अम्वुज, पंकज, अरविन्द ।
समुद्र—जलधि, नीरधि, अम्बुधि, सागर, सिन्धु ।
सूर्य—दिनेश, दिनकर, भानु, रवि, सविता ।
चन्द्रमा—विधु, इन्दु, निशाकर, निशापति, नक्षत्रपति ।
पृथ्वी—पृथिवी, भू, धरा, वसुधा, मही, भूमि ।
पर्वत—भूधर, महीधर, नग, अचल, पहाड़ ।
अग्नि—आग, अनल, पावक, वह्नि, वैश्वानर ।
आकाश—गगन, नभ, अम्बर, व्योम, अन्तरिक्ष ।
स्त्री—महिला, औरत, नारी, वनिता, तिया ।
फूल—पुष्प, प्रसून, कुसुम, सुमन ।
रात्रि—रात, निशा, यामिनी, रजनी, शर्वरी ।
पुत्र—वेटा, लड़का, तनुज, आत्मज, तनय ।
हवा—वायु, अनिल, पवन, मरुत् ।
शत्रु—अरि, दुश्मन, रिपु, वैरी, विपक्षी ।
सेना—दल, सैन्य, चमू, अनीकिनी, वाहिनी ।
पति—स्वामी, नाथ, वर, भर्ता, दयित ।
शरीर—देह, तनु, तन, कलेवर ।
गंगा—भागीरथी, जाह्नवी, मन्दाकिनी, सुरनदी, सुरसरी
झण्डा—ध्वज, ध्वजा, पताका, वैजयन्ती ।
अतिथि—अभ्यागत, मेहमान, आगन्तुक ।

———

(४) एकार्थक प्रतीत होनेवाले शब्द

(WORDS APPARENTLY SIMILAR IN MEANING)

अस्त्र, शस्त्र	अस्त्र—जो हथियार दूर से फेंका जाए शस्त्र—जिस हथियार को हाथ में लेकर लड़ा जाए

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शोक, खेद	शोक—प्रिय व्यक्ति या वस्तु के खोने पर खेद—किसी से अनुचित व्यवहार पर
ईर्ष्या, स्पर्धा द्वेष	ईर्ष्या—दूसरे की उन्नति न सहना स्पर्धा—दूसरे की उन्नति देखकर स्वयं उन्नति करने का प्रयत्न करना द्वेष—शत्रुता-भाव
कृपा, दया	कृपा—दीन व्यक्ति की सहायता दया—किसी से भी दुःख में सहानुभूति दिखाना
पाप, अपराध	पाप—धर्म के नियम तोड़ना अपराध—राजकीय नियम तोड़ना
असभ्य, उद्दण्ड	असभ्य—जो व्यवहार करना नहीं जानता उद्दण्ड—मनचला व्यक्ति
प्रेम, स्नेह वात्सल्य	प्रेम—'प्यार' के लिए एक सामान्य शब्द है; प्रेम सभी का हो सकता है भाई-भाई का, पति-पत्नी का, छोटे-बड़े का स्नेह—छोटों के लिए प्रेम वात्सल्य—सन्तान के प्रति प्रेम

———

(५) समानदर्शी शब्द

(PAIRS OF SIMILAR WORDS DISTINGUISHED)

हिन्दी में कुछ ऐसे शब्द प्रयुक्त होते हैं जिसका रूप देखने में समान लगता है पर उनके अर्थ में भिन्नता होती है। नीचे कुछ ऐसे ही शब्द दिए गए हैं। विद्यार्थियों को इन शब्द-युग्मों का अन्तर भली-भाँति समझ लेना चाहिए।

उदाहरण—कपट=छल—धार्मिक व्यक्ति कपट से दूर रहते हैं।

कपाट=किवाड़—रात्रि में घर में कपाट बन्द करके सोना चाहिए।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इसी प्रकार—

१. अपेक्षा =बजाय, आशा
उपेक्षा =उदासीनता, अनादर

३. कुल =वंश
कूल =किनारा

५. प्रमाण =सबूत
परिमाण=मात्रा

७. निर्वाण =मुक्ति
निर्माण =रचना

९. प्रसाद =कृपा
प्रासाद =महल

११. लक्ष =लाख की संख्या
लक्ष्य =ध्येय, उद्देश्य

१३. चर्म =चमड़ा
चरम =अन्तिम

२. कटक =सेना
कंटक =काँटा

४. गृह =घर
ग्रह =नक्षत्र

६. तुरंग =घोड़ा
तरंग =लहर

८. प्रवाह =बहाव
प्रभाव =असर

१०. प्रणाम =नमस्कार
परिणाम=नतीजा

१२. वसन =कपड़ा
व्यसन =शौक, बुरी आदत

१४. मात्र =केवल
मातृ =माता

(९) पशु-पक्षियों की बोलियाँ
(SOUNDS OF ANIMALS AND BIRDS)

कोयल —कूकना
कबूतर —गुटर-गूँ करना
चिड़िया —चहचहाना
पपीहा —पिय-पिय करना
मोर —कुहकना
तोता —टें-टें करना
ऊँट —बलबलाना
गाय —रँभाना

भैंस —डकराना
बकरी —मिमियाना
चूहा —चूं-चूं करना
मेंढक —टर्राना
मक्खी —भिनभिनाना
घोड़ा —हिनहिनाना
हाथी —चिंघाड़ना
साँप —फुँफकारना

कुछ जड़ पदार्थों की विशेष ध्वनियाँ या क्रियाएँ
(Sounds or Functions of Inanimate Objects)

जीभ —लपलपाना
दाँत —कटकटाना
दिल —धुक-धुक करना, धड़कना
आँसू —छलक आना, छल-छलाना

पाँव —पटकना
नाव —डगमगाना
बादल —गरजना
तारे —जगमगाना
पंख —फड़फड़ाना
घड़ी —टिक्-टिक् करना

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(७) कुछ तद्भव-तत्सम शब्द

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
अजान	अज्ञान	चाँद	चन्द्र
अचरज	आश्चर्य	चैत	चैत्र
आम	आम्र	छाता	छत्र
आसरा	आश्रय	जीभ	जिह्वा
आग	अग्नि	जमना	यमुना
आस	आशा	जेठ	ज्येष्ठ
आठ	अष्ट	जाला	जाल
उँगली	अँगुली	झट	झटिति
ऊँट	उष्ट्र	कान	कर्ण
उजला	उज्ज्वल	ठाकुर	ठक्कुर
कबूतर	कपोत	डाह	दाह
कोयल	कोकिल	ताँबा	ताम्र
काम	कर्म	तीतर	तीत्तिर
कोढ़	कुष्ठ	तीखा	तीक्ष्ण
कुम्हार	कुम्भकार	दो	द्वौ
कन्धा	स्कन्ध	दुख	दु:ख
खाट	खट्वा	दाँत	दन्त
खत्री	क्षत्रिय	दस	दश
खीर	क्षीर	दायाँ	दक्षिण
खेत	क्षेत्र	धुआँ	धूम
गाँव	ग्राम	नंगा	नग्न
गिनना	गणना	नींद	निद्रा
गरजना	गर्जन	नाखून	नख
गीध	गिद्ध	नया	नव
हाथ	हस्त	नारियल	नारिकेल
घर	गृह	पत्ता	पत्र
घाट	घट्ट	पका (हुआ)	पक्व
घी	घृत	पंख	पक्ष
चोंच	चंचु	पाँच	पञ्च

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तद्भव	तत्सम	तद्भव	तत्सम
पानी	पानीय	मोर	मयूर
पिंजरा	पंजर	मैला	मलिन
पूरव	पूर्व	मौत	मृत्यु
पुराना	पुराण	रहट	अरघट्ट
पूनम	पूर्णिमा	लाज	लज्जा
फागुन	फाल्गुन	लहर	लहरि
बाँस	वंश	लाख (एक धातु)	लाक्षा
बाँझ	बन्ध्या	लोहा	लौह
बाँह	बाहु	सात	सप्त
भगत	भक्त	सुहाग	सौभाग्य
भौंकना	भषण	सूना	शून्य
भौं	भ्रू	साँवला	श्यामल
मगर (मच्छ)	मकर	बायाँ	वाम

---

(८) कुछ सामान्य अशुद्धियाँ

(SOME COMMON ERRORS)

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
चिन्ह	चिह्न	नदि—नदीयाँ	नदी—नदियाँ
मध्यान्ह	मध्याह्न	स्त्रि—स्त्रीयाँ	स्त्री—स्त्रियाँ
घन्टी	घण्टी	ब्राह्मन	ब्राह्मण
पुन्य	पुण्य	दृष्य	दृश्य
लक्षमण	लक्ष्मण	पुरान	पुराण
श्रेष्ट	श्रेष्ठ	सतत्	सतत
कवियत्री	कवयित्री	इतिहासिक	ऐतिहासिक
श्रीमति	श्रीमती	गुरू	गुरु
हिन्दु	हिन्दू	कुरुप	कुरूप
शक्ति	शक्ति	चरम्	चरम
युधिष्टिर	युधिष्ठिर	सहस्त्र	सहस्र
रावन	रावण	स्थित	स्थित

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(९) अंग्रेंजी-हिन्दी शब्द-कोष
(ENGLISH-HINDI EQUIVALENTS)

पिछली शताब्दी से अंग्रेज़ी भाषा का भारत में काफ़ी बोल-बाला रहा है। हमारी दैनिक बोलचाल की भाषा में भी अंग्रेज़ी के काफ़ी शब्द होते हैं। इसके दो कारण हैं—

(i) अंग्रेज़ी बोलने की आदत

(ii) हिन्दी शब्दों का अज्ञान

अंग्रेज़ी और हिन्दी भाषाओं के अच्छे ज्ञान के लिए यह आवश्यक है कि या तो हम शुद्ध अंग्रेज़ी बोलें या शुद्ध हिन्दी। खिचड़ी भाषा प्रभावशाली नहीं होती और इस प्रकार किसी भी भाषा पर हमारा पूर्ण अधिकार नहीं रह जाता।

इसलिए यहाँ दैनिक प्रयोग के कुछ अंग्रेज़ी शब्दों के पर्याय दिए जा रहे हैं—

Account	लेखा	Condition	शर्त
Accused	अभियुक्त	Candidate	उम्मीदवार
Act	अधिनियम	Chief Minister	मुख्य-मन्त्री
Adult	प्रौढ़	Chief Justice	मुख्य-न्यायाधीश
Administration	शासन	Corporation	निगम
Advice	सलाह	Crime	अपराध
Advocate	अधिवक्ता	Climax	चरम सीमा
Agent	अभिकर्त्ता	Column	स्तम्भ
Algebra	बीजगणित	Court	न्यायालय
Aeroplane	वायुयान	Citizen	नागरिक
Amendment	संशोधन	Committee	समिति
Atom bomb	अणुबम	Civilisation	सभ्यता
Application	आवेदन-पत्र	Credit	उधार
Approval	अनुमोदन	Currency	मुद्रा
Ambassador	राजदूत	Degree	उपाधि
Appointment	नियुक्ति	Democracy	प्रजातन्त्र
Bill	विधेयक	Discipline	अनुशासन
Broadcasting	प्रसारण	Definition	परिभाषा
Business	व्यापार	Department	विभाग
Commission	आयोग	District	ज़िला

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Document	लेख्य	National	राष्ट्रीय
Duty	कर्त्तव्य	Navy	नौ-सेना
Discovery	आविष्कार	Order	आदेश
Diplomacy	कूटनीति	Ordinance	अध्यादेश
Election	चुनाव, निर्वाचन	Opposition	विरोध
Experiment	प्रयोग	Paragraph	अनुच्छेद
Evidence	साक्ष्य	Principle	सिद्धान्त
Finance Minister	वित्तमन्त्री	Passport	पार-पत्र
Fire brigade	दमकल	Procession	जलूस
Fare	भाड़ा	Proposal	प्रस्ताव
Gazette	सूचना-पत्र	Post-mortem	शव-परीक्षा
Government	सरकार	Programme	कार्यक्रम
Grant	अनुदान	Qualification	योग्यता
Guardian	संरक्षक	Republic	गणतन्त्र
Hobby	रुचि	Registered	पंजीकृत
Habit	आदत	Resignation	त्यागपत्र
High Court	उच्च-न्यायालय	Recruitment	भर्ती
Honorary	अवैतनिक	Security	प्रतिभूति
Infantry	पद-सेना	Sentence	वाक्य
Income-tax	आयकर	Syllabus	पाठ्यक्रम
Institution	संस्था	Time-table	समय-सारिणी
Judge	न्यायाधीश	Traffic	यातायात
Judgment	न्याय, निर्णय	Television	दूरदर्शन
Knock	खटखटाना	Telephone	दूरभाष
Law	विधि	Training	प्रशिक्षण
Legislation	विधान	Transfer	स्थानान्तरण
Laboratory	प्रयोगशाला	Unanimously	सर्वसम्मति से
Liability	उत्तरदायित्व	U.N.O.	संयुक्त राष्ट्र संघ
Literature	साहित्य	Valid	मान्य, वैध
Majority	बहुमत	Village	गाँव
Minority	अल्पमत	Vegetarian	शाकाहारी
Manager	प्रबन्धक	Vacation	अवकाश
Miscellaneous	विविध	Vocation	व्यवसाय

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Volunteer	स्वयंसेवक	War time	युद्ध काल
Wages	मजदूरी	Will	वसीयत

अभ्यास

१. निम्नलिखित अनेक शब्दों के समूह के लिए एक शब्द बताइए—

(i) दस मुखोंवाला ....
(ii) जिसमें जान न हो ....
(iii) अचानक आ पड़नेवाली (बात) ....
(iv) पन्द्रह दिन का समूह ....
(v) जो पढ़ने लायक हो ....
(vi) जो पढ़ने लायक न हो ....
(vii) सब तरफ़ की ....
(viii) जो ग्रहण करने योग्य न हो ....

२. सही विलोमार्थक शब्द पर ✓ निशान लगाइए—

(i) जय	विजय, पराजय
(ii) आगामी	निरागामी, गत
(iii) अल्प	थोड़ा, बहुत
(iv) कटु	कटुता, मधुर
(v) आशा	निराशा, अनाशा

३. शब्द-कोष की सहायता से निम्नलिखित शब्दों के दो-दो समानार्थक बताइए—

(i) वृक्ष	....	....
(ii) नौकर	....	....
(iii) स्थान	....	....
(iv) नदी	....	....
(v) रास्ता	....	....
(vi) किसान	....	....
(vii) शीशा	....	....
(viii) मृत्यु	....	....
(ix) मुक्ति	....	....
(x) इन्द्र	....	....

४. निम्नलिखित युग्मों में अर्थ-भेद स्पष्ट कीजिए—

(i) अत्याचार—दुराचार (ii) आवास—प्रवास
(iii) अभिमान—स्वाभिमान (iv) दुःख—खेद
(v) भक्ति—श्रद्धा (vi) प्रेम-स्नेह

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

५. ध्वनि-सूचक शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(i) दाँत..........हैं।
(ii) गाय..........है।
(iii) कोयल..........है।
(iv) पक्षी पंख.... – ....है।
(v) भँवर में नाव..........है।
(vi) बरसात में मेढक – .... – हैं।
(vii) खिलाड़ियों को मैदान में आते देख लोगों ने ताली........—।
(viii) सुबह-सवेरे मुर्गे देते..........हैं।

६. तत्सम शब्द बताइए—

(i) पंख	.... —	(vi) पीठ	.... —
(ii) सोना	.... ——	(vii) चाँद	.... —— ....
(iii) हरा	—————	(viii) मौत	....
(iv) सूरज	.... —	(ix) कपड़ा	.... —— ....
(v) जम्भाई	....	(x) बाघ	....

७. नीचे लिखे अंग्रेज़ी शब्दों के हिन्दी पर्याय दीजिए—

Bill	.... —
Ambassador	....
Jadge	....
Principle	....
W. H. O.	....
Municipality	—— ....
Police Station	....
Interval	.... —

८. इनमें अन्तर बताइए—

घर—मकान, दौड़ना—भागना, जागना—उठना

९. पाँच युग्म शब्द लिखिए; जैसे, आकाश-पाताल।

१०. इनके शुद्ध रूप लिखिए—

अगसत्य (एक मुनि का नाम)
ज्योतस्ना (चाँदनी)
भर्तस्ना (फटकार)
उज्जवल (चमकीला)

□□

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: २२ :

विराम-चिह्न

(PUNCTUATION)

बोलते समय हम सब कुछ एक ही गति से नहीं बोलते जाते। एक वाक्य के बीच में कहीं-कहीं कुछ क्षणों के लिए रुकते हैं और इसी प्रकार एक वाक्य के समाप्त होने पर भी रुकना पड़ता है। इसी प्रकार के रुकने को विराम कहते हैं। इन्हीं विरामों को प्रकट करने के लिए हम जिन चिह्नों को लिखते हैं, उन्हें **विराम-चिह्न** कहते हैं।

हिन्दी लिखते समय जिन विराम-चिह्नों का साधारणतः प्रयोग होता है, वे इस प्रकार हैं—

१. **अल्प-विराम** (Comma) (,)—समान महत्त्ववाले शब्दों के इकट्ठा आने पर उन्हें अलग-अलग करने के लिए इनका प्रयोग होता है; जैसे—राम, श्याम और घनश्याम। पलंग, जो मैंने बताया था, ले जाओ।

२. **अर्द्ध-विराम** (Semi-Colon) (;)—जहाँ अल्प-विराम की तुलना में कुछ अधिक रुकना पड़ता है।

३. **अपूर्ण-विराम** (Sign of Following) (:—)जहाँ किसी बात का उत्तर या उदाहरण अगली पंक्ति में देना हो।

४. **पूर्ण-विराम** (Full-Stop) (।)—वाक्य पूरा होने पर इसका प्रयोग होता है।

५. **प्रश्नवाचक-चिह्न** (Question Mark) (?)—प्रश्न-वाक्य के अन्त में इसका प्रयोग होता है।

६. **निर्देशक** (Dash) (—)—किसी बात का उत्तर या उदाहरण आगे दिया जाना हो अथवा किसी के वक्तव्य को उद्धृत करने से पूर्व।

७. **योजक** (Hyphen) (-)—समास हुए शब्दों के बीच इसका प्रयोग होता है।

८. **कोष्ठक** (Bracket) ( )—किसी शब्द के अर्थ या उसके विकल्प को लिखने के लिए इसका प्रयोग होता है।

९. **उद्धरण** (Quotation mark) (" ")—उद्धृत वाक्य इन चिह्नों के बीच रखा जाता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

१०. **विस्मयादि-बोधक चिह्न** (Sign of interjection) (!)—विस्मयादि-बोधक शब्दों के बाद इसका प्रयोग होता है।

११. **लाघव चिह्न** (Abbreviation Sign) (०) जैसे—डॉक्टर को डॉ०, प्रोफेसर को प्रो०। लाघव चिह्न वास्तव में विराम चिह्न नहीं है लिखने का केवल संक्षिप्त रूप है।

अभ्यास

१. विराम चिह्नों की क्या उपयोगिता है ? उनके बिना क्या अनर्थ हो सकता है, इसके कम-से-कम दो उदाहरण दीजिए।

२. निम्नलिखित गद्यांशों में उपयुक्त विराम चिह्न लगाइए—

(क) गिरीश ने गुस्से से कहा मोहन यह तुम्हें शोभा नहीं देता कि तुम इस प्रकार का काम करो और फिर इतना ही नहीं गलत काम करके फिर झूठ भी बोलते हो यह दोहरा दोष है तुम्हें याद है कि उस दिन तुमने क्या वायदा किया था कि मैं आगे से कोई भी अनुचित बात नहीं करूँगा फिर भी ऐसी बात

(ख) गीता पुकार पुकार कर कह रही है अपना कर्त्तव्य करते जाओ फल की चिन्ता न करो फल तो होना ही है फिर उसकी चिन्ता क्यों की जाए इन महान् शब्दों को जिसने भी हृदय में धारण किया और इसके अनुसार काम किया वह स्वयं भी ऊपर उठा और उसने दूसरों को भी ऊपर उठाया इसलिए हे छात्रो यह उपदेश हमेशा याद रखना भूलना नहीं

(ग) राधे ने कहा मेरा यह मतलब हरगिज नहीं है मैं अनुशासन को महत्त्व देता हूँ

(घ) घृणा व्यक्ति से न करो उसके बुरे काम से करो स्वामीजी ने कहा

(ङ) अरे दुष्ट ठहर जा कहाँ रहा है

(च) रुको मत बढ़े चलो

(छ) रुको आगे बढ़ने में खतरा है

(ज) जय हो या पराजय हमें इसकी कदापि चिन्ता नहीं करनी है

(झ) थोड़े दिनों के लिए सभी देवी-देवताओं को भूल जाओ केवल एक ही देवता राष्ट्र देवता का ध्यान करो

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: २३ :

मुहावरे और लोकोक्तियाँ
(IDIOMS AND PROVERBS)

मुहावरे और लोकोक्तियों का भाषा में विशेष स्थान है। इन्हें भाषा का अलंकार कहा जाता है। इनके प्रयोग से भाषा सरल, सुन्दर और सबल बन जाती है; भाषा में लालित्य और चमत्कार आ जाता है। मुहावरे और कहावतें यथार्थ में भाषा की जान होती हैं।

मुहावरा—मुहावरा अपूर्ण वाक्य होता है; इसका प्रयोग वाक्य के अन्दर होता है, स्वतन्त्र रूप से नहीं; जैसे, 'दाँत तोड़ना' एक मुहावरा है इसका अर्थ है 'असमर्थ कर देना'। प्रयोग इस प्रकार होगा "राणा प्रताप की सेना ने मुगल सेना के दाँत तोड़ दिए।"

लोकोक्ति—लोकोक्ति पूर्ण वाक्य होती है और अपना स्वतन्त्र अर्थ रखती है तथा अलग से प्रयोग में लाई जा सकती है। एक लोकोक्ति है 'नाम बड़े, दर्शन छोटे'—अर्थ है गुण से अधिक प्रशंसा। इसका प्रयोग इस प्रकार होगा "कविजी का नाम तो बहुत सुना था पर कवि-सम्मेलन में जब कविता सुनी तो बिल्कुल बेकार लगी, वही बात है "नाम बड़े, दर्शन छोटे।"

(१) कुछ प्रचलित मुहावरे

आँख सम्बन्धी मुहावरे

आँख खुलना—(होश आना)—जब नाते-रिश्तेदारों ने उसकी सारी ज़मीन जायदाद हड़प ली, तब उसकी आँखें खुलीं।

आँख लगना—(नींद आना)—दर्द के मारे रात भर मरीज़ की आँख नहीं लगी।

आँखें बिछाना—(प्रेम से स्वागत के लिए प्रतीक्षा करना)—प्रधान मन्त्री की अगवानी के लिए जनता आँखें बिछाए खड़ी थी।

आँखें दिखाना—(क्रोध से घूरना)—मैंने तो सच बात ही कही है, फिर क्यों तुम मुझे आँख दिखाते हो ?

आँखों का तारा—(अत्यन्त प्रिय)—श्री नेहरू भारतीय जनता की आँखों के तारे थे।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कान सम्बन्धी मुहावरे

कान भरना—(चुगली करना)—मेरे विरुद्ध अध्यापक के कान भरते रहने से तुम्हें क्या मिल जाएगा ?

कान पर जूँ न रेंगना—(असर न होना)—तुम पढ़ाई-लिखाई में इतने कमज़ोर हो कि तुम्हें रोज़ ही अध्यापक की डांट सुननी पड़ती है पर तुम्हारे कान पर जूँ नहीं रेंगती।

कानों-कान खबर न होना—(बिल्कुल पता न चलना)—लो, ये रुपये ले जाओ, किसी को कानों-कान खबर न हो।

कान का कच्चा—(हर एक के कहने में आ जानेवाला)—हमारा अफ़सर वैसे तो बड़ा ईमानदार है पर है कान का कच्चा।

नाक सम्बन्धी मुहावरे

नाक कटना—(प्रतिष्ठा खत्म होना)—बारात की खूब खातिरदारी नहीं की गई तो गाँव में नाक कट जाएगी।

नाक रखना (मान रखना)—पिता का सारा कर्ज़ अदा करके मोहन ने अपने खानदान की नाक रख ली।

नाकों चने चबाना—(खूब सताना)—शिवाजी ने औरंगज़ेब को खूब नाकों चने चबवाए।

नाक रगड़ना—(दीनता दिखाना)—चोर ने थानेदार के आगे खूब नाक रगड़ी, परन्तु थानेदार कहाँ छोड़नेवाला था !

नाक पर मक्खी न बैठने देना—(उपकार न लेना)—विधवा ने कहा, "मैं मेहनत मज़दूरी करके अपना पेट पाल लूंगी, पर नाक पर मक्खी न बैठने दूंगी।"

मुँह सम्बन्धी मुहावरे

मुँह की खाना—(बुरी तरह हारना)—नाथू-ला के स्थान पर चीनियों ने भारतीय सैनिकों के हाथ मुँह की खाई।

मुँह उतरना—(उदास होना)—आज तुम्हारा मुंह उतरा हुआ नज़र आता है, लगता है विद्यालय में अध्यापक ने खूब डाँटा है।

मुँह बन्द करना—(चुप कर देना)—आज के ज़माने में रिश्वत देकर लोग विरोधियों का मुँह बन्द कर देते हैं।

मुँह खून लगना—(आदत पड़ जाना)—वह तो बड़ी-से-बड़ी रिश्वत डकार लेगा, उसके मुंह तो खून लग चुका है।

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

मुँह ताकना—(दूसरे पर आश्रित होना)—अनाज के मामले में भारत को बहुत समय तक विदेशों का मुँह नहीं ताकना पड़ा, अब वह आत्म-निर्भर हो गया है।

दाँत सम्बन्धी मुहावरे

दाँत पीसना—(बहुत अधिक क्रोध करना)—अपने छोटे भाई को पिटता देखकर वह दाँत पीसने लगा।

दाँत खट्टे करना—(बुरी तरह हराना)—हल्दी घाटी के युद्ध में राजपूतों ने मुगलों के दाँत खट्टे कर दिए।

दाँत तले उँगली दबाना—(चकित होना)—ताजमहल की सुन्दरता को देखकर विश्व के लोग दाँतों तले उँगली दबाते हैं।

दाँत काटी रोटी—(घनिष्ट मित्रता)—कभी भारत और चीन की दाँत काटी रोटी थी पर आज एक-दूसरे को सन्देह से देखते हैं।

हाथ सम्बन्धी मुहावरे

हाथ कटाना—(अपने को अशक्त कर लेना)—मुकद्दमे में झूठी गवाही देकर मैं तो अपने हाथ कटा बैठा हूँ।

हाथ तंग होना—(पैसा पास न होना)—मैं तुम्हें रुपये उधार नहीं दे सकता क्योंकि महीने का अन्त है और मेरा अपना हाथ तंग है।

हाथ धोना—(खो देना)—हड़ताल में भाग लेकर वह अपनी नौकरी से हाथ धो बैठा है।

हाथ मलना—(पछताना)—समय रहते पढ़ लो, बाद में कहीं हाथ न मलने पड़ें।

हाथ साफ़ करना—(चीज़ उड़ा लेना)—चोरों ने सेठ के सब माल पर हाथ साफ़ कर दिया।

गर्दन सम्बन्धी मुहावरे

गर्दन पर छुरी फेरना (अत्याचार करना)—क्यों बेचारे गरीब की गर्दन पर छुरी फेरते हो, भगवान् इसके लिए तुम्हें कभी माफ़ नहीं करेंगे।

गर्दन पर सवार होना—(पीछे पड़ना)—मैंने तुमसे कह दिया कि आज नहीं खेलूँगा पर तुम तो मेरी गर्दन पर सवार हो।

गर्दन झुकना—(लज्जित होना)—पाप करनेवाले व्यक्ति की गर्दन स्वयं झुक जाती है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सिर सम्बन्धी मुहावरे

सिर उठाना—(विरोध करना)—चीन हो या पाकिस्तान, जो भी भारत के खिलाफ़ सिर उठाएगा उसे कुचल दिया जाएगा।

सिर चढ़ाना—(किसी की आदतें खराब करना)—तुमने लाड़-प्यार में अपने लड़के को सिर पर चढ़ा लिया है।

सिर पर कफ़न बाँधना—(मरने को तैयार रहना)—देश-भक्ति करना सिर पर कफ़न बाँधने का सौदा है।

सिर पर भूत सवार होना—(धुन सवार होना)—उस कंजूस सेठ के सिर पर तो धन कमाने का भूत सवार है।

हवा सम्बन्धी मुहावरे

हवा लगना—(शौक लगना)—ग्रामीण रामू को शहर पहुँचते ही वहाँ की हवा लग गई है।

हवा हो जाना—(गायब हो जाना)—देखते-देखते ही मेरी घड़ी न जाने कहाँ हवा हो गई।

हवा से बातें करना—(बहुत तेज़ दौड़ना)—घुड़सवार का घोड़ा एड़ लगाते ही हवा से बातें करने लगा।

हवाई किले बनाना—(झूठी कल्पनाएँ करना)—यह कहना कि बड़े होकर तुम प्रधान मन्त्री ही बनोगे, यह बात मुझे तो हवाई किले बनाने से ज़्यादा नहीं लगती।

पानी सम्बन्धी मुहावरे

पानी-पानी होना—(लज्जित होना)—पत्नी ने जब पति का झूठ पकड़ लिया तो पति पानी-पानी हो गया।

पानी में आग लगाना—(शान्ति में झगड़ा खड़ा कर देना)—कुछ राष्ट्र सदा पानी में आग लगाने की कोशिश करते हैं और शान्ति से नहीं रहना चाहते।

पानी फेर देना—(नाश कर देना)—परीक्षा में असफल होकर तुमने मेरी सब आशाओं पर पानी फेर दिया।

पानी भरना—(तुच्छ प्रतीत होना)—रीता इतनी सुन्दर है कि अन्य लड़कियाँ तो उसकी सुन्दरता के सामने पानी भरती हैं।

कुछ मिले-जुले मुहावरे

अड़ियल टट्टू—(बात-बात में अड़नेवाला)—तुम तो पूरे अड़ियल टट्टू हो, कभी दूसरों की बात भी मान लिया करो।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चौकड़ी भरना—(प्रसन्न होना)—विवाह का नाम सुनते ही तुम चौकड़ी भरने लगे।

तीन पाँच करना—(झगड़ा करना)—तुम्हारी आदत इतनी गन्दी है कि तुम कोई कार्य शान्ति से नहीं होने देते, हर जगह तीन-पाँच करते हो।

दो टूक बातें कहना—(साफ़ बात कहना)—कई अवसरों पर भारत ने पाकिस्तान से दो टूक बात कह दी है कि काश्मीर हमारा है और हमारा ही रहेगा।

खेत की मूली—(अधिकारहीन)—जब उसने अपने सगे भाई से धोखा किया तो तुम्हें भी चकमा ज़रूर देगा, तुम भला किस खेत की मूली हो।

मैदान मारना—(लड़ाई में जीत होना)—भारत-पाक सीमावर्ती युद्ध में पाकिस्तानी सैनिक जी जान से लड़े पर मैदान तो भारतीय सैनिकों ने ही मारा।

पट्टी पढ़ाना—(बुरी बात सिखाना)—मेरी अनुपस्थिति में तुमने मेरी माँ को न जाने क्या पट्टी पढ़ा दी है, जब से स्कूल से लौटा हूँ वे मुझे लगातार डाँट रही हैं।

मोम होना—(पिघल जाना)—गरीबों की गरीबी को देखकर तो पत्थर दिल भी मोम हो जाता है।

लोहा मानना—(अधिकार मानना)—सन् १९७१ में भारत पाकिस्तान की लड़ाई के बाद भारतीय सैनिकों की वीरता का लोहा तो सारा संसार मानने लगा है।

बात का धनी—(वायदे का पक्का)—भारतीय परम्परा के अनुसार राजपूत सदा अपनी बात के धनी होते थे।

डकार जाना—(सरासर बेईमानी करना)—तुमने मुझे आधे रुपये ही लौटाए हैं, बाकी रुपये डकार जाना चाहते हो।

धज्जियाँ उड़ाना—(चुन-चुनकर दोष गिनना)—उस दल के कार्यकर्त्ता ने कहा, "देखना, आज सभा में विरोधियों की कैसी धज्जियाँ उड़ाता हूँ।"

गाँठ का पूरा—(धनी व्यक्ति)—हमारा पड़ोसी अक्ल का चाहे कम हो पर है गाँठ का पूरा।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आस्तीन का साँप—(धोखेबाज़)—कैसे सरकारी अफ़सर हो, विदेशी को अपने देश का भेद बता रहे हो, तुम तो आस्तीन के साँप प्रतीत होते हो।

किनारा करना—(साथ छोड़ना)—इस स्वार्थी संसार में मौका पड़ने पर पक्के-से-पक्का मित्र भी समय पर किनारा कर जाता है।

खटाई में पड़ना—(विलम्ब होना)—अभी तक मृत पिता की जायदाद का कोई बँटवारा नहीं हो सका, बस मामला खटाई में पड़ गया है।

घर में गंगा बहना—(बिना मेहनत के लाभ)—तुम तो पण्डितजी के ही पुत्र हो, वेद-पाठ की चर्चा तो तुम्हारे घर में होती ही है, तुम्हें सीखने की क्या ज़रूरत, तुम्हारे घर में तो ही गंगा बहती है।

गाल बजाना—(डींगें मारना)—विराट के पुत्र उत्तर ने जब कौरव सेना को देखा तो सब गाल बजाना भूल गया।

गज़ भर की छाती—(प्रसन्न होना)—भारतीय सेना के जवानों की वीरता देखकर और सुनकर ऐसा कौन भारतीय है जिसकी छाती गज़ भर की न हो जाए।

उड़ती चिड़िया पहचानना—(मन की बात जानना)—निश्चय ही तुम कोई चलचित्र देखकर आ रहे हो बच्चू, हमसे न छुपाओ हम तो उड़ती चिड़िया पहचानते हैं।

तीन तेरह होना—(अलग-अलग होना)—घर की स्त्रियों के कलह के कारण अन्त में भाइयों को तीन तेरह होना पड़ा।

उँगली पकड़कर पहुँचा पकड़ना—(थोड़े से शुरू होकर बहुत की इच्छा करना)—मैंने तो दयावश उसे आर्थिक सहायता दी थी पर अब तो वह एक लम्बी धनराशि माँगता है, यह समझ लो उँगली पकड़कर पहुँचा पकड़ना चाहता है।

भीगी बिल्ली बनना—(डर जाना)—क्रोधी पिता के घर में पैर रखते ही बच्चे भीगी बिल्ली बन जाते हैं।

आँच न आने देना—(कष्ट न आने देना)—बुढ़िया ने भगवान से प्रार्थना की कि उसका पुत्र लड़ाई पर जा रहा है, उस पर कोई आँच न आये।

भनक पड़ना—(खबर मिलना)—हमें इस बात की भनक पड़ी है कि चीन भारत पर फिर हमला करने को तैयारी कर रहा है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उगल देना—(भेद खोल देना)—पुलिस की मार पड़ते ही देशद्रोही ने सब बातें उगल दीं।

बछिया का ताऊ—(मूर्ख)—तीसरी बार पैसे गिनने में तुमने फिर ग़लती की, तुम तो बछिया के ताऊ हो।

कलम तोड़ना—(बहुत सुन्दर लिखना)—कालिदास ने मेघदूत की रचना करने में कलम तोड़ दी है।

कागज़ी घोड़े दौड़ाना—(लिखा-पढ़ी करना)—अभी हमारे मुकद्दमे का फैसला कहाँ हुआ, अभी तो अदालत में कागज़ी घोड़े ही दौड़ रहे हैं।

निन्यानवे का फेर—(धन का चक्कर)—आज के समाज में क्या रंक क्या राजा, सभी निन्यानवे के फेर में पड़े हैं।

अरमान निकालना—(आशा पूर्ति करना)—"मेरे बड़े पुत्र का विवाह है", मां ने कहा, "आज तो मैं सब अरमान निकालूंगी।"

घात लगाना—(अवसर की ताक में रहना)—चोर घात लगाए बैठे थे कि कब पहरेदार सोए और कब वे ताला तोड़ें।

नानी याद कराना—(मज़ा चखाना) कम्पनी के मालिक ने कहा कि यदि कम्पनी को घाटा हुआ तो सब कर्मचारियों को नानी याद करा दूँगा।

सफ़ेद झूठ—(सरासर झूठ)—"अमरीकी नीग्रो नेता मार्टिन लूथर किंग की हत्या नहीं की गई बल्कि उन्होंने आत्महत्या की है", यह बात सफ़ेद झूठ है।

ऊँट के मुँह में जीरा—(बहुत कम वस्तु)—उस भूखे भिखारी के लिए दो रोटियाँ तो ऊँट के मुँह में ज़ीरे के समान हैं।

दो नावों पर पैर रखना—(दो पक्षों का एक-साथ समर्थन करना)—भारत या तो अमरीका से मित्रता रख सकता है या रूस से ही, वह दो नावों पर पैर नहीं रख सकता।

उलटी गंगा बहाना—(उलटी बात या उलटा काम करना)—तुम इतने बुद्धिमान होकर उस मूर्ख से विद्या सीख रहे हो। क्यों उलटी गंगा बहाना चाहते हो?

हाथों के तोते उड़ना—(होश उड़ना)—घर में चोरी हो जाने की सूचना मिलते ही सेठजी के हाथों के तोते उड़ गए।

मुट्ठी गरम करना—(घूस देना)—मुट्ठी गरम करके ही वह आज इस ऊँची कुर्सी पर नज़र आता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

घी के दीये जलाना—(खुशी मनाना)—पुत्र के युद्ध से न लौटने पर कल तक जहाँ घर में हाहाकार मचा था, आज जब वह लौट आया है तो घी के दीये जल रहे हैं।

बाँछें खिलना—(प्रसन्न होना)—अपने बिछड़े साथी अभय को देखकर अजय की बाँछें खिल गईं।

कलेजा ठण्डा होना—(संतोष होना)—पुत्र को युद्ध-स्थल से सही-सलामत लौटते देख माँ का कलेजा ठण्डा हो गया।

---

२. कुछ कहावतें
(PROVERBS)

अधजल गगरी छलकत जाए—(थोड़ी विद्या या धन से घमण्ड)—राम अपनी डाक्टरी की बड़ी डींगें मारता है पर वह तो मामूली बीमारी का भी इलाज नहीं कर पाया, सच है अधजल गगरी छलकत जाए।

अन्धों में काना राजा—(मूर्खों में थोड़ा ज्ञानी)—पूरे गाँव में डाकखाने का पोस्टमास्टर ही पढ़ा-लिखा व्यक्ति है, बस वही अन्धों में काना राजा है।

गागर में सागर भरना—(थोड़े में बहुत करना)—बिहारी कवि ने अपने दोहों में गागर में सागर भरने का प्रयत्न किया है।

आम के आम और गुठलियों के दाम—(दुगुना लाभ)—वाह! आपने तो अपनी सुन्दर कोठी में सब्ज़ियाँ भी बो रखी हैं, बस आम के आम और गुठलियों के दाम हैं।

उलटा चोर कोतवाल को डाँटे—(अपराधी निरपराध को डाँटे)—मेरी मोटर का शीशा तुमने तोड़ा है पर डाँट तुम मुझे ही रहे हो, वाह! उलटा चोर कोतवाल को डाँटे!

ऊँट किस करवट बैठता है—(क्या परिणाम निकलता है)—गवाह मेरे पक्ष में है और वकील ने जिरह भी ज़ोरदार की है पर देखना है मुकद्दमे में ऊँट किस करवट बैठता है?

ऊँची दुकान फीका पकवान—(ऊपरी दिखावा)—धारीवाल की ऊन का तो केवल नाम ही रह गया है, वह तो बिल्कुल टिकाऊ नहीं है, यह समझ लो ऊँची दुकान और फीका पकवान है।

न ऊधो का लेना न माधो का देना—(किसी से मतलब न रखना)—

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

हम तो केवल पढ़ाई से लगाव रखते हैं, हमें स्कूल के झगड़े-टण्टों ने क्या काम, हम तो न ऊधो के लेन में हैं न माधो के देन में।

एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकतीं—(दो विरोधी साथ नहीं रह सकते)—बहू ने पति से कहा कि इस घर में या तो तुम्हारी माँ ही रह सकती है या मैं, एक म्यान में दो तलवारें नहीं समा सकतीं।

ओस के चाटने से प्यास नहीं बुझती—(कंजूसी से काम नहीं होता)—पण्डितजी ने कहा कि पूरा पुण्य कमाना चाहते हो तो सौ-पचास रुपये क्या दान करते हो, गरीबों का शोषण बन्द करो, ओस के चाटने से प्यास नहीं बुझती।

कभी गाड़ी नाव पर और कभी नाव गाड़ी पर—(अवसर-अवसर की बात)—तुमने पढ़ाई-लिखाई में मेरी मदद की, अब मैं तुम्हारी सहायता करूँगा, वही बात है कभी गाड़ी नाव पर और कभी नाव गाड़ी पर।

खोदा पहाड़ निकली चुहिया—(बहुत मेहनत का थोड़ा फल)—रात-दिन परिश्रम करने के बाद तुम तृतीय श्रेणी में उत्तीर्ण हुए हो, वही बात है खोदा पहाड़ निकली चुहिया।

एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है—(एक बुरा व्यक्ति सारे समाज को गन्दा कर देता है)—पुलिस के कुछ आदमी रिश्वत लेते हैं पर पुलिस का पूरा विभाग बदनाम हो जाता है, ठीक ही है, एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है।

एक हाथ से ताली नहीं बजती—(झगड़ा एक के किए नहीं होता)—पति ने पत्नी से कहा कि झगड़े का पूरा दोष तुम मेरी माँ के सिर मढ़ना चाहती हो, पर यह जान लो एक हाथ से ताली नहीं बजती।

एक पन्थ दो काज—(एक काम से दो लाभ)—चलो नौचन्दी का मेला भी देखेंगे और गंगा स्नान भी कर आएँगे, एक पन्थ दो काज हो जाएँगे।

ऊँट रे ऊँट तेरी कौन-सी कल सीधी—(जिसमें दोष-ही-दोष हों)—अरे भाई, दुनिया के सारे ऐब तो तुममें हैं, सिगरेट तुम पीते हो, शराब तुम पीते हो, जुआ तुम खेलते हो, तुम्हारा भी वही हाल है, ऊँट रे ऊँट तेरी कौन-सी कल सीधी।

एक अनार सौ बीमार—(थोड़ी चीज़ और माँगनेवाले अधिक)—एक नौकरी के लिए हज़ार अर्जियाँ आई हैं, वही हाल है, एक अनार और सौ बीमार।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

खरबूजे को देखकर खरबूज़ा रंग बदलता है—(देखकर बुराई को अपनाना)—बड़ा भाई तो जुआरी और शराबी था ही, अब छोटा भी उसी के समान हो गया है, ठीक ही कहा है, खरबूज़े को देखकर खरबूज़ा रंग बदलता है।

गंगा गए तो गंगादास जमना गए तो जमनादास—(अवसरवादी मनुष्य)—गरीबों का नेता बनकर कभी तो तुम उनकी हिमायत करते हो और कभी पूँजीपतियों के साथ रहकर गरीबों की आलोचना करते हो। तुम्हारा तो वही हाल है, गंगा गए तो गंगादास जमना गए तो जमनादास।

तेते पाँव पसारिए जेती लम्बी सौर—(अपनी आय के अनुसार ही खर्च करना चाहिए)—भाई, साठ रुपए वेतन में तुम दो सौ रुपए खर्च कर देते हो, यह अच्छा नहीं। भैया तेते पाँव पसारिए जेती लम्बी सौर।

रानी रूठेगी तो अपना सुहाग लेगी—(नाराज़ होकर अपना ही नुकसान कर लेना)—मज़दूर ने कहा, "मिलमालिक अधिक-से-अधिक नौकरी से ही तो निकाल देगा तो अपना ही नुकसान करेगा। रानी रूठेगी अपना सुहाग लेगी।"

अभ्यास के लिए मुहावरे

१. अंग-अंग ढीला होना—थक जाना।

२. अंगारे उगलना—गुस्से में कठोर और कड़वी बात कहना।

३. अन्धे के हाथ बटेर लगना—अयोग्य को अचानक अच्छी चीज़ मिलना।

४. अक्ल का पुतला—बुद्धिमान।

५. अक्ल के पीछे लट्ठ लिए फिरना—समझाने पर भी न समझना।

६. अपने पाँव आप कुल्हाड़ी मारना—अपना नुकसान स्वयं करना।

७. आँखें बिछाना—आदर करना।

८. आंखों का तारा—बहुत प्यारा।

९. आकाश पाताल का अन्तर—बहुत फ़र्क, बिल्कुल उलटा।

१०. आग में घी डालना—गुस्सा और बढ़ाना।

११. ईंट-से-ईंट बजाना—नाश करना।

१२. ईद का चाँद होना—बहुत दिनों में दिखाई पड़ना या मिलना।

१३. उलटी गंगा बहाना—विपरीत कार्य करना।

१४. कब्र में पैर लटकाए बैठना—मरने के करीब होना।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

१५. कलेजा फटना—दुखित होना।

१६. काँटा बोना—हानि पहुँचाना।

१७. कान खड़े होना—सचेत होना।

१८. काला अक्षर भैंस बराबर—विद्याहीन; निरक्षर भट्टाचार्य।

१९. कौड़ी-कौड़ी को मोहताज—धन से खाली।

२०. खाक डालना—छिपाना।

२१. गज़ भर की छाती होना—हिम्मतवाला होना।

२२. गड़े मुर्दे उखाड़ना—भूली हुई अवांछनीय बातों को फिर कहना।

२३. गाँठ का पूरा—मालदार।

२४. गागर में सागर भरना—संक्षेप में सारपूर्ण बात कहना।

२५. गिरगिट की तरह रंग बदलना—जल्दी-जल्दी अपने सिद्धान्त बदलना।

२६. घाट-घाट का पानी पीना—प्रत्येक स्थान से अनुभव प्राप्त करना।

२७. चाँद पर थूकना—निर्दोष पर दोष लगाना।

२८. चादर से बाहर पैर निकालना—आय से अधिक खर्च करना।

२९. चींटी के पर लगना—मौत के दिन आना।

३०. चुल्लू भर पानी में डूब मरना—अति लज्जित होना।

३१. चूड़ियाँ पहनना—कायर होना।

३२. चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना—डर से रंग फीका होना।

३३. छप्पर फाड़ कर देना—बिना मेहनत के धन मिलना।

३४. छाती पर मूँग दलना—पास रह कर दुःख देनेवाली बात करना।

३५. टेढ़ी खीर—कठिन काम।

३६. डकार लेना—चुपचाप हज़म करना।

३७. तिल का ताड़ करना—छोटी बात को बढ़ाना।

३८. थाली का बैंगन—मौका देखकर इधर-उधर होनेवाला।

३९. थूक कर चाटना—प्रतिज्ञा तोड़ना।

४०. दाई से पेट छिपाना—जाननेवाले से भेद छिपाना।

४१. दाहिना हाथ—बड़ा सहायक।

४२. दो दिन का मेहमान—जल्दी मरनेवाला।

४३. दो नावों पर पैर रखना—दो विरोधी बातें करना।

४४. धज्जियाँ उड़ाना—खण्डन करना।

४५. नमक मिर्च लगाना—छोटी-सी बात बहुत बढ़ा-चढ़ा कर कहना।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

४६. पानी पी-पी कर कोसना—लगातार बुरा-भला कहना।
४७. पेट में दाढ़ी होना—छोटी आयु में चालाक होना।
४८. पौ-बारह होना—भाग्य खुलना।
४९. बन्दर घुड़की—सूखा रौब।
५०. बगलें झाँकना—उत्तर न दे सकना।
५१. बगुला भगत—कपटी आदमी।
५२. बाल की खाल—व्यर्थ की बारीकियों में जाना।
५३. भाड़े का टट्टू—किराये का आदमी।
५४. भिड़ के छत्ते में हाथ देना—झगड़ालू को और छेड़ना।
५५. माई का लाल—साहसी; शूरवीर।
५६. मिट्टी का माधो—मूर्ख।
५७. मुट्ठी गरम होना—रिश्वत लेना।
५८. लंका काण्ड होना—मारपीट हो जाना।
५९. सब्ज बाग़ दिखाना—लोभ देकर बहकाना।
६०. सिर पर भूत सवार होना—किसी बात के पीछे तन-मन से लग जाना।
६१. हजामत करना—धोखे से ठगना।
६२. हथियार डालना—हार मान लेना।
६३. हवा से बातें करना—बहुत तेज़ चलना।
६४. हाथ साफ़ करना—चुपके से उड़ा लेना।

अभ्यास के लिए लोकोक्तियाँ या कहावत

१. अन्धा बाँटे रेवड़ी फिर-फिर अपनों को ही देय—स्वार्थी अपनों की ही मदद करता है।

२. अन्धी पीसे कुत्ता खाय—जहाँ असावधान परिश्रमी आदमी का माल दूसरे हड़प करे।

३. अन्धों में काना राजा—निरक्षरों में थोड़ा पढ़ा-लिखा भी विद्वान माना जाता है।

४. अन्धेर नगरी चौपट राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा—मूर्ख मालिक के सामने जहाँ गुणी और निर्गुण एक समान हों।

५. अधजल गगरी छलकत जाए—ओछे या छोटे आदमी बहुत दिखावा करते हैं।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

६. अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है—अपने घर या अधिकार क्षेत्र में सभी रौब जमाते हैं।

७. अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गईं खेत—काम बिगड़ जाने पर पछतावा व्यर्थ होता है।

८. आग लगने पर कुआँ खोदना—मुसीबत पड़ने पर ही उपाय की फिक्र करना।

९. आगे कुआँ पीछे खाई—दोनों ओर विपत्ति।

१०. ऊँची दुकान फीका पकवान—दिखावा ज़्यादा पर सार कुछ न हो

११. न ऊधो का लेना न माधो का देना—जिसे किसी से कोई मतलब न हो।

१२. एक तो करेला दूसरा नीम चढ़ा—एक दोष होने पर और दोष होना।

१३. एक ही थैली के चट्टे-बट्टे—सब एक समान ही दुर्गुणयुक्त होना।

१४. एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है—एक बुरे आदमी से सारा घर बदनाम होता है।

१५. एक म्यान में दो तलवारें नहीं समातीं—जहाँ दो आदमी अभिमान के कारण एक जगह न रह सकें।

१६. कहाँ राजा भोज कहाँ गंगू तेली—दोनों आदमियों की स्थिति में बहुत अन्तर होना।

१७. कागज़ की नाव नहीं चलती—बेईमानी अधिक देर काम नहीं देती।

१८. कुत्ते की दुम बारह वर्ष नली में रही तो भी टेढ़ी-की-टेढ़ी—कुटिल व्यक्ति कभी सीधा नहीं होता।

१९. कै हंसा मोती चुगे कै फाके मर जाए—प्रतिष्ठित मनुष्य अपनी इज़्ज़त खोकर जीना नहीं चाहता।

२०. कोयलों की दलाली में हाथ काले—बुरों के साथ कलंक ही लगता है।

२१. खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे—किसी बात पर शरमा कर क्रोध करना।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

२२. गवाह चुस्त मुद्दई सुस्त—जिसका काम हो वह लापरवाह और सहायक उतावले।

२३. गुड़ खाय गुलगुलों से परहेज़—जहाँ परहेज़ दिखावे के लिए हो।

२४. गोद में लड़का शहर में ढिंढोरा—पास पड़ी हुई चीज़ को न देखकर खोई हुई समझ कर तलाश करना।

२५. घोड़ा घास से यारी करे तो खाए क्या—मेहनत करने पर मज़दूरी माँगने में क्या लिहाज़ और शर्म।

२६. चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए—ज़रूरत से ज़्यादा कंजूसी।

२७. चार दिन की चांदनी फिर अँधेरी रात—जब सुख के कुछ दिनों के बाद दु:ख मिले।

२८. चोर पर मोर—एक दूसरे से ज्यादा धूर्त।

२९. चौबे गए छब्बे होने, रह गये दूबे—अधिक मिलने की आशा में पूँजी भी गँवा देना।

३०. जंगल में मोर नाचा किसने जाना—गुणी को अपने गुण गुणज्ञों में ही प्रकट करने चाहिएं।

३१. जल में रहकर मगर से बैर—अफ़सर से विरोध करना ठीक नहीं।

३२. जिसकी लाठी उसकी भैंस—बल अनाधिकारी को भी अधिकारी बना देता है।

३३. जिस थाली में खाना उसी में छेद करना—आश्रय देनेवाले की बुराई करना।

३४. जैसा देश वैसा भेस—जहाँ रहे वहाँ वैसा बन कर रहे।

३५. ढाक के तीन पात—एक-सी दशा रहना।

३६. थोथा चना बाजे घना—जिस व्यक्ति में गुण और विद्या कम हो पर आडम्बर अधिक करता हो।

३७. धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का—जिस आदमी का कहीं आदर न हो।

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

३८. नाच न जाने आँगन टेढ़ा—काम आता न हो और दूसरों के दोष निकालना।

३९. पाँचों अँगुलियाँ बराबर नहीं होतीं—सब आदमी एक जैसे नहीं होते।

४०. बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद—मूर्ख लोग गुण की महिमा नहीं जानते।

४१. बारह बरस दिल्ली रहे भाड़ ही झोंका—योग्य पुरुष के साथ रहकर भी कुछ न सीखा।

४२. बिल्ली के भागो छींका टूटा—अचानक कोई बात सिद्ध होना या धन मिलना।

४३. भरी थाली में लात मारना—घमण्ड में कोई चीज़ छोड़ देना या उसका अनादर करना।

४४. भागते भूत की लँगोटी भली—कुछ न मिलने की अपेक्षा कम मिलना अच्छा है।

४५. मन चंगा तो कठोती में गंगा—मन शुद्ध है तो घर ही तीर्थ है।

४६. भैंस के आगे बीन बजाई भैंस खड़ी पगुराय—मूर्ख को अच्छी बात सुनाना व्यर्थ है।

४७. मुल्ला की दौड़ मस्जिद तक—जिस तक पहुँच होगी उस तक ही जाया जा सकता है।

४८. रस्सी जल गई पर ऐंठ न गई—बुरी हालत होने पर भी घमण्ड नहीं छूटा।

४९. सौ सुनार की एक लुहार की—बलवान् की एक और निर्बल की सौ बराबर होती हैं।

५०. हरड़ लगे न फिटकरी रंग चोखा आए—बिना कुछ खर्च किए ही काम बन जाय।

५१. हथेली पर सरसों नहीं जमती—बात निकलते ही काम पूरा नहीं होता।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

५२. हाथ कंगन को आरसी क्या—प्रत्यक्ष को प्रमाण की क्या जरूरत है।

५३. हाथी के दांत खाने के और दिखाने के और—ढोंगी के कहने और करने में अन्तर होता है।

५४. होनहार बिरवान के होत चीकने पात—जिन्हें बड़े होने पर कुछ बनना होता है, उनके लक्षण बचपन से ही अच्छे होते हैं।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

रचना भाग

: २४ :

अनुवाद
(TRANSLATION)

विज्ञान की प्रगति के कारण संसार आज सिमटता जा रहा है। कहने का भाव यह है कि शीघ्रगामी यातायात के कारण देशों का पारस्परिक-सम्पर्क बहुत बढ़ गया है। इस सम्पर्क के कारण निम्नलिखित दो प्रमुख परिणाम सामने आए हैं—

(i) प्रत्येक देश दूसरे देश की संस्कृति, धर्म, साहित्य, राजनैतिक परम्परा तथा अन्य दृष्टिकोणों को समझने के लिए उत्सुक है।

(ii) दूसरे देशों के अनुभव से लाभ उठाकर वह इस प्रगति की दौड़ में औरों से आगे जाना चाहता है।

इन्हीं दोनों बातों की प्रगति के लिए दूसरे देशों की भाषा समझना आवश्यक हो जाता है, क्योंकि भाषा ही सब प्रकार की सभ्यता और संस्कृति का माध्यम होती है। इस कारण से तो विदेशी भाषाओं का अध्ययन होता है। परन्तु, अनुवाद की आवश्यकता क्या है ?

किसी भी देश के सारे लोग तो किसी भी विदेशी भाषा को सीख नहीं सकते। इसलिए थोड़े से जो लोग उसका अध्ययन करते हैं, वे विदेशी साहित्य आदि का अपनी भाषा में अनुवाद करते हैं, ताकि उसे पढ़कर बाकी के लोग भी लाभ उठा सकें।

यही कारण है कि आज हर देश में अनुवाद का कार्य बड़ी द्रुतगति से हो रहा है। भारत जैसे देशों में तो इसका महत्त्व और भी अधिक है। आज पश्चिमी देशों में विज्ञान और ज्ञान इतना अधिक बढ़ चुका है कि हम अपने-आप को बड़ा पिछड़ा हुआ पाते हैं। उस सारे ज्ञान को अपने देशवासियों तक पहुँचाने के लिए बड़ा आवश्यक है कि उसे हम अपनी देशी भाषाओं में प्रस्तुत कर सकें। इसलिए अनुवाद का महत्त्व राष्ट्रीय दृष्टिकोण से भी कम नहीं है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

इस अध्याय में यह बताया गया है कि अंग्रेज़ी से हिन्दी में अनुवाद किस प्रकार किया जाए।

किसी भी भाषा में अनुवाद करते समय निम्नलिखित दो बातें अनिवार्य हैं :

(i) जिस भाषा से अनुवाद किया जा रहा है और जिस भाषा में अनुवाद किया जा रहा है उन दोनों भाषाओं का पूरा ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है।

(ii) अनूद्य विषय (अर्थात् जिसका अनुवाद करना है, उसके विषय) का ज्ञान अनुवादक को होना चाहिए।

इसके पश्चात् अनुवाद शुरू करने से पूर्व निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

(i) अनुवाद शब्दशः न हो। शब्दों में छिपे हुए अर्थ का अनुवाद करना चाहिए।

(ii) अनूद्य विषय यदि कोई लेख्य (Document) या अधिनियम (Act) आदि हो, तो अनुवाद शब्दशः ही करना चाहिए।

(iii) जिस भाषा से अनुवाद किया जाए, उस भाषा का स्वाभाविक प्रवाह बना रहना चाहिए। अनूदित विषय को पढ़कर यह नहीं प्रतीत होना चाहिए कि यह अनुवाद है, बल्कि ऐसा मालूम हो, मानो वह इसी भाषा में मूल रूप से लिखा गया है।

नीचे कुछ अनुच्छेदों का अनुवाद दिया जा रहा है उन्हें ध्यान से पढ़कर अनुवाद की विधि समझ लीजिए।

(1) The average Indian might not be too familiar witn the contents of the Vedas and the Upanishads, but he would not claim ignorance of Lord Krishna's Gita, the Mahabharata and the Ramayana. These great books, indeed, have inspired not only those who live in India or those who profess Hinduism but also many others.

अनुवाद

सामान्य भारतीय वेदों और उपनिषदों के विषय से भले हो परिचित न हो, परन्तु वह भगवान कृष्ण की गीता, महाभारत तथा रामायण से अनभिज्ञ नहीं है। इन महान ग्रन्थों ने केवल भारतीयों या हिन्दू-धर्मावलम्बियों को ही नहीं, अपितु अन्य अनेक लोगों को सचमुच प्रेरणा प्रदान की है।

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(2) We love and honour our flag. On us lies the responsibility of defending its honour. We shall always shed the last drop of our blood to maintain its glory. We want the flag to fly high in the sky, and we shall march under its shade to unlimited progress and prosperity.

अनुवाद

हम अपने राष्ट्र-ध्वज से प्रेम करते तथा इसका सम्मान करते हैं। इसके सम्मान की रक्षा करने का उत्तरदायित्व हमारे ही ऊपर है। इस ध्वज के गौरव की रक्षा के लिए हम सदा अपने रक्त की अन्तिम बूंद तक बहा देंगे। हमारी कामना है कि यह ध्वज आकाश में ऊँचा फहराए, और इसकी छत्रछाया में हम असीम प्रगति एवं समृद्धि प्राप्त करेंगे।

(3) Good and evil are always in the world. Many forget there is any evil—at least they try to forget—and when evil comes upon them they are overwhelmed by it and feel bitter. There are others who deny that there is any evil at all and consider every thing good. That also is a weakness ; that also proceeds from a fear of evil.

अनुवाद

अच्छाई और बुराई संसार में सदा से ही हैं। बहुत-से लोग भूल जाते हैं कि बुराई का भी अस्तित्व है—कम-से-कम वे इसे भूलने का प्रयत्न करते हैं और जब उनके साथ कोइ बुराई होती है, तो वे उसमें अभिभूत हो जाते हैं और कटुता का अनुभव करते हैं। कुछ अन्य लोग हैं जो संसार में बुराई के अस्तित्व तक से इनकार करते हैं और उनका विचार है कि जो कुछ है या होता है, अच्छा है। यह भी एक प्रकार की दुर्बलता ही है, और इसका जन्म बुराई के भय से होता है।

(4) Issac Newton was the man of simple living and high thinking. He was a promising boy. He himself made all his tools and saws with which he made a water-clock, a windmill etc.

Newton was a great scientist and mathematician. He spent his long life in thinking or in finding out the secrets of nature. He was first to find the nature of light. He found out the laws of motion.

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अनुवाद

आइज़क न्यूटन 'सादा जीवन और उच्च विचार' वाला मनुष्य था। वह एक होनहार बालक था। उसने अपने सभी औजारों तथा आरियों का निर्माण स्वयं किया था, जिनके द्वारा उसने जलघड़ी, पवन-चक्की आदि का निर्माण किया था।

न्यूटन एक महान् वैज्ञानिक तथा गणितज्ञ था। उसने अपना दीर्घ जीवन चिन्तन में तथा प्रकृति के रहस्यों की खोज में व्यतीत किया। वह प्रथम व्यक्ति था जिसने प्रकाश की प्रकृति या स्वभाव का अनुसन्धान किया। उसने गति के सिद्धान्तों की खोज की।

अनुवाद

(5) Amir Khusroo was the first Muslim, who considered India his homeland. Therefore, he was the first nationalist Musalman. He was born at Patiala. He was the disciple of Sheikh Nijamuddin Oulia. The history of Hindi and Urdu languages began from him. He was attracted by JAN-BHASA *i.e.*, the language of the masses. He composed his verses (riddles etc.) in KHARI-BOLI. Khusroo not only considered India as his motherland, but also praised her very much. He took pride in being a Hindustani.

अमीर खुसरो पहला मुसलमान था, जिसने भारत को अपना देश माना था। अतः यह प्रथम राष्ट्रवादी मुसलमान था। उसका जन्म पटियाला में हुआ था। वह, शेख निज़ामुद्दीन औलिया का शिष्य था। हिन्दी और उर्दू भाषाओं का इतिहास उसी से आरम्भ हुआ। वह जनभाषा, अर्थात् जन साधारण की भाषा की ओर आकर्षित हुआ था। उसने अपनी कविताओं (पहेलियों आदि) की रचना खड़ी बोली में की। खुसरो न केवल भारत को अपनी मातृभूमि समझता था; बल्कि उसने इस देश की बहुत अधिक सराहना भी की। वह हिन्दुस्तानी होने में गौरव का अनुभव करता था।

अभ्यास

१. अनुवाद करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

२. निम्नलिखित अनुच्छेदों का हिन्दी में अनुवाद करें।

(1) Religion or no religion—what shall it be for me ? Tha is the question every full-grown, intelligent person must decide.

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(2) Our education is merely informative and not formative. The emphasis is on somehow equipping oneself to earn a living and not on drawing out the personality of the youth. It does not relate to developing the mental, intellectual and the higher aspects of human being.

(3) The press is merely a reflection of the life of the people. The emphasis upon politics and upon the material aspect of life, which is today every body's concern find pointed and magnified expression there. Sensationalism and gloating stories of sin and crime also find a place of pride in them.

(4) Poultry keeping is a science. It is a science because you have to know your bird, its ways, what food is required, how it is prepared, how to guard your bird against disease, how to treat it when it becomes ill, what equipment is required and how to market the product.

(5) We must take plenty of exercise. To make the body strong we must use it. The parts that are most used become the strongest, and those we use the least will be the weakest. The arms of blacksmith are very strong because he uses them so much. Ours are weaker than his because we use them so much less. The boy who works and plays in the open air grows strong and healthy but the boy who sits indoors and does not take exercise grows up to be a weak and unhealthy man.

(6) Sweet language will multiply friends and a fair speaking tongue will multiply kind greetings. Be in peace with many, nevertheless have but one counseller in a thousand. If you would get a friend, prove him first and be not hasty to credit him for some man is a friend for his own occasion and may not abide in the days of the trouble. A faithful friend is a medicine of life. He is a strong defence and he who has found such a one has found a treasure.

(7) Discipline is very essential in every walk of life. Discipline is the soul of military life. Without discipline an army is no better than a crowd. It is the first thing needed for maintaining the

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

harmony and concord in a family. It is equally necessary in maintaining peace and harmonious relations in a society or in a nation. Without discipline men are no better than brutes. If there is no discipline in God's creation, chaotic conditions will prevail and this universe would come to topsyturvydom in no time.

(8) What was my philosophy of life ? I did not know. Some years earlier I would not have been so hesitant. There was a definiteness about my thinking and objectives then which has faded away since. The events of the past few years in India, China, Europe and all over the world have been confusing, upsetting and distressing, and the future has been vague and shadowy and has lost that clearness of outline which once possessed in my mind.

(9) The earlier picture of Indian Society is offered in the hymns of the Rigveda. Here we find the general position of women, though not a detailed account of the various phases of it. On the whole, it may be said that throughout the Vedic Age women held a very high position, both at home and in society. As a wife she was the mistress of the household and a real partner of her husband. She performed along with her husband all the religious duties and also took part in the outdoor life, for there was no 'Pardah' system. She was respected by all the members of the family, and mixed freely in society.

(10) The Hindi teaching programme, launched for the non-Hindi knowing employees of the Administration, made further porgress during the year. Eight more Hindi teaching centres were started making a total of 15. Over 2200 employees learnt Hindi at these centres. Training in Hindi type-writing was given to a number of Lower Division Clerks. A new section for the compilation of statutory rules and orders to serve as a guide to the Delhi court was also set up under the charge of Secretary, Law Department.

———

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वाक्य

(THE SENTENCE)

वाक्य-रचना

वाक्य—शब्दों के उस समूह को वाक्य कहते हैं, जिससे वक्ता या लेखक का पूरा आशय प्रकट हो जाए; जैसे—अनिल पुस्तक पढ़ता है। इस शब्द समूह से वक्ता अथवा लेखक का अनिल के बारे में बताने का आशय पूरा हो जाता है। अत: यह वाक्य है। यदि यह कहा जाए—'अनिल पुस्तक' अथवा यह कहा जाए—'पुस्तक पढ़ता है' तो बात पूरी नहीं होती। 'अनिल पुस्तक' कहने से यह जानने की इच्छा बनी रहती है कि अनिल क्या करता है ? और 'पुस्तक पढ़ता है' से यह जानने की इच्छा बनी रहती है कि कौन पुस्तक पढ़ता है। अत: —

शब्दों के सार्थक समूह को वाक्य कहते हैं। वाक्य भाषा की पूर्ण इकाई है।

क्रम—ऊपर कहा गया है कि शब्दों का समूह वाक्य होता है; परन्तु शब्दों के सार्थक होने पर भी यदि उन्हें क्रम से या सिलसिलेवार न रखा जाए, तो उस शब्द समूह का अर्थ ठीक नहीं ज्ञात होता।

हिन्दी के वाक्यों में शब्दों का अधिकतया प्रचलित क्रम इस प्रकार है :—

कर्त्ता	**कर्म या पूरक**	**क्रिया**
अनिल	पुस्तक	पढ़ता है।

यदि 'है पढ़ता पुस्तक अनिल' कहा जाए तो वाक्य अशुद्ध हो जाएगा। हम किसी भी वाक्य को लें, उसमें कर्त्ता तथा क्रिया दोनों अवश्य होंगे। शेष शब्द जो भी वाक्य में प्रयुक्त किए गए होंगे, वे या तो कर्त्ता के आश्रित होंगे; या फिर क्रिया के आश्रित होंगे।

इस प्रकार हम किसी भी वाक्य को दो स्पष्ट भागों में विभक्त कर सकते हैं—

(१) उद्‌देश्य (Subject) और (२) विधेय (Predicate)

(१) उद्‌देश्य—जिसके विषय में हम कुछ कहना चाहते हैं, वह उद्देश्य (Subject) है; जैसे—'अनिल'।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(२) **विधेय**—उद्देश्य के विषय में हम जो कुछ कहना चाहते हैं, वह विधेय (Predicate) है; जैसे—'पुस्तक पढ़ता है।'

उद्देश्य-विस्तार—उद्देश्य कभी-कभी अकेला आता है; जैसे—ऊपर के वाक्य में 'अनिल'। परन्तु कभी-कभी उसकी विशेषता आदि बताने-वाले दूसरे शब्द भी उसके साथ आते हैं। इन शब्दों को उद्देश्य का विस्तार कहा जाता है; जैसे—'**मेरा पुत्र**' अनिल पुस्तक पढ़ता है। इनमें 'मेरा पुत्र' अनिल की विशेषता बतलाता है; अतः यह उद्देश्य का विस्तार है।

(क) **कर्म-विस्तार**—इसी प्रकार कर्म का भी विस्तार हो सकता है तथा क्रिया का भी; जैसे :—

विधेय-विस्तार—अपनी (अनिल अपनी पुस्तक पढ़ता है।)

(ख) **क्रिया-विस्तार**—मन लगाकर (अनिल अपनी पुस्तक मन लगाकर पढ़ता है।)

उद्देश्य	**विधेय**
मेरा पुत्र अनिल	अपनी पुस्तक मन लगाकर पढ़ता है।

इससे स्पष्ट है कि विधेय का विस्तार क्रिया, पूरक, कर्म, कर्म-विस्तार और क्रिया विशेषण आदि से होता है।

वाक्य-भेद—रचना के अनुसार वाक्य के भेद इस प्रकार हैं :—

(१) **सरल या साधारण वाक्य** (Simple Sentence)—वाक्य में यदि एक ही उद्देश्य तथा एक ही विधेय हो तो उसे साधारण वाक्य कहा जाता है; जैसे—अनिल पुस्तक पढ़ता है।

(२) **संयुक्त वाक्य** (Compound Sentence)—यदि वाक्य में दो या दो से अधिक खंड-वाक्य-स्वतन्त्र रूप से योजक (समुच्चय बोधक) द्वारा जुड़े हुए हों तो उस वाक्य को संयुक्त वाक्य कहा जाता है; जैसे—अनिल पुस्तक पढ़ता है और नीलम निबन्ध लिखती है। यहाँ 'और' योजक (समुच्चय बोधक) द्वारा दो स्वतन्त्र वाक्य जुड़े हुए हैं। दोनों वाक्यों को जोड़कर एक संयुक्त वाक्य बना दिया गया है और ये दोनों वाक्य अब उस संयुक्त वाक्य के खंड वाक्य कहलाएँगे।

(३) **मिश्रित वाक्य** (Complex Sentence)—यदि वाक्य में एक मुख्य वाक्य हो और दूसरा गौण हो तो उस वाक्य को मिश्रित वाक्य कहा जाता है; जैसे—मैंने सुना है कि अनिल पुस्तक पढ़ रहा है। इसमें 'मैंने सुना है' प्रधान या मुख्य वाक्य है तथा 'अनिल पुस्तक पढ़ रहा है' यह गौण वाक्य है। गौण वाक्य को अधीन वाक्य या आश्रित वाक्य भी कहा जाता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

'कि' योजक (समुच्चय बोधक) है जिसके द्वारा इन दो वाक्यों को जोड़कर एक वाक्य बना दिया गया है।

उपवाक्य—संयुक्त या मिश्रित वाक्य के खंड वाक्य को उपवाक्य कहा जाता है। जिस खंड वाक्य से वाक्य के अर्थ का पूर्ण बोध होता है, उसे उपवाक्य कहते हैं। उपवाक्य तीन प्रकार के होते हैं :—

(i) स्वतन्त्र उपवाक्य
(ii) प्रधान उपवाक्य
(iii) आश्रित उपवाक्य

संयुक्त वाक्य में सभी खंड-वाक्य 'स्वतन्त्र उपवाक्य' होते हैं और मिश्रित वाक्य में एक प्रधान उपवाक्य होता है तथा एक या अधिक आश्रित उपवाक्य होते हैं।

स्वतन्त्र-उपवाक्य—वह उपवाक्य है जो अपने-आप में स्वतन्त्र हो; जैसे :—

(१) अनिल पुस्तक पढ़ता है—पहला स्वतन्त्र उपवाक्य।
(२) नीलम निबन्ध लिखती है—दूसरा स्वतन्त्र उपवाक्य।
और—योजक—(समुच्चय बोधक)

प्रधान उपवाक्य (Principal Clause)—मिश्रित वाक्य के मुख्य उद्देश्य तथा मुख्य विधेय से जो खंड वाक्य बनता है, वह प्रधान उपवाक्य कहलाता है; जैसे—मैंने सुना है (कि)।

आश्रित उपवाक्य (Subordinate Clause)—जिस उपवाक्य का अर्थ प्रधान उपवाक्य पर आश्रित (निर्भर) होता है, उसे आश्रित उपवाक्य कहा जाता है।

आश्रित उपवाक्य के भी तीन भेद होते हैं—(i) संज्ञा उपवाक्य, (ii) विशेषण उपवाक्य, तथा (iii) क्रियाविशेषण उपवाक्य।

वाक्य परिवर्तन—ऊपर बताया गया है कि वाक्य तीन प्रकार के होते हैं—सरल वाक्य, संयुक्त वाक्य और मिश्रित वाक्य। इनका एक से दूसरे प्रकार में परिवर्तन करना या बदलना वाक्य-परिवर्तन कहलाता है, अर्थात् सरल वाक्य से मिश्रित या संयुक्त बनाने या संयुक्त अथवा मिश्रित को सरल वाक्य बनाने की विधि को वाक्य-परिवर्तन कहते हैं।

यह वाक्य परिवर्तन विधि कई प्रकार से प्रयुक्त की जा सकती है—कुछ उदाहरण यहाँ दिए जाते हैं—

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(क) कई सरल वाक्यों से एक सरल वाक्य बनाना—

जैसे :—

अनिल अपनी कक्षा में एक चतुर बालक हैं। उसके अध्यापक महोदय ने उसे एक पुस्तक दी। अनिल उस पुस्तक को पढ़ रहा है।

एक सरल वाक्य—अपनी कक्षा में चतुर अनिल अध्यापक महोदय द्वारा दी हुई पुस्तक पढ़ रहा है।

(ख) सरल वाक्य को मिश्रित अथवा संयुक्त बनाना—

जैसे :—

सरल वाक्य—वह पुस्तक चित्ताकर्षक है।

मिश्रित वाक्य—वह पुस्तक ऐसी है जो चित्त को आकर्षित कर लेती है।

संयुक्त वाक्य—वह एक पुस्तक है और वह चित्त को आकर्षित करनेवाली है।

(ग) मिश्रित वाक्य को संयुक्त वाक्य बनाना :—

इसमें प्राय: उपवाक्यों को पदसमूह में अथवा विशेषण और विशेष्य को पास लाकर वाक्य परिवर्तन किया जाता है; जैसे :—

मिश्रित वाक्य—जो खोजते हैं, वे पाते हैं।

इसका सरल वाक्य होगा :—

खोजनेवाले पाते हैं।

(घ) संयुक्त वाक्य को सरल वाक्य बनाना—संयुक्त वाक्य में आए मुख्य वाक्यों में से एक के अतिरिक्त शेष को पदसमूह में बदल दिया जाता है; जैसे :—

मुँह धोओ, कपड़े बदलो और भोजन कर लो।

सरल वाक्य—मुंह-हाथ धोकर कपड़े बदलकर भोजन कर लो।

साधारणत: वाक्य में पहले कर्ता, फिर कर्म और फिर क्रिया आती है; परन्तु कभी-कभी कर्ता या सम्बोधन पर ज़ोर देने के लिए उनका वाक्य के अन्त में या क्रिया से पूर्व प्रयोग होता है। परन्तु ऐसे वाक्य अपवाद ही होते हैं। उदाहरण :—

द्वापर में दुष्टों का दलन किया कृष्ण ने।

भारत को स्वाधीन कराया गाँधीजी ने।

अब आए हैं आप।

मैं आपकी दया नहीं चाहता, श्रीमान जी !

शकुन्तला ने कहा—मैं आपकी सहधर्मिणी हूँ, प्रियतम !

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अभ्यास

१. निम्नलिखित वाक्यों के उद्देश्य और विधेय अलग-अलग करो :—

(क) राम, जो इतना वीर था, नारी के विरह में बड़ा रोया।

(ख) हमारे देश के बहादुर सेनानायक आज भी भारत की रक्षा कर रहे हैं।

(ग) कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर देश के महापुरुष थे।

२. निम्नलिखित वाक्यों का विश्लेषण करो और तालिका बनाओ :—

(क) राजाराम जब घर पहुँचा तो उसका पुत्र घर से भाग चुका था।

(ख) तुम आज स्नान करके क्यों नहीं जाते ?

(ग) जो जिसको अच्छा लगता है वही उसका प्यारा होता है।

३. वाक्य के मुख्य भेद कितने हैं ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

४. मिश्रित वाक्य में आश्रित वाक्य कितने प्रकार का होता है ? प्रत्येक का उदाहरण दीजिए।

५. निम्नलिखित सरल वाक्यों के एक-एक सरल वाक्य बनाओ :—

(क) राम गेंद से खेलता है। यह गेंद उसके पिताजी ने दी है। गेंद का रंग लाल है।

(ख) जयदीप स्कूल जाता है। उसके मित्र का नाम हरिकृष्ण है। दोनों स्कूल में मन लगाकर पढ़ते हैं।

६. निम्नलिखित सरल वाक्यों के पहले मिश्रित वाक्य और फिर संयुक्त वाक्य बनाओ :—

(क) रामचन्द्र ने लंका में जाकर बानरों की सहायता से रावण का संहार किया।

(ख) होली के अवसर पर हज़ारों लोग रंग-बिरंगे कपड़े पहनकर एक दूसरे से गले मिलते हैं।

(ग) मुहावरों तथा लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा में सुन्दरता आने के साथ-साथ लेखक के कलम का धनी होने का परिचय मिलता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: २६ :

अर्थ के अनुसार वाक्य के प्रकार

(TYPES OF SENTENCES ACCORDING TO MEANING)

अर्थ के अनुसार वाक्य आठ प्रकार के होते हैं :—

वाक्य

विधा-नार्थक | इच्छा-बोधक | निषेध-वाचक | विस्म-यादि | आज्ञा-र्थक | प्रश्नार्थक | सन्देहा-र्थक | संकेता-र्थक

१. **विधानार्थक वाक्य** (Assertive Sentence)—जिस वाक्य द्वारा किसी बात का होना प्रकट हो; जैसे—

छात्र परीक्षा देने चले गए ।

२. **इच्छाबोधक वाक्य** (Illative Sentence)—जिस वाक्य के द्वारा इच्छा, आशीष या स्तुति का विधान हो; जैसे :—

आप दीर्घायु हों ।

३. **निषेधवाचक वाक्य** (Negative Sentence)—जिस वाक्य के द्वारा निषेध अथवा निन्दा प्रकट हो; जैसे :—

मैं नहीं जा सकता ।

४. **विस्मयादि बोधक वाक्य** (Exclamatory Sentence)—जिस वाक्य द्वारा विस्मय, भय, शोक आदि भाव प्रकट हों; जैसे :—

वाह ! अशोक हायर सैकण्डरी में प्रथम आ गया !

५. **आज्ञार्थक वाक्य** (Sentence Indicating Command)—जिस वाक्य द्वारा आज्ञा दी गई हो; जैसे :—

जल्दी जाओ और दो टिकट खरीद कर लाओ ।

६. **प्रश्नार्थक वाक्य** (Interrogative Sentence)—जिसके द्वारा प्रश्न किया जाए; जैसे :—

तुम यहाँ क्या कर रहे हो ?

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

७. **सन्देहार्थक वाक्य** (Sentence Indicating Doubt)—जिस वाक्य से कार्य के होने में सन्देह प्रकट हो; जैसे :—

संभवतः वह आ गया होगा।

८. **संकेतार्थक वाक्य** (Conditional Sentence)—जिस वाक्य द्वारा संकेत या अपेक्षा प्रकट हो; जैसे :—

यदि वह परिश्रम करता तो प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होता।

वाक्य-परिवर्तन

एक प्रकार के वाक्य को दूसरे प्रकार के वाक्य में बदल देना वाक्य-परिवर्तन कहलाता है। वाक्य-परिवर्तन मुख्यतः तीन प्रकार से होता है :—

१. वाच्य में परिवर्तन करके,
२. वाक्यरचना में परिवर्तन करके,
३. अर्थ के अनुसार परिवर्तन करके।

१. वाच्य-परिवर्तन द्वारा

इसमें कर्तृवाच्य वाक्य को कर्मवाच्य या भाववाच्य में अथवा कर्मवाच्य आदि वाक्य को कर्तृवाच्य में बदल दिया जाता है; जैसे :—

कर्तृवाच्य	**कर्मवाच्य**
मैंने पुस्तक को नहीं पढ़ा।	मुझसे पुस्तक नहीं पढ़ी गई।
भाववाच्य	**कर्तृवाच्य**
मुझ से सोया नहीं गया।	मैं सो नहीं सका।
कर्मवाच्य	**कर्तृवाच्य**
गौओं को खोल दिया गया।	ग्वालों ने गौओं को खोल दिया।

२. वाक्य-रचना में परिवर्तन करके

इसमें या तो वाक्य-संकोचन या वाक्य-विस्तार कर दिया जाता है, अथवा, सरल वाक्य को मिश्रित, संयुक्त आदि वाक्यों में बदल दिया जाता है, या संयुक्त मिश्रित वाक्य को सरल वाक्य में या संयुक्त को मिश्रित वाक्य में बदल दिया जाता है। यह पिछले अध्याय में समझाया गया है।

वाक्य-संकोचन

अनिल ने रोटी खाई। वह स्कूल को चला। मार्ग में बाग के दृश्य देखता जाता था। स्कूल में पहुँचकर वह पढ़ने में मग्न हो गया।

रोटी खाकर अनिल बाग के दृश्य देखते हुए स्कूल पहुँचा और पढ़ने में मग्न हो गया।

वाक्य-विस्तार

मुनाफाखोरी अक्षम्य अपराध है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उचित से अधिक मुनाफ़ा कमाना ऐसा अपराध है जिसे क्षमा नहीं किया जा सकता।

रचना में परिवर्तन

साधारण वाक्य	मिश्रित वाक्य	संयुक्त वाक्य
बालक खेलता है। माँ उसे देखती है।	माता देखती है कि बालक खेलता है।	माता देखती है और बालक खेलता है

३. अर्थ के अनुसार परिवर्तन करके

विधानार्थक वाक्य	प्रश्नार्थक वाक्य
अशोक लिखता है।	क्या अशोक लिखता है ?
आज वर्षा होगी।	क्या आज वर्षा होगी ?
सदा सच बोलना चाहिए।	क्या सदा सच बोलना चाहिए ?
राम वन को गए।	क्या राम वन को गए ?
भारत अपनी रक्षा में समर्थ है।	क्या भारत अपनी रक्षा में समर्थ है?

प्रश्नार्थक	विधानार्थक
क्या तुम पढ़ रहे हो ?	मैं पढ़ रहा हूँ।
क्या तुम पास हो गए ?	मैं पास हो गया हूँ।
क्या बालक खेल रहा है ?	बालक खेल रहा है।

विधानार्थक	निषेधार्थक
बालक खेल रहा है।	बालक खेल नहीं रहा है।
वह उत्तीर्ण हो गया।	वह उत्तीर्ण नहीं हुआ।

निषेधार्थक	विधानार्थक
वह नहीं आया।	वह आ गया है।
वह उत्तीर्ण नहीं हुआ।	वह उत्तीर्ण हो गया है।

आज्ञार्थक	इच्छार्थक
अशोक, लिख।	अशोक लिखे तो अच्छा हो।
जाओ, अपना काम करो।	अपना काम करना उचित है।

विधानार्थक	विस्मयादि बोधक
मोहन पास हो गया।	हैं ! मोहन पास हो गया !
मूसलाधार वर्षा हो रही है।	मूसलाधार वर्षा हो रही है !

संकेतार्थक	विस्मयादि बोधक
यदि अनिल परिश्रम करे तो प्रथम आ सकता है।	वाह ! अनिल इतना परिश्रम करके प्रथम आने का प्रयत्न कर रहा है !

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अभ्यास

१. नीचे लिखे वाक्यों को मिश्रित या संयुक्त वाक्यों में परिवर्तित कीजिए :—

(क) राम पुस्तकालय में आया। उसने एक सुन्दर पुस्तक पढ़ी।

(ख) वह लिखने का अभ्यास करके अच्छा लेखक बनना चाहता है।

२. नीचे लिखे वाक्यों को साधारण वाक्यों में परिवर्तित कीजिए :—

(क) उसने कहा कि अशोक परिश्रम कर सकता है।

(ख) अध्यापक महोदय ने कहा कि नरेश अवश्य परीक्षा में उत्तीर्ण होगा।

३. नीचे लिखे वाक्यों को भिन्न अर्थों मे पारवातत कीजिए :—

(क) क्या तुम कल वहाँ गीता पढ़ रहे थे ?

(विधानार्थक, निषेधार्थक, संकेतार्थक तथा विस्मयार्थक में परिवर्तित करो।)

(ख) लता ने आज ही पत्र लिखा है।

(प्रश्नार्थक, निषेधार्थक, आज्ञार्थक, इच्छार्थक में बदलो।)

(ग) तुम अवश्य सफल हो जाओगे।

(इच्छार्थक, संदेहार्थक, निषेधार्थक, प्रश्नार्थक में बदलो।)

(घ) उसने काम नहीं किया।

(सन्देहार्थक, प्रश्नार्थक, विस्मयार्थक में बदलो।)

(ङ) वह एक वीर पुरुष है।

(प्रश्नार्थक, निषेधार्थक, सन्देहार्थक में बदलो।)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: २७ :

अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करने की विधि

(CORRECTION OF INCORRECT SENTENCES)

(१)

	अशुद्ध	शुद्ध
१.	मैंने पाँच लड्डू खाया।	मैंने पाँच लड्डू खाए।
२.	मौसम बहुत सुहानी है।	मौसम बहुत सुहाना है।
३.	फूलों की सौन्दर्यता देखते ही बनती है।	फूलों का सौन्दर्य देखते ही बनता है।
४.	कल्लू कितना कृतघन है।	कल्लू कितना कृतघ्न है।
५.	रावण घोर निर्दयी था।	रावण घोर निर्दय था।
६.	उपरोक्त शब्दों का अर्थ लिखिए।	उपर्युक्त शब्दों के अर्थ लिखिए।
७.	हमने हमारा पाठ नहीं पढ़ी।	हमने अपना पाठ नहीं पढ़ा।
८.	तुम मेरे को अपनी पुस्तक दे दो।	तुम मुझे अपनी पुस्तक दे दो।
९.	नदी का प्रबल वेग नौका को दूर वहा ले गई।	नदी का प्रबल वेग नौका को दूर वहा ले गया।
१०.	लोक सभा की चुनाव अगले वष नहीं होगी।	लोकसभा का चुनाव अगले वर्ष नहीं होगा।
११.	हम आपके घर कल आएगा।	हम आपके घर कल आयेंगे।
१२.	बालक मिठाई खाकर खुशी होते हैं।	बालक मिठाई खाकर खुश होते हैं।
१३.	जो काम करो वह पूरा ज़रूर करो।	जो काम करो उसे पूरा ज़रूर करो।
१४.	हमने रात को खूब सोया।	हम रात को खूब सोए।
१५.	नरेन जल खाता है।	नरेन जल पीता है।
१६.	उसकी विद्यालय मेरी घर से दूर है।	उसका विद्यालय मेरे घर से दूर है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

	अशुद्ध	शुद्ध
१७.	आज उसने विद्यालय नहीं जाना।	आज उसे विद्यालय नहीं जाना। (अथवा—वह आज विद्यालय नहीं जाएगा)।
१८.	मैं मेरा काम करता है।	मैं अपना काम करता हूँ।
१९.	यह नमूना मेरे को पसन्द नहीं।	यह नमूना मुझे पसन्द नहीं।
२०.	तुम्हारी कहानी तुम ही सुनाओ न!	अपनी कहानी तुम्हीं सुनाओ न!

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके अपनी कापी पर लिखिए :—

१. माली बाग से फल ला रही है।
२. यहाँ अनुत्तीर्ण तथा फेल छात्रों की पढ़ाई का उत्तम प्रबन्ध है।
३. मैं आकाशवाणी के रोज़ कार्यक्रमों को सुना करता हूँ।
४. वह एक अच्छा लड़की है।
५. अच्छे लड़का को इधर लाओ।
६. लता से कह दो कि आज बाहर न जाओ।
७. जब तक अध्यापिकाजी न आए तब तक न जाऊँगी।
८. हम देखें या न देखें, सब क्लर्क अपना काम करता जाता है।
९. चालक से कहो मेरी मोटर तैयार रखो।
१०. चपरासी को हुक्म दो फाइल ले आओ।
११. मेरे मद्रासी मित्र को अमृतसर में सिर्फ़ रोटियाँ ही खाना पड़ा।
१२. उसकी शरीर मेरे शरीर से छू गई।
१३. इसका यहाँ प्रश्न ही नहीं उठने सकता।
१४. इस काम में दस क्लर्क लगे हुए हैं।
१५. वीर लोगों के लिए संसार में कुछ भी सम्भव नहीं है।

(२)

१.	प्रत्येक व्यक्तियों को यह कर्त्तव्य है।	प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है।
२.	प्रेमचन्द का लेखनी माना हुआ हैं।	प्रेमचन्द की लेखनी मानी हुई है।
३.	वह अपना काम ठीक से करें।	वह अपना काम ठीक तरह से करे।
४.	किसान ने ज्वार बोया है।	किसान ने ज्वार बोई है।
५.	किसानों ने बाजरा बोई है।	किसानों ने बाजरा बोया है।
६.	हमें हर एक छोटी-मोटी बातें सोचनी होंगी।	हमें हर एक छोटी-मोटी बात सोचनी होगी।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अशुद्ध	शुद्ध
७. अशोक इस काम के अयोग्य हैं।	अशोक इस काम के अयोग्य है।
८. रवीन्द्रनाथ ठाकुर महाकवि था।	रवीन्द्रनाथ ठाकुर महाकवि थे।
९. कृपया मेरे पत्र पर ध्यान देने की कृपा करें।	मेरे पत्र पर ध्यान देने की कृपा करें। (अथवा—कृपया मेरे पत्र पर ध्यान दें।)
१०. अभी-अभी पुलिस का रिपोर्ट मिली है।	अभी-अभी पुलिस को रिपोर्ट मिली है।
११. रेडियो आम जनता में प्रचार की अच्छी साधन है।	रेडियो आम जनता में प्रचार का अच्छा साधन है।
१२. मेरे पिताजी कल को आएँगे।	मेरे पिताजी कल आएँगे।
१३. उसके निबन्ध में अनेकों भूलें थीं।	उसके निबन्ध में अनेक भूलें थीं।
१४. सबोंने मेरे काम की हाँ कर दी।	सब ने मेरे काम की हाँ कर दी।
१५. लता कही रही।	लता ने कहा था।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :—

१. जब हम बोल रहे तब आपने ध्यान क्यों नहीं दिया ?
२. दुर्घटना में चार स्त्री और दो बच्चों को चोटें आईं।
३. देसी दवाइयाँ भी कई बहुत अच्छी हैं।
४. यह सुनकर मैं विस्मय हुआ।
५. शोक है कि आपने मेरे पत्र का उत्तर नहीं दिया।
६. कृपया करके मेरा नाम भी लिख लीजिए।
७. यह खेल भी अच्छी है और व्यायाम भी अच्छी है।
८. तुम प्रातःकाल के समय उठकर क्या करते हो ?
९. क्या यह आवश्यकीय है कि हम योगासन करें ?
१०. बंगला देश में इतना अत्याचार हुआ जैसा नादिरशाह ने भी न किया था।

———

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: २७ :

वार्तालाप (संवाद-लेखन)

(DIALOGUE WRITING)

परस्पर की गई बात-चीत को ही वार्तालाप कहते हैं। वार्तालाप में संवादों का विशेष स्थान है। सजीव संवाद वार्तालाप को आकर्षक बना देते हैं। प्राणवान संवाद कहानी और नाटकों की सफलता के लिए तो नितान्त आवश्यक हैं। अतः विद्यार्थियों को सुन्दर वार्तालाप के लिए संवाद रचना का सम्यक् ज्ञान होना आवश्यक है। संवाद लिखने में निपुणता प्राप्त करने के लिए निम्न बातें सदा ध्यान में रखनी चाहिए।

(१) संवाद छोटे-छोटे और चुस्त हों।

(२) संवाद रोचक हों।

(३) संवादों का आरम्भ और अन्त आकर्षक हो।

(४) संवाद सरल और बोल-चाल की भाषा में हों।

(५) संवादों में पर्याप्त स्वाभाविकता हो।

(६) संवाद व्यंग्य और विनोद से ओत-प्रोत हों।

(७) संवाद विषय को गति प्रदान करनेवाले हों।

(८) संवाद पात्रानुकूल और उपयुक्त हों।

(९) संवादों की भाषा सुबोध और सरल हो।

(१०) संवाद हृदयस्पर्शी और भावुकता को लिए हों।

विद्यार्थियों के लाभार्थ हम संवादों से युक्त कुछ रोचक वार्तालापों के नमूने यहाँ प्रस्तुत करते हैं।

"फल बेचनेवाले और ग्राहक में वार्तालाप"

ग्राहक—क्यों भाई फलवाले, तुम्हारे पास अच्छे फल भी हैं ?

फलवाला—बाबूजी ! देखिए न, फलों से दुकान भरी पड़ी है, मेरे पास हर तरह के फल हैं—आम, ख़रबूज़े, सेब, अंगूर, नाशपाती, लीची, आड़ू, सभी कुछ तो मेरी दुकान पर है, पर आप बताइए आपको कौन-से फल खरीदने हैं।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ग्राहक—मुझे तो आम और खरबूज़े ही खरीदने हैं।

फलवाला—कहिए कितने तोल दूं। पाँच किलोग्राम आम और पाँच किलोग्राम खरबूज़े तोल देता हूँ—ले जाइए, खाते वक्त मुझ नाचीज़ को याद करेंगे।

ग्राहक—अरे भाई मैं इतने आम और खरबूज़े लेकर क्या करूँगा, मुझे क्या कोई दुकान लगानी है ? मुझे तो अपने लिए फल खरीदने हैं।

फलवाला—अच्छा तो बताइए कितने तोल दूं ?

ग्राहक—देने से पहले फलों का मोल-भाव तो कर लो।

फलवाला—मोल-भाव क्या करना, यह समझ लीजिए आम और खरबूज़े कौड़ियों के मोल बेच रहा हूँ। इस कीमत पर ये फल पूरे बाज़ार में आपको नहीं मिलेंगे।

ग्राहक—फिर भी यह तो बताओ आम और खरबूज़े किस भाव बेचे हैं ?

फलवाला—आम पाँच रुपये किलोग्राम हैं और खरबूज़े दो रुपये किलोग्राम।

ग्राहक—भाई तुम ज़्यादा दाम बोल रहे हो—इतने महँगे तो हम नहीं खरीदगे।

फलवाला—चलो बाबूजी, दस-बीस पैसे कम लगा लो, मुझे तो आपकी ही बौहिनी करनी है; कम मुनाफा ले लूंगा; मुझे कौन धन बाँध कर अपने साथ ले जाना है। बोलिए कितने दूं।

ग्राहक—तुमने यह तो बताया नहीं कि यह कौन-सा आम है ?

फलवाला—बाबूजी ये बनारसी लँगड़ा है—सब आमों का राजा। इसे देखते ही बड़े-बड़ों के मुँह में पानी भर आता है, और ये मीठे खरबूज़े अम्बाले और सोनीपत के हैं।

ग्राहक—ये आम और खरबूज़े मीठे भी निकलेंगे या देखने में ही सुन्दर हैं ?

फलवाला—बाबूजी, दोनों को काट कर देख लो, मिश्री हैं मिश्री। पूरे बाज़ार का चक्कर लगा आइए, इतने बढ़िया आम, खरबूज़े कहीं और मिल जाएँ तो मैं मुफ़्त दे दूंगा।

ग्राहक—अरे भाई, मुफ्त में दे डालोगे तो अपना पेट कैसे भरोगे !

फलवाला—अजी साहब, पेट भरनेवाला तो भगवान् है; जिसने पेट दिया है वह भरेगा भी; हमें तो आपको खुश करना है।

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ग्राहक—बात करने में तुम बड़े चतुर हो। चलो लेने तो मुझे एक किलोग्राम आम और एक किलोग्राम खरबूज़े थे—पर अब तुम दो किलोग्राम आम और दो किलोग्राम खरबूज़े तोल दो। पर यह समझ लो, तोल ठीक हो।

फलवाला—बाबूजी, आपने क्या बात की है ? हम मूल्य अधिक ले लेंगे, पर कम तोलना पाप समझते हैं। आपकी नज़र से बच गये तो क्या, आखिर भगवान् तो देखनेवाला है।

"कंजूस सेठ और भिखारी का वर्तालाप"

भिखारी—माई-बाप, इस दीन भिखारी को भी कुछ मिल जाए, भगवान् आपका भला करेंगे—गरीब लाचार को दान करने से बड़ा पुण्य मिलेगा।

कंजूस सेठ—चल, चल ! जाकर कहीं काम क्यों नहीं करता। आ गया है भीख माँगने, जैसे तेरे बाप ने बहुत धन कमाकर मुझे दे दिया था न।

भि०—सेठ जी भूखा हूँ, कई दिनों से खाना नहीं खाया। दो रोटी का सवाल है—मिल जाए तो इस मरते के प्राण बच जाएँगे। भगवान आपको जुग-जुग जीवित रखें।

कं० से०—अबे ! एक बार कह दिया, यहाँ से चलता बन। मेरे पास कुछ नहीं है देने को। पता नहीं तुम जैसे लोगों को पुलिस क्यों नहीं पकड़ती ? जीना दूभर कर दिया है इन्होंने।

भि०—(गिड़गिड़ाते हुए) सेठजी, इस गरीब-मोहताज को कुछ दे देने से आपके भंडारे में कोई कमी नहीं आएगी। सागर में से एक बूंद निकल जाए तो सागर खाली नहीं हो जाता। अन्नदाता, थोड़े अन्न का सवाल है, पूरा हो जाए।

कं० से०—आया है मुझे उपदेश देने, एक बार नहीं हज़ार बार कह दिया, मेरे पास तुझे देने के लिए कुछ नहीं है, बस चलता बन यहाँ से नहीं तो नौकर से धक्के देकर बाहर निकलवा दूंगा।

भि०—सेठ जी क्यों नाहक गर्म होते हो—माया से इतना मोह अच्छा नहीं, भगवान् सबका न्याय करनेवाला है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

कं० से०—मुझे भगवान् का डर दिखाता है न्याय और अन्याय की बातें करता है। अभी तुझे इस सब का मज़ा चखाता हूँ।

भि०—सेठ जी ! बस आपके पास कठोर शब्द ही देने को हैं और कुछ नहीं। भगवान् आपका कल्याण करे, आपको सही मार्ग दिखाए।

कं० से०—(हँसता है) भगवान् आपको सही मार्ग दिखाए, आया है मार्ग दिखानेवाला, भिखमंगा कहीं का।

अभ्यास

नीचे लिखे विषयों पर वार्तालाप लिखिए :—

१. डॉक्टर और मरीज़ में बातचीत।
२. हलवाई और ग्राहक में वार्तालाप।
३. अध्यापक और विद्यार्थी में बातचीत।
४. मैच के दर्शकों में परस्पर वार्तालाप।
५. यात्री और टिकट बाबू में वार्तालाप।
६. सब्ज़ी बेचनेवाली मालिन और ग्राहक की बातचीत।
७. दो मित्रों की किसी फिलम के बारे में बातचीत।
८. दो सहेलियों की किसी त्यौहार की तैयारी के बारे में बातचीत।
९. पुस्तक-विक्रेता और खरीदनेवाले विद्यार्थी में बातचीत।
१०. पुलिसमैन और ट्रैफिक के नियमों का पालन न करनेवाले साइकिल सवार में बातचीत।
११. पोस्टमैन और मनीआर्डर पानेवाले में बातचीत।

———

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: २८ :

सार लेखन तथा अपठित गद्यांश

(PRECIS WRITING AND UNSEEN PASSAGE)

विद्यार्थियों को सारे लेखन की विधि का उचित ज्ञान होना आवश्यक है। किसी भी अवतरण का सार अथवा आशय लिखते समय निम्नलिखित बातें सदा ध्यान में रखनी चाहिए।

(१) सार से अभिप्राय है, संक्षेप में उन बातों को कहना जो कि अवतरण में विस्तार से कही गई हैं। साधारणतः सार मूल अवतरण का एक-तिहाई होना चाहिए।

(२) लिखने से पूर्व अवतरण को ध्यान से कई बार पढ़ना चाहिए और उसमें दिए गए तथ्यों को रेखांकित कर लेना चाहिए। इस बात का भी पूरा ध्यान रखना चाहिए कि सार में केवल आवश्यक बातें ही लिखी जाएँ और अनावश्यक बातों को छोड़ दिया जाए।

(३) सार सरल, सुबोध और अपने शब्दों में ही लिखा जाना चाहिए। भाषा ऐसी हो जो कि अवतरण के भावों को स्पष्ट कर सके। तात्पर्य है कि हमें सार में बातों को खूब समझा कर कहना है।

(४) सार में अपनी ओर से उदाहरण देने तथा तुलनात्मक विवेचन करने की आवश्यकता कतई नहीं है।

(५) जिस अवतरण का सार लिखें उसका शीर्षक अवश्य दें। बिना शीर्षक के सार अपूर्ण माना जाता है। शीर्षक छोटा और उपयुक्त हो। प्रायः देखा गया है कि शीर्षक के लिए उचित शब्द अवतरण के आरम्भ और अन्त की पंक्तियों में मिल जाते हैं।

(६) यदि रेखांकित शब्दों के अर्थ पूछे गए हैं तो प्रसंग के अनुसार ही उनके अर्थ लिखे जाने चाहिए।

(७) प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में देने चाहिए तथा जो प्रश्न पूछा गया हो उसी के अनुसार उत्तर देना चाहिए।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

सार लेखन और प्रश्नोत्तर के लिए कुछ अवतरण यहाँ उद्धृत किए जाते हैं। कथित नियमों के आधार पर उनका सार लिखिए तथा पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

उदाहरण—१

"अपठित गद्यांश"

समाज साधारणतः तीन वर्गों में बँटा हुआ बताया गया है—उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग और निम्न वर्ग। लेकिन महत्त्व की दृष्टि से वर्गों का यह क्रम उलट देना होगा। अर्थात्, तब निम्न वर्ग सबसे पहले आएगा और अन्य वर्गों की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण प्रमाणित होगा। वही वर्ग समाज रूपी शरीर की नस है, जिससे होकर शुद्ध और ऊष्ण रक्त समाज के शरीर में दौड़ता है और उसमें जीवन की लाली और ऊष्णता कायम रहती है। यदि श्रम करनेवाला यह वर्ग न हो तो समाज पाण्डु रोग से पीड़ित हो जायेगा। भारतीय समाज में निम्न वर्ग के इस महत्त्व को ध्यान में रखकर ही महात्मा गाँधी या अन्य नेताओं ने इसके उद्धार को अपना सर्वप्रमुख लक्ष्य बनाया है।

प्रश्न—

(१) उक्त गद्यांश का शीर्षक और सार लिखिए।

(२) अवतरण के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(क) समाज कितने वर्गों में बँटा हुआ है ? समाज का सबसे महत्त्वपूर्ण वर्ग कौन-सा है ?

(ख) निम्न वर्ग के अभाव में समाज को क्या क्षति पहुँचेगी ?

(ग) गाँधीजी ने निम्न वर्ग के लिए क्या किया ?

उत्तर—

१. गद्यांश का सार

भारतीय समाज के उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग में से अन्तिम वर्ग सबसे महत्त्वपूर्ण है। यही श्रम करनेवाला वर्ग समाज को स्वस्थ रखता है और उसे रोगी (बुरा) होने से बचाता है। महामानव गाँधी तथा अन्य नेताओं ने इसी वर्ग को पहचान करके इसके उत्थान के लिए कार्य किया।

शीर्षक—"समाज का प्राण—निम्न वर्ग।"

२. (क) समाज तीन वर्गों में बँटा है, उच्च, मध्यम और निम्न वर्ग। निम्न वर्ग समाज का महत्त्वपूर्ण वर्ग माना जाता है।

(ख) निम्न वर्ग के अभाव में समाज मुर्दा दिखलाई पड़ता है। निम्न

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

वर्ग के न होने से समाज के अन्य वर्गों को अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़ते हैं। निम्न वर्ग ही समाज के चेहरे की शोभा है।

(ग) गाँधीजी आजीवन निम्न वर्ग के उद्धार के लिए प्रयत्न करते रहे। उन्होंने नीच कहे जानेवाले अछूतों की महान् सेवा की।

उदाहरण—२

अपठित गद्यांश

मनुष्य के लिए **प्रतिभा** नहीं, उद्देश्य आवश्यक है। विश्वास करिए, आँख मीच कर फेंका हुआ तीर अपना लक्ष्य नहीं **बेध** सकता; **अन्धे** होकर भागने से मार्ग नहीं कट सकता; आँख मूँद कर बेमौसम बीज फेंकनेवाला किसान कभी सफल नहीं होता। भला आप उस व्यक्ति के बारे में क्या सोचेंगे जो गाड़ी में सवार होने के लिए स्टेशन पर पहुँचा हुआ है, पर जिसे यह नहीं मालूम कि उसे कहाँ जाना है। हम सब भी विश्व के **रंगमंच** पर आए हुए हैं। जीवन की नौका को संसार में खेने से पूर्व हमें जान लेना चाहिए कि हमें जाना कहाँ है। अतः हम अपनी इन बन्द आँखों को खोल लें, उद्देश्य बनाएँ और चल पड़ें। जिस नाविक ने लक्ष्य स्थिर नहीं किया उसके अनुकूल हवा कभी नहीं चलेगी। तुम **शव** नहीं हो कि संसार-सागर की लहरें जिस किनारे चाहें तुम्हें पटक दें; **परिस्थितियाँ** जिधर चाहें ले चलें। भाग्य के नाम पर तुमको प्रवाह में बहना नहीं है अपितु प्रवाह का रुख बदलना है।

प्रश्न—

१. गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए।
२. अपठित गद्यांश का आशय संक्षेप में अपने शब्दों में लिखिए।
३. सफल जीवन के लिए किस बात की आवश्यकता है ?
४. काले छपे शब्दों के अर्थ लिखिए।

उत्तर—

(१) शीर्षक—(अ) जीवन और उद्देश्य। (ब) लक्ष्यहीन जीवन।

(२) अपठित गद्यांश का सार—
निरुद्देश्य जीवन निरर्थक होता है। जीवन का कोई आदर्श होना चाहिए। मनुष्य को परिस्थितियों के वश में न होकर परिस्थितियों को अपने वश में करना चाहिए, तभी जीवन में सफलता प्राप्त हो सकती है।

(३) सफल जीवन के लक्ष्य को स्थिर करना नितान्त आवश्यक है। लक्ष्यहीन व्यक्ति को सदा असफलता ही हाथ लगती है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उत्तर—

(४) काले छपे शब्दों के अर्थ—

प्रतिभा—विशेष बुद्धि या योग्यता	वेधना—छेदना
रंगमंच—नाट्य-स्थल	शव—मृत शरीर
परिस्थितियाँ—हालात ।	अन्धे होकर—बिना देखे-भाले

अभ्यास के लिए कुछ गद्यांश

१. हारा हुआ व्यक्ति वह नहीं जो अपने प्रयत्न में सफल नहीं हुआ; हारा हुआ व्यक्ति वह है जिसने आत्मविश्वास खो दिया है । मुर्दा वह नहीं जो मर गया है, मुर्दा वह है जिसका आत्मविश्वास मर गया है । शक्ति के विश्वास नें ही शक्ति है । आत्मविश्वास के अंकुर से ही प्रयत्न का पौधा फूटता है और प्रयत्न के पौधे पर ही सफलता के फल लगते हैं । अपने प्रयत्न को इस आधार पर स्थापित करो कि हमको अवश्य सफल होना है । सफलता हमें मिलकर रहेगी । अगर तुम्हें यही विश्वास नहीं कि तुम मंज़िल पर पहुँच सकते हो, तो तुम चलोगे कैसे ? आत्मविश्वास के क्षेत्र में शंका, सन्देह, असफलता, निराशा आदि शब्दों की कोई गुंजाइश नहीं । वहाँ प्रश्नवाचक चिह्न तो होता ही नहीं । मैं चलूँ, या न चलूं, शायद मुझे सफलता न मिले; यह तो असम्भव है, किया जाए या न किया जाए इत्यादि सन्देहों की कोई सम्भावना नहीं ।

ऊपर दिये गये गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(अ) उक्त गद्यांश का अपने शब्दों में सार तथा शीर्षक लिखिए ।

(ब) हारा व्यक्ति कौन है ?

(स) सफलता पाने के लिए किन वस्तुओं की गुंजाइश नहीं ?

२. हम उन पतंगों के समान हैं, जो धधकती ज्वाला में प्रवेश करते हैं, यह जानकर कि वह हमें जला डालेगी, यह जानकर कि इन्द्रियाँ हमें केवल जलाती हैं, वे केवल वासनाओं में वृद्धि करती हैं । वासनाएँ कभी भोग से तृप्त नहीं होतीं, भोग से वासनाओं की उसी तरह वृद्धि होती है, जैसे अग्नि में डाला हुआ घी अग्नि को अधिक प्रज्ज्वलित करता है । वासना से वासना बढ़ती है । यह सब जानते हुए भी लोग सदा इसमें डुबकी लगाते रहते हैं । जन्म-जन्मान्तरों से वे वासना की वस्तुओं के पीछे दौड़ते रहे हैं, और इसके फलस्वरूप भयंकर यातनाएँ भोगते रहे हैं । फिर भी वे वासनाओं से पीछा नहीं छुड़ा पाते । जिस धर्म को उन्हें वासनाओं के इस भयंकर बन्धन से मुक्त करना चाहिए था उस धर्म को ही उन्होंने अपनी वासनाओं की पूर्ति का साधन बना लिया है ।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उक्त गद्यांश का सारांश लिखिए तथा उसे एक उचित शीर्षक दीजिए।

३. जीवन की कला ठूँठ की तरह खड़े होकर सड़ने में नहीं है। यह पेड़ जो अपनी जवानी में ही सड़ गया, जानते हो क्यों ? क्योंकि इसकी जड़ों ने रस लेना बन्द कर दिया था। जीवन में लहलहाने का एक ही तरीका है कि उसे विभिन्न रसों को लेने दो। एक विशेष विषय में निपुण होने का तात्पर्य यह नहीं है कि तुम फुटबाल के ग्राउण्ड में मत जाओ; व्यापार में इतने तल्लीन मत हो जाओ कि बच्चों को भूल जाओ; पुस्तकों के कीड़े मत बन जाओ कि यार-दोस्तों की हँसी बुरी लगने लगे। जीवन में विविध रस लेना सीखो और इतना रस लो कि बुढ़ापे की झुर्रियों में उदासीनता और निराशा की एक झुर्री भी न पड़े। रहने का तरीका यही है कि गले में संगीत हो, होठों पर मुस्कराहट हो, आँखों में हँसी हो, हृदय में उमंग हो और इस प्रकार गाते हुए बढ़ो; हँसते हुए मिलो, मुस्कराते हुए विदा लो।

उक्त गद्यांश को पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए—

(अ) गद्यांश का लगभग एक-तिहाई शब्दों में सार लिखिए और उसे उचित शीर्षक दीजिए।

(ब) 'जीवन में विविध रस लेना सीखो' से क्या तात्पर्य है ?

(स) रहने का ठीक तरीका क्या है ?

४. अगर तुम भविष्य को अपनी मुट्ठी में बन्द करना चाहते हो तो समय के प्रत्येक क्षण का उपयोग करो। प्रत्येक क्षण तुम्हारी प्रगति का क्षण है। जीवन की दौड़ वास्तव में इसी काल में आरम्भ होती है। जिन विद्यार्थियों की दृष्टि दूर भविष्य के क्षितिज में अपने लक्ष्य को ढूँढ़ने में लगी होती है, वे विश्राम नहीं किया करते। विद्या चाहनेवालों को सुख कहाँ और सुख चाहनेवाले को विद्या कहाँ ? श्रम की एक सहचरी लक्ष्मी है तो दूसरी सरस्वती। श्रम के एक कन्धे का सहारा लक्ष्मी ने लिया हुआ है तो दूसरे का सरस्वती ने। नववधु रूपी भाग्यश्री का मुख आँचल से ढका हुआ है। वह नगरों में घूमती है, गाँवों में जाती है; अट्टालिकाओं में रमण करती है, कुटियाओं में भटकती है, खेतों-खलियानों में जाती है, कुंजों में विचरती है और प्रत्येक विद्यार्थी के कमरे में जाती है; और जिस विद्यार्थी के माथे पर परिश्रम की बूंदें देखती है उसकी बगल में बैठ जाती है। जो विद्यार्थी अपने परिश्रमी हाथ से इस वधु का घूंघट हटाता है, उसे ही यह वरमाला पहना देती है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

उक्त गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर दीजिए :—

(क) गद्यांश का सार लिखिए और इसे उचित शीर्षक दीजिए।

(ख) सफलता किसे मिलती है ?

(ग) श्रम का क्या महत्त्व है ?

५. संसार के इतिहास में वे ही क्षण जीवित हैं, जिनका विकास साहस से हुआ है; शेष सब काल के पेट में समा गए। साहस जीवन की गति है, विश्व का विकास है, मानवता का उत्थान है। साहस शारीरिक शक्ति का नाम नहीं, अपितु आत्मा की शक्ति का नाम है। प्रबल विचार शक्ति ही साहस है; और जब शक्ति शरीर को आज्ञा देती है तो उसकी आज्ञा के सामने इस पार्थिव शरीर को आग मे कूदना पड़ता है, पानी में डूबना पड़ता है, फाँसी के तख्ते पर लटक जाना पड़ता है, जहर का प्याला पीना पड़ता है और मौत का आलिंगन करके आराम से लेट जाना पड़ता है। इस प्रकार कोई भी व्यक्ति अपने अटल साहस से स्वयं सदा के लिए जीवित हो गया तथा अपने साहस के क्षणों को इतिहास के लिए स्थायी बना गया।

उक्त गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए :—

(क) गद्यांश का सार लिखिए तथा इसे उचित शीर्षक दीजिए।

(ख) क्या साहस का सम्बन्ध शारीरिक शक्ति से है ?

(ग) संसार के इतिहास में कौन-से क्षण जीवित हैं ?

———

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: २९ :

कहानी रचना

(STORY WRITING)

कहानी एक लघु रचना है। मनोरंजन की दृष्टि से आज के व्यस्त जीवन में इसकी वहुत उपयोगिता है। कहानी में सम्पूर्ण जीवन का चित्रण नहीं होता, बल्कि प्रसिद्ध कहानीकार प्रेमचन्द के शब्दों में "कहानी में जीवन के किसी एक अंग की झलक मात्र या किसी मनोभाव का चित्रण किया जाता है।" अतः यह स्पष्ट है कि कहानी में अनावश्यक विस्तार के लिए स्थान नहीं होता। कहानी की कथावस्तु, संवाद, पात्र तथा उनका चरित्र-चित्रण इत्यादि सब सूक्ष्म ढंग से किया जाता है। कहानी लेखन एक कला है और उसके मुख्य तत्व हैं—(१) कथानक, (२) पात्र, (३) संवाद, (४) शैली। किसी घटना या मनोभाव को कथावस्तु कहते हैं, घटना का सम्बन्ध जिन व्यक्तियों से होता है वे पात्र कहलाते हैं, पात्रों के वार्तालाप को संवाद कहते हैं और कहानी लिखने का ढंग उसकी शैली होती है।

यह आवश्यक नहीं कि छोटी-छोटी कहानियों में ये सब तत्व उचित रूप से विद्यमान हों। यहाँ हम कहानी-कला का विस्तार से विवेचन न करके केवल उन लघु-कथाओं का उल्लेख करेंगे जो रूपरेखा और दिए गए संकेतों के आधार पर लिखी जाती हैं और विद्यार्थियों के लिए परीक्षा की दृष्टि से आवश्यक हैं। कहानी लिखते समय विद्यार्थियों को जिन बातों का ध्यान रखना चाहिए वे इस प्रकार हैं :

(१) कहानी के संकेत और रूपरेखा को ध्यान से पढ़ना चाहिए। तत्पश्चात् संकेतों के आधार पर कहानी का विस्तार करना चाहिए।

(२) कहानी में केवल आवश्यक घटनाओं का ही समावेश हो।

(३) कथा का आरम्भ सुन्दर और आकर्षक ढंग से होना चाहिए।

(४) कहानी के संवाद छोटे-छोटे और चुस्त होने चाहिए पर संवादो में कही हुई बात को दोबारा कहने की प्रवृत्ति नहीं होनी चाहिए। कहानी वेग से अपने लक्ष्य की ओर बढ़नी चाहिए।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(५) कहानी का अन्त स्वाभाविक ढंग से और भाव चरम सीमा पर होना चाहिए।

(६) कहानी का शीर्षक अवश्य देना चाहिए।

(७) कहानी के अन्त में उससे मिलनेवाली शिक्षा का लिखना सदा आवश्यक नहीं है। वस्तुतः कहानी पढ़ते-पढ़ते पाठक उसके सन्देश को ग्रहण करता चले और निष्कर्ष के रूप में उससे आवश्यक शिक्षा प्राप्त करे, यह अत्यावश्यक है।

(८) कहानी की भाषा सरल, सुबोध, स्वाभाविक और सजीव होनी चाहिए।

उत्तम कहानी लिखने के लिए निरन्तर प्रयास और अभ्यास की आवश्यकता है। यहाँ हम विद्यार्थियों के अभ्यास के लिए कुछ कहानियों के संकेत और उनकी रूप-रेखा प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्रश्न—

निम्नलिखित संकेतों के आधार पर 'बेईमान हलवाई और बालक की कथा' की पूर्ति कीजिए—

उत्तर—

बेईमान हलवाई—कम मिठाई तोलता—पैसे पूरे लेता—लड़का मिठाई लेने आया—कम तोली—लड़के ने शिकायत की—हलवाई बोला, "ठीक है कम वज़न उठाना पड़ेगा"—कम पैसे दिए। हलवाई ने कहा "पैसे कम हैं"—लड़के ने उत्तर दिया, "गिनने में कम मेहनत करनी पड़ेगी—"

शिक्षा—जैसे को तैसा।

उक्त कहानी दिए गए संकेतों के आधार पर इस प्रकार लिखी जाएगी।

बेईमान हलवाई और बालक की कथा

किसी नगर में एक हलवाई की दुकान थी। हलवाई बड़ा धूर्त और बेईमान था। वह सदा कम मिठाई तोला करता था, पर पैसे पूरे लेता था। एक दिन एक लड़का उसकी दुकान पर मिठाई खरीदने आया। लड़के ने हलवाई से एक किलोग्राम मिठाई माँगी। बेईमान हलवाई ने आदत के अनुसार मिठाई एक किलोग्राम से कुछ कम तोली। लड़के ने हलवाई से

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

शिकायत की, "यह मिठाई तो तोल में कम है।" हलवाई ने हँसकर उत्तर दिया, "ठीक तो है, तुम्हें ले जाते वक्त कम वज़न उठाना पड़ेगा।" लड़के को हलवाई पर बेहद क्रोध आया। मूल्य चुकाते समय लड़के ने हलवाई को मिठाई के पूरे पैसे नहीं दिए। हलवाई ने लड़के से कहा, "ये पैसे तो कम हैं।" लड़के ने उत्तर दिया, "ठीक तो है, तुम्हें पैसे गिनने में कम मेहनत करनी पड़ेगी।" हलवाई लड़के का मुँह देखता रह गया।

शिक्षा—जैसे को तैसा।

अभ्यास के लिए दिए गए कुछ कथाओं के संकेत

१. बन्दर और बये की कथा

जंगल में पीपल के वृक्ष पर बया का घोंसला...सुख चैन से दिन काटती थी...जाड़े का मौसम, मूसलाधार वर्षा...बन्दर शीत और वर्षा से बचने के लिए उसी वृक्ष के नीचे आया...ठण्ड के मारे थर-थर काँप रहा था...बया ने सहानुभूति प्रकट की...मूर्ख, घर क्यों नहीं बना लेता...बन्दर ने क्रोध में आकर घोंसले के टुकड़े-टुकड़े कर डाले।

शिक्षा—मूर्ख को भूल कर भी उपदेश नहीं देना चाहिए।

२. चतुर कौआ

एक भूखा कौआ...कहीं से एक रोटी उठा लाया...पेड़ की टहनी पर खाने बैठा...भूखी लोमड़ी आई...कौए के गाने की प्रशंसा की...कौए ने गाने के लिए चोंच खोली...रोटी गिर गई...रोटी को बीच में लपककर लोमड़ी चम्पत हो गई...कौआ दूसरी रोटी ले आया...रोटी पंजों में दबा ली...लोमड़ी आई...उसके नाचने की प्रशंसा की...पर कौआ बातों में न आया...लोमड़ी मुँह लटकाए चली गई।

शिक्षा—किसी की चिकनी-चुपड़ी बातों में न आओ।

३. राजा और बन्दर की कथा

राजा ने बन्दर पाला......बहुत प्यार करता था...बन्दर खूब सेवा करता था...राजा सो रहा था......बन्दर पंखा झल रहा था...बन्दर बार-बार मक्खी उड़ाता था...चंचल मक्खी बार-बार आ बैठती थी...बन्दर को क्रोध आया...मक्खी को तलवार से मारना चाहा......राजा की नाक कट गई।

शिक्षा—मूर्ख मित्र से बुद्धिमान शत्रु भला।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

४. सियार और ऊँट की मित्रता

सियार और ऊँट में गहरी मित्रता……नदी पार ईख के खेत में गए…गन्ने तोड़ कर खाए…सियार हुआ-हुआ करने लगा…मित्र शोर न करो…रखवाला जाग जाएगा…भोजन के बाद गाना मेरी आदत है…… रखवाला आया……सियार झाड़ी में छुप गया…ऊँट की पिटाई हुई…… अधमरा कर दिया…लौटते समय सियार ऊँट की पीठ पर बैठ, नदी पार करने लगा…नदी की बीच धारा में ऊँट ने डुबकी लगाई…ऊँट ने कहा, "मेरी लोटने की आदत है"…सियार घबराया फिर डुबकी लगाई…सियार नदी में डूब गया।

शिक्षा—जैसा करोगे, वैसा भरोगे।

५. राजा और विदूषक

राजा के दरबार में एक विदूषक…सदा हँसाया करता था…मुँह लगा था…राजा को बहुत पसन्द था…दरबारी विदूषक से नाराज़ थे… सबका मज़ाक उड़ाता था……राजा से गन्दा मज़ाक किया……प्राण-दण्ड मिला…राजा से क्षमा-याचना की…दया आ गई…मृत्यु के ढंग को चुनने के लिए कहा……स्वाभाविक मृत्यु माँगी……हाजिर-जवाबी ने प्राण बचा लिए।

शिक्षा—संकट में होश ठिकाने रखने चाहिए।

६. सूर्य और वायु का विवाद

सूर्य और पवन में विवाद…अपने-अपने को शक्तिशाली बताते थे… यात्री को शक्ति-परीक्षा के लिए चुना……वस्त्र उतारनेवाला विजयी माना जाएगा…पवन ने आँधी और तूफ़ान का रूप धारण किया…यात्री वस्त्रों को कस कर पकड़े रहा…पवन असफल हुई…सूर्य तेज़ी से चमकने लगा…भयानक गर्मी…एक-एक करके वस्त्र उतारे…केवल छोटी-सी धोती शरीर पर रह गई…सूर्य विजयी हुआ, हवा पराजित हुई।

शिक्षा—प्रबलता तेजस्विता की।

७. बगुले और केंकड़े की कथा

जंगल में एक सरोवर…तरह-तरह के जानवर…बूढ़ा बगुला…… मछली पकड़ने की शक्ति नहीं…झूठ-मूठ रोने लगा…जानवरों को दया

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आई···रोने का कारण पूछा···सरोवर सूख जाएगा···सब जानवर बेमौत मारे जाएँगे···सरोवर छोड़ने का प्रस्ताव रखा······मछली, केंकड़े, कछुए कहने में आ गए···दूसरा सरोवर सौ वर्ष तक नहीं सूखेगा···बगुले की बन आई······एक-एक को पीठ पर चढ़ाकर ले जाता···चट्टान पर पटककर मार डालता···धीरे-धीरे सरोवर खाली हो गया···केंकड़े की बारी···बगुले ने असली बात बता दी···केंकड़े ने आरी जैसे दाँतों से बगुले की गर्दन काट दी···अपनी करनी का कुफल मिल गया।

शिक्षा—दुष्ट को अपनी करनी का फल अवश्य मिलता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: ३० :

पत्र-लेखन

(LETTER-WRITING)

मनुष्य के जीवन में पत्र-लेखन की बड़ी उपयोगिता है। मन के विचारों को व्यक्त करने का पत्र उत्तम साधन है। पत्र से हम आन्तरिक विचारों की अभिव्यक्ति सरलता से करते हैं। देखा गया है कि हम संकोच-वश जिन बातों को कह नहीं सकते वे पत्र में लिखकर आसानी से भेजी जा सकती हैं। यों पत्र लिखना भी एक कला है और अच्छे पत्र लिखने के लिए अनेक बातें ध्यान में रनी होत ी हैं।

अच्छे पत्र लिखने के लिए कुछ आवश्यक बातें इस प्रकार हैं :—

(१) पत्र लिखनेवाले को चाहिये कि वह पत्र सरल स्वाभाविक शैली में लिखे जिससे कि भाव स्पष्ट हो सके। पत्र पढ़नेवाले को ऐसा लगे कि पत्र लिखनेवाला उसके पास बैठा स्वयं हो मानो अपनी बातें उससे कह रहा है।

(२) पत्र में अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए। जो कुछ भी लिखा जाए वह संक्षेप में हो; पर लिखते समय यह बात भी ध्यान में रखनी चाहिए कि कोई आवश्यक बात छूट न जाए और पत्र अधूरा-सा न लगे।

(३) पत्र का आरम्भ सही अभिवादन और सम्बोधन से होना चाहिए।

(४) घरेलू पत्रों में आरम्भ की कुछ पंक्तियाँ कुशल-समाचार आदि की होती हैं पर सरकारी और व्यापारिक पत्रों में पत्र के आरम्भ में इन पंक्तियों को लिखने की आवश्यकता नहीं होती और पत्र का आरम्भ मुख्य विषय से किया जाता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(५) जिस प्रकार पत्र का आरम्भ अच्छे ढंग से होना चाहिए उसी प्रकार पत्र की समाप्ति भी प्रभावशाली ढंग से होनी चाहिए।

(६) पत्र का पता लिखते समय बड़ी सावधानी बरतनी चाहिए। पत्र पानेवाले का नाम, मकान का नम्बर, सड़क, गली-मुहल्ले का नाम, शहर का नाम आदि साफ़-साफ़ लिखे जाने चाहिए जिससे कि पत्र निश्चित स्थान पर पहुँच सके। ग़लत पता लिखने से पत्र सही स्थान पर नहीं पहुँचेगा। गाँवों को पत्र भेजते समय गली या सड़क का नाम न लिखकर डाकघर का पूरा नाम लिखना चाहिए।

(७) पत्र में कड़वी, अशोभनीय बातें या गाली-गलौच कभी नहीं लिखनी चाहिए। हो सकता है कि इसके लिए आपको बाद में पछताना पड़े।

पत्र के मुख्य चार अंग होते हैं :—

(क) स्थान का पूरा पता, जहाँ से पत्र लिखा गया है। उसी के नीचे तिथि, महीना, सन् आदि लिखा जाना चाहिए।

(ख) उचित सम्बोधन तथा आदरसूचक शब्दों के साथ अभिवादन।

(ग) तीसरे अंग में पत्र का मुख्य विषय लिखा जाना चाहिए।

(घ) अन्त में यथोचित समाचार के साथ पत्र के लेखक का नाम रहता है।

पत्रों के निम्नलिखित रूप व्यवहार में देखने को मिलते हैं :—

(क) सम्बन्धियों के पत्र, (ख) निमन्त्रण पत्र, (ग) परिचय पत्र, (घ) बधाई पत्र, (ङ) शोक पत्र, (च) विविध पत्र (जैसे व्यावसायिक व सरकारी पत्र)।

निजी पत्र का एक नमूना

ए-७८, कालकाजी,
नई दिल्ली-१९
तिथि २-२-८२

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम !

....

....

....।

आपका स्नेहाकांक्षी
कमल बैनर्जी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पतों के कुछ नमूने

लिफ़ाफ़ा

टिकट

श्री० श्यामलाल शर्मा
गाँव : खुड़ला
डाकखाना : राजाखेड़ा
ज़िला : धौलपुर
(राजस्थान)

प्रेषक :
झम्मनलाल गौड़,
१५६, शक्ति नगर,
दिल्ली

पोस्ट कार्ड
केवल पता

टिकट

श्री० शेखर कपूर
'संगम विला',
४०, मानसिंह रोड
नई दिल्ली-१

POST CARD
ADDRESS ONLY

टिकट

कुमारी सुषमा तैनगौर
अध्यापिका
राजकीय माध्यमिक विद्यालय,
रेलवे कॉलौनी,
गणपति नगर,
जयपुर (राजस्थान)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

←पहला मोड़ First Fold→

अन्तर्देशीय पत्र
INLAND LETTER

टिकट

श्री सुबोध बैनर्जी
१७, नेताजी रोड,
कलकत्ता-११

←तीसरा मोड़ Third Fold→

भेजने वाले का नाम व पता :—Sender's Name and Address

कमला बैनर्जी
ए/७८, कालकाजी
नई दिल्ली-११

इस पत्र के अन्दर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

←दूसरा मोड़ Second Fold→

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

विविध पत्र सम्बन्धी चार्ट

पत्र का प्रकार	सम्बन्ध	अभिवादक के शब्द	पत्र के अन्त में लिखे जाने वाले शब्द
सम्बन्धियों के पत्र	पिता—पुत्र पुत्र—माता भाई—बड़ी बहिन	प्रिय राजेश, सप्रम आशीर्वाद । पूज्यनीय माताजी, सादर प्रणाम । माननीया बहिन, प्रणाम ।	तुम्हारा पिता आपका आज्ञाकारी पुत्र स्नेही अनुज
मित्र, गुरु, शिष्य परिचित आदि के लिए	मित्र—मित्र शिष्य—गुरु गुरु—शिष्य परिचित व्यक्ति को	प्रिय सविता, प्रिय रमेश—नमस्ते, जयहिन्द आदरणीय गुरुजी, पूज्य गुरुजी—सादर प्रणाम, चरण स्पर्श चिरंजीव राहुल—स्नेह आशीर्वाद प्रिय महोदय, श्रीमान जी	तुम्हारी सखी, तुम्हारा शुभचिन्तक आपका आज्ञाकारी शिष्य, आपका स्नेह-भाजन तुम्हारा शुभाकांक्षी भवदीय
व्यावसायिक तथा सरकारी पत्र	पुस्तक विक्रेता को बैंक-मैनेजर को रेलवे ट्रैफिक सुपरिण्टेण्डेण्ट को महानिदेशक, आकाशवाणी को केन्द्रीय मन्त्री, भारत सरकार को प्रिंसिपल महोदय को ज़िला मजिस्ट्रेट को सम्पादक को	महोदय/श्रीमान् महोदय श्रीमान् मैनेजर साहब मान्यवर श्रीमान् महोदय मान्यवर श्रीमान्जी श्रीमान् महोदय आदरणीय सम्पादक जी	भवदीय विनीत प्रार्थी भवदीय प्रार्थी विनीत या प्रार्थी विनीत प्रार्थी भवदीय, प्रार्थी

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

पिता को पत्र—घर की कुशलता के बारे में

११, गाँधी मार्ग,
नई दिल्ली
दिनांक १०-१-७५

आदरणीय पिता जी,

सादर प्रणाम !

आपका पत्र मिला। यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि आपका स्वास्थ्य पहले से वहुत अच्छा है और आप सानन्द हैं। हम लोग भी यहाँ सपरिवार कुशल हैं। वीना और मधु के स्कूल खुल गए हैं और उनकी पढ़ाई ठीक प्रकार से चल रही है। राकेश को भी नर्सरी स्कूल में प्रवेश दिला दिया है। मैं स्वयं कालेज जाने लगा हूँ और श्रमपूर्वक आगामी परीक्षा की तैयारी कर रहा हूँ।

घनघोर वर्षा के कारण कोठी के निर्माण का कार्य जो रुक गया था वह अब पुनः चालू कर दिया है। आशा है लगभग एक महीने में कोठी बन कर तैयार हो जाएगी। कोठी के काम की देखभाल स्वयं माताजी कर रही हैं। सब कार्य सुचारु रूप से चल रहा है।

बम्बई से जब आप कार्य समाप्त कर लौटें तो राकेश के लिए कुछ चित्र और खिलौने लाना न भूलिएगा। आजकल छोटी मौसी भी लखनऊ से आई हुई हैं। वे दो दिन दिल्ली रुक कर चली जाएँगी।

शेष सब कुशल हैं। राकेश आपको बहुत याद करता है। सब लोग आप के आने की प्रतीक्षा में हैं।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
विमल

छुट्टी के लिए प्रधानाचार्य को प्रार्थना-पत्र

श्रीमान् प्रधानाचार्य महोदय
माडर्न स्कूल
बाराखम्बा रोड
नई दिल्ली—१.

मान्यवर,

सविनय निवेदन है कि गत तीन दिनों से मैं मलेरिया के तीव्र ज्वर से पीड़ित हूँ, इसी कारण मैं विद्यालय में उपस्थित नहीं हो सका। मेरी चिकित्सा नियमित रूप से चल रही है और मुझे आशा है कि मैं शीघ्र ही स्वस्थ हो जाऊँगा। डॉक्टर ने मुझे एक सप्ताह विश्राम करने की सलाह दी है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

आप से मेरी प्रार्थना है कि विद्यालय से मेरी २१ से २३ अप्रैल तक की अनुपस्थिति क्षमा करेंगे, तथा २४ अप्रैल से लेकर ३० अप्रैल तक का अतिरिक्त अवकाश देकर मुझे अनुगृहीत करेंगे।

धन्यवाद !

पता :— प्रार्थी

१९८, चाँदनी चौक सुनील कुमार

दिल्ली-६ कक्षा-८

दिनांक २५ अप्रैल सन् १९८२.

छात्रवृत्ति के लिए प्रधानाध्यापक महोदय को प्रार्थना-पत्र

सेवा में,

मानतीय प्रधानाध्यापक जी,
सलवान पब्लिक स्कूल
नई दिल्ली

माननीय महोदय,

नम्र निवेदन है कि मैं आप के विद्यालय की नवीं कक्षा का छात्र हूँ। मैं अत्यन्त निर्धन हूँ। गत मास मेरे पिताजी का हृदयगति रुक जाने से अचानक देहान्त हो गया। वे ही परिवार का भरण-पोषण करते थे। अब माताजी मेरी पढ़ाई का भार नहीं सँभाल सकतीं। परिवार की आमदनी का कोई अन्य साधन भी नहीं है। इस अवस्था में मैं न तो स्कूल की फ़ीस दे सकता हूँ और न ही पुस्तकें आदि खरीद सकता हूँ। मेरी माँ को मेरे भविष्य की बड़ी चिन्ता है। पढ़ने-लिखने में मेरी गणना कक्षा के योग्य विद्यार्थियों में की जाती है। वैसे गत वर्ष मैं आठवीं कक्षा की वार्षिक परीक्षा में सर्वप्रथम रहा था। मेरे शिक्षक आदि भी मुझ पर स्नेह रखते हैं।

धन के अभाव में मेरी शिक्षा समाप्त हो जाएगी। अतः आपसे प्रार्थना है कि मेरी दयनीय स्थिति को देखते हुए तथा मेरे भविष्य का ध्यान रखते हुए आप मुझे विद्यालय से छात्रवृत्ति दिलाने का अनुग्रह करें। इसके लिए मैं सदा आपका आभारी रहूँगा। मैं आपको अपनी ओर से विश्वास दिलाता हूँ कि मेरे परीक्षा-परिणाम सदा आपको सन्तुष्ट रखेंगे।

मुझे पूर्ण आशा है कि आप मेरी प्रार्थना को स्वीकार करके मुझे छात्रवृत्ति दिलाने की कृपा करेंगे।

विनीत
प्रदीप कुमार
कक्षा-९ (अ)

दिनांक : १० जुलाई, १९८२.

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

निमन्त्रण-पत्र

शुभ-विवाह

कार्यक्रम :

स्वागत बारात	१६-२-१६८२	६-३०	बजे सायं
पाणिग्रहण संस्कार	१६-२-१६८२	८-००	बजे सायं
प्रीति-भोज	१६-२-१६८२	६-००	बजे सायं
विदा	२०-२-१६८२	६-००	बजे प्रातः

कु० सरोज कश्यप ए **चि० किशोर शर्मा**
[सुपुत्री श्री सोमेश्वरनाथ कश्यप] व [सुपुत्र स्वर्गीय बद्री प्रसाद शर्मा
म् अजमेर निवासी]

के शुभ-पाणिग्रहण-संस्कार पर आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

उत्तरापेक्षी—	प्रार्थी
रवीन्द्र कश्यप,	रामेश्वरनाथ कश्यप, कामेश्वरनाथ कश्यप
वीरेन्द्र कश्यप,	विश्वेश्वरनाथ कश्यप, सोकेश्वरनाथ कश्यप

चाय-पार्टी का निमन्त्रण-पत्र

प्रिय किशोर,

कल सायंकाल साढ़े पाँच बजे मैंने अपने पुत्र के मुण्डन-संस्कार के उपलक्ष में अपने घर पर चाय-पार्टी का आयोजन किया है। निवेदन है कि आप सपरिवार इस प्रसन्नता के अवसर पर होनेवाली पार्टी में सम्मिलित होकर अनुगृहीत करें।

२० जून, १६८२

आपका मित्र
पुनीत

प्रीति-भोज का निमन्त्रण-पत्र

बहिन कोमल,

द्वादश श्रेणी परीक्षा उत्तीर्ण कर लेने की खुशी में मैंने अपनी सब सखियों को परसों शाम के भोजन पर बुलाया है। मैं चाहती हूँ कि तुम भी इस प्रीति-भोज में अवश्य सम्मिलित होओ।

प्रतीक्षा में— तुम्हारी सखी
निशा

२५ जून, १६८२

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बधाई-पत्र

सी ६, लाजपत नगर
५-५-८२

प्रिय उषा,

यह जानकर बड़ा हर्ष हुआ कि तुमने इस वर्ष की मिडिल की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। तुम्हारी इस शानदार सफलता पर मैं तुम्हें हार्दिक बधाई देती हूँ। मुझे पूर्ण आशा है कि भविष्य में भी सफलता इसी प्रकार तुम्हारे चरण चूमेगी। मेरी बड़ी कामना है कि भगवान् तुम्हें अपने सब मनोरथों में सफलता दें तथा तुम एक दिन किसी ऊँचे पद पर प्रतिष्ठित होकर अपने वंश के नाम को ऊँचा करो।

भविष्य के कार्यक्रम के बारे में मुझे शीघ्र सूचित करना।

भवदीय
शीला भाटिया

शोक-पत्र

ई १४/५ चण्डीगढ़,
१५-७-८२

श्री सोहनलाल दाँतरे,

महारानी बहिन के निधन का दुःखद समाचार मिला। इस हृदय-विदारक समाचार को सुनकर हमें अत्यधिक शोक हुआ। बड़ी कच्ची उम्र में ही महारानी इस संसार से विदा हो गई। पुत्री के इस गहरे आघात को आपने किस प्रकार सहन किया होगा इसका अनुमान लगाना सहज नहीं। इसे भाग्य की विडम्बना ही कहा जा सकता है। काल की गति के सामने किसी की नहीं चलती।

मेरी भगवान् से प्रार्थना है कि महारानी की दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा परिवार के लोगों को इस कठोर आघात को सहन करने की शक्ति दें। इस अवसर पर मेरी हार्दिक सहानुभूति आपके साथ है।

भवदीय
बिनय मोहन

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

निमन्त्रण-पत्र

काव्य-सन्ध्या

केन्द्रीय विद्यालय
भोपाल
१ दिसम्बर, १९८२

महोदय,

सादर वन्दे !

अन्तर्राष्ट्रीय विकलांग वर्ष के उपलक्ष्य में सुप्रसिद्ध कवि श्री अज्ञेय-जी के सभापतित्व में ५ दिसम्बर, १९८२ को एक काव्य-सन्ध्या का आयोजन होगा। सभी स्थानीय कवि एवं कवयित्रियों ने इस कार्यक्रम में पधारने का आश्वासन दिया है।

आशा है कि आप भी मित्रवर्ग सहित उपस्थित होकर अपनी कविताओं द्वारा श्रोताओं का मनोरंजन करेंगे।

उत्तराकांक्षी
राकेश पुरी
अध्यक्ष

विनीत
अनिल भारद्वाज — परामर्शदाता
वीनू चौहान — मन्त्री

पोस्ट-मैन की शिकायत

सेवा में,

श्रीमान् पोस्ट-मास्टर महोदय
गोल डाकखाना,
नई दिल्ली

महोदय,

मुझे बड़े खेद के साथ यह पत्र आपको लिखना पड़ रहा है। मैं १० टेलीग्राफ ट्रैफिक प्लेस, बेअर्ड रोड पर रहता हूँ। इस इलाके में नियुक्त डाकिया अपना काम ठीक ढंग से नहीं कर रहा है। कई बार मैंने देखा है कि हमारे पत्र गायब हो जाते हैं, कुछ पत्र जो हमें मिलने चाहिए उन्हें डाकिया पड़ोसियों के यहाँ दे जाता है। जो डाक रोज़ बँटनी चाहिए उसे वह तीन-तीन चार-चार दिन बाद बाँटता है। इस सम्बन्ध में हमने उसे कई बार चेतावनी भी दी है पर उसने हमारी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। उलटे झगड़ा करने पर उतारू हो गया।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यदि हमारे कहने से वह अपना काम सही ढंग से करने लग जाता तो हम उसकी आपसे कभी भी शिकायत न करते।

अब आपसे निवेदन है कि आप इस डाकिये के विरुद्ध उचित कार्य-वाही करें जिससे कि हमें अपने पत्र समय पर मिल सकें।

आशा है इस सम्बन्ध में आप कोई बड़ा कदम उठायेंगे और हमारी तकलीफ़ दूर करेंगे।

दिनांक ५-५-८२ प्रार्थी

पता : १० नं० टेलीग्राफ ट्रैफिक प्लेस, यज्ञदत्त
बेअर्ड रोड, नई दिल्ली

व्यावसायिक पत्र

पुस्तक-विक्रेता को

संचालक महोदय,
रामा पुस्तक भण्डार,
१७, बस्ती हरफूल सिंह,
दिल्ली-११०००६

महोदय,

मैंने आपके सूची-पत्र से निम्नलिखित पुस्तकों का चुनाव किया है। कृपया आप ये पुस्तकें उचित कमीशन काट कर मुझे वी० पी० पार्सल से भेज दें। पुस्तक भेजते समय यह ध्यान रखें कि वह कहीं से कटी-फटी न हों।

धन्यवाद !

पुस्तकें :—

(१) हमारी गाथा—लेखक : कृष्णकान्त
(२) हिन्दी साहित्य का इतिहास—लेखक : रामचन्द्र शुक्ल
(३) सूर पदावली—सम्पादक : नरेन्द्र शर्मा
(४) हिन्दी की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ—सम्पादक : धीरेन्द्र कुमार

भवदीय

दिनांक—१-६-८२

सुनील दत्त

पता :
१७, नेताजी मार्ग,
रोहतक (हरियाणा)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बैंक के प्रबन्धक के नाम पत्र

महाप्रबन्धक
स्वतन्त्र भारत बैंक,
मद्रास

प्रिय महोदय,

निवेदन है कि पिताजी के स्थानान्तरण के कारण मुझे भी उनके साथ ग्वालियर, मध्यप्रदेश जाना पड़ रहा है। अत: मेरा बचत खाता नं० ७४३१ ग्वालियर, मध्यप्रदेश स्थित बैंक की अपनी शाखा में स्थानान्तरित कर दिया जाए। इससे मुझे बड़ी सुविधा होगी।

धन्यवाद !

भवदीय
के० टी० एम० नारायणन

दिनांक—१-१-८२
पता :
५, त्यागराजा मार्ग,
मद्रास—२

सम्पादक के नाम पत्र—दिल्ली में बिजली का संकट

श्रीमान् सम्पादक जी, १५ मार्च, ८२
दैनिक नवभारत टाइम्स,
बहादुरशाह जफ़र मार्ग, नई दिल्ली

मान्यवर,

आप जानते हैं कि गत एक सप्ताह से दिल्ली निवासियों के समक्ष बिजली का भीषण संकट उपस्थित हो गया है। कहा जाता है कि बिजली की यह कमी अचानक एक शक्तिशाली ट्रान्समीटर के जल जाने से उत्पन्न हुई है। घण्टों बिजली बन्द रहती है जिसके फलस्वरूप नागरिक जीवन अस्त-व्यस्त हो गया है। जनता बिजली के अभाव से बड़ी परेशान है। मैं आपके सम्मानित पत्र द्वारा बिजली के न होने से जो संकट दिल्ली में पैदा हो गया है उसकी ओर नगर निगम के अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ जिससे कि वे शीघ्र ही उचित कार्यवाही करके जनता को कष्ट-मुक्त करें।

विद्युत के अभाव में विद्यार्थियों की पढ़ाई-लिखाई चौपट हो गई है। इस परीक्षा के समय में उन्हें बिजली के न होने से बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बिजली फेल हो जाने से नगर की सड़कों और गलियों में शाम से ही अँधेरा छा जाता है। फल यह होता है कि कहीं कोई साइकल-सवार गड्ढे में गिर जाता है, तो कोई बस राहगीर को कुचल डालती है। अँधेरे में गुण्डों और बदमाशों की चाँदी है। चोरी और छुरेबाजी की घटनाएँ तो रोज़ ही घटती हैं और लोगों का जीवन सुरक्षित नहीं रहा।

विद्युत की कमी ने रेल, यातायात और डाक आदि के साधनों में भी गड़बड़ पैदा कर दी है। बिजली के न होने से अस्पतालों में रोगियों का इलाज ठीक से नहीं होता। लोगों के बिजली के पंखे बेकार हो गए हैं, धनियों के एअर-कण्डीशनर और रैफ्रीजिरेटर बेकार हो गए हैं। सिनेमा-मालिक तो बैठे रो रहे हैं; उन बेचारों की तो रोज़ी ही चली गई है।

आशा है अधिकारी वर्ग जनता की इन कठिनाइयों का ध्यान रखते हुए शीघ्र ही विद्युत-वितरण की समुचित व्यवस्था करेगा।

भवदीय
एक नागरिक

रेडियो के कार्यक्रमों के बारे में सुझाव-पत्र

१२/१२, पन्त नगर
नई दिल्ली
४-४-८२

सेवा में,

महानिदेशक,
आकाशवाणी, नई दिल्ली

श्रीमान् महोदय,

निवेदन है कि मैं आकाशवाणी के दिल्ली-केन्द्र से प्रसारित सभी कार्यक्रमों को नियमपूर्वक सुनता हूँ। इसमें से कुछ कार्यक्रम तो बहुत ही सुन्दर होते हैं पर कुछ कार्यक्रम ऐसे भी हैं जो सुननेवालों को खटकते हैं। जिन कार्यक्रमों में कमी पाई जाती है उन्हीं के सम्बन्ध में कुछ सुझाव इस पत्र में लिखकर भेज रहा हूँ—यदि आप उचित समझें तो इन्हें कार्य रूप में परिणत करने का प्रयत्न करें।

मेरा प्रथम सुझाव यह है कि जो कार्यक्रम महिला-जगत् के नाम से बुध और शुक्रवार को प्रसारित किया जाता है, उसमें प्रायः वार्ताकार महिलाएँ न होकर पुरुष होते हैं। जब कार्यक्रम केवल महिलाओं के नाम से है तो पुरुषों को उसमें भाग नहीं लेने देना चाहिए।

मेरा दूसरा सुझाव यह है कि कृषि-जगत कार्यक्रम में किसानों की समस्याओं को लेकर अधिक-से-अधिक वार्ताएँ प्रसारित करनी चाहिए

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

जिससे हमारे दश के किसान भाई उन्हें दूर करके अपना भला कर सकें। पर देखा यह गया है कि कार्यक्रम का बहुत-सा समय अनुपयोगी वातों में खर्च कर दिया जाता है जिससे किसानों का दूर का भी नाता नहीं है।

तीसरी बात जो मैं कहना चाहता हूँ वह यह है कि रेडियो से सस्ते किस्म के नाटक न प्रसारित किए जाएँ वल्कि ऐसे नाटक प्रसारित करने चाहिए जो भारतीय संस्कृति और सभ्यता के अनुकूल हों तथा सुरुचिपूर्ण हों। मुझे यह भी कहना है कि सुननेवालों के मनोरंजन के लिए जो विविध भारती कार्यक्रम होता है, उसमें सदैव गन्दे प्रकार के फिल्मी गाने प्रसारित होते रहते हैं जो तुरन्त बन्द होने चाहिए। इन गानों से एक तो सुननेवालों का समय बरबाद होता है तथा दूसरे ये गाने अश्लीलता का प्रचार करते हैं, जिससे लोगों का चरित्र गिरता है।

मुझे आशा है कि आप मेरे दिए गए सुझावों पर ध्यानपूर्वक सोच-विचार करेंगे तथा शीघ्र ही ऐसे कदम उठाएँगे जिनसे कार्यक्रमों की ये कमियाँ दूर हो सकें तथा प्रसारित कार्यक्रम अधिक-से-अधिक रोचक और आकर्षक बन सकें।

विनीत
एक विद्यार्थी

टेलीग्राम—तार द्वारा सन्देश भेजना

तार द्वारा हम परमावश्यक सूचनाएँ भेजते हैं। ये सूचनाएँ प्रेषक की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण होती हैं। तार का प्रयोग समय की बचत के लिए किया जाता है। तार के द्वारा भेजा हुआ सन्देश अति शीघ्र पहुँच जाता है। तार में हम प्रायः परीक्षा सम्बन्धी सफलता, बधाई-सन्देश चिन्ताजनक स्वास्थ्य की सूचना, मृत्यु तथा आगमन आदि की खबरें लिख-कर भेजते हैं। तार की भाषा इस प्रकार की होनी चाहिए कि भेजनेवाला कम-से-कम शब्दों में अपनी बात को कह सके। तार में अनावश्यक शब्दों को नहीं लिखा जाता, जैसे किसी के नाम के आगे व पीछे लगनेवाले विशेषण श्री, श्रीमान्, चौधरी, वर्मा, आदि नहीं होने चाहिए। तार भेजने-वाले को चाहिए कि वह तार फार्म में बने कालमों में अक्षर बड़े-बड़े लिखे। तार मे पता पूरा और साफ़-साफ़ लिखना चाहिए जिससे कि तार ठीक पते पर शीघ्र पहुँच जाए। तार देर से मिलने पर सूचना का महत्त्व जाता रहता है। तार में लिखी गई गिनती जहाँ तक हो सके शब्दों में लिखी जानी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चाहिए। समय की अधिक बचत के लिए तार को टेलीफ़ोन नम्बर से भी भेजा जा सकता है। बधाई के तार में केवल बधाई-तार का नम्बर ही लिखना पड़ता है।

विविध प्रकार के कुछ तार

गम्भीर हालत की सूचना :

१. माँ का स्वास्थ्य चिन्ताजनक शीघ्र आओ
रविकुमार

२. निमोनिया से पिता की हालत गम्भीर फ़ौरन आओ
रामचन्द्र

मृत्यु की सूचना

१. दादा स्वर्गवासी हुए तुरन्त आओ
मोहनलाल

२. माँ परलोक सिधार गईं फौरन आइए
चन्दर

बधाई का तार :

१. सप्रेम शुभ कामनाएँ
कृष्णकान्त

२. ईश्वर करे यह शुभ दिन बार-बार आए
स्वरूप

चुनाव-सम्बन्धी :

निर्वाचन में सफलता पर हार्दिक बधाई
रामकिशन

परीक्षाफल-सम्बन्धी :

परीक्षा में सफलता के लिए शुभ-कामनाएँ
आनन्द

त्यौहार-सम्बन्धी

१. ईद मुबारक
इकबाल

२. दीपावली की शुभ-कामनाएँ
कृष्णलाल

३. नव वर्ष आपको शुभ हो
फ़िलिप

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

राष्ट्रीय त्यौहार-सम्बन्धी

१. हार्दिक बधाई अमर रहे जनतन्त्र हमारा

चन्दन

२. स्वतन्त्रता-दिवस पर मंगल कामनाएँ

कुमार

विवाह-सम्बन्धी

१. वर-वधू को आशीर्वाद

नागर

२. सुखमय वैवाहिक जीवन के लिए हमारी शुभ-कामनाएँ

रामेश्वर

अभ्यास

१. प्रधानमन्त्री को जन्म-दिवस पर बधाई-पत्र लिखिए।

२. छोटे भाई को कुसंगति की हानियाँ बताते हुए एक पत्र लिखिए।

३. परिवार की शोचनीय दशा का वर्णन करते हुए प्रधानाध्यापक को एक आवेदन-पत्र लिखिए, जिसमें उनसे फीस माफ करने की माँग की गई हो।

४. पत्र लिखकर अपने पड़ौसी को चाय-पार्टी पर निमन्त्रित कीजिए।

५. अपने विद्यालय का वर्णन मित्र को पत्र में लिखकर कीजिये।

६. भूकम्प-पीड़ितों की सहायता के लिए जनता के नाम चन्दे की एक अपील निकालिए।

७. पहली बार अपने विद्यालय में पुरस्कार प्राप्त करने पर अपना अनुभव बताते हुए अपनी माता को एक पत्र लिखिए।

८. नगर-निगम के स्वास्थ्य-विभाग को एक आवेदन पत्र अपने मुहल्ले की स्वच्छता के सम्बन्ध में लिखिए।

९. अपने पुराने सहपाठी को एक पत्र लिखिए जिसमें हिन्दी भाषा के किसी प्रसिद्ध ग्रन्थ का वर्णन हो, जो आपको बहुत पसन्द है।

१०. अपने पुराने सहपाठी को एक पत्र लिखिए, जिसमें आपकी पढ़ाई-लिखाई तथा भविष्य की योजना का वर्णन हो।

११. अपने मित्र को परीक्षा में प्रथम आने पर बधाई का पत्र लिखिए।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

१२. अपनी बड़ी बहिन के नाम एक पत्र लिखिए जिसमें आपकी विदेश-यात्रा का वर्णन हो।

१३. मसूरी में किसी होटल के मैनेजर को पत्र लिखकर उससे एक कमरा अपने लिए पन्द्रह दिन ठहरने के लिए तय कीजिए।

१४. मित्र के नाम एक पत्र लिखिए, जिसमें बताइए कि यदि आप सैनिक होते तो क्या करते।

१५. बस द्वारा यात्रा करते हुए जिन असुविधाओं का आपको सामना करना पड़ा उनका उल्लेख करते हुए बस के प्रबन्ध-अधिकारी को एक पत्र लिखिए।

१६. रेलवे-कर्मचारी के अशिष्ट व्यवहार की शिकायत रेल के उच्च-अधिकारी को पत्र में लिखकर कीजिए।

१७. अपने भाई या बहिन के नाम पत्र लिखकर रक्षा-बन्धन की शुभ-कामनाएँ भेजिए।

१८. अपने छोटे भाई के नाम पत्र में किसी क्रिकेट-मैच का वर्णन कीजिए।

१९. दिल्ली के बाहर किसी पुस्तक-विक्रेता के नाम कुछ आवश्यक किताबें मँगवाने के लिए एक पत्र लिखिए।

२०. दिल्ली-दूरदर्शन के महानिदेशक को वार्ताकारो तथा समाचारों-की अशुद्ध हिन्दी के विषय में एक शिकायत-पत्र लिखिए।

२१. परीक्षा में असफल होनेवाली छोटी बहिन को सान्त्वना का एक पत्र लिखिए।

२२. मित्र को एक पत्र लिखिए, जिसमें नीचे लिखे विषय पर भाव-पूर्ण चर्चा हो :

"स्वदेशी वस्तुओं का आदर करना चाहिए।"

२३. तुम्हारे हॉस्टल का छात्र सख्त बीमार है। उसके पिता को बुलाने के लिए एक तार दीजिए।

२४. अपने मित्र को उसके वार्षिक-परीक्षा में प्रथम आने पर बधाई का तार दीजिए।

□□

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

: ३१ :

निबन्ध-रचना

(ESSAY WRITING)

निबन्ध गद्य की एक महत्त्वपूर्ण रचना है। निबन्ध शब्द का अर्थ है—अच्छी तरह बँधा हुआ अर्थात् चुनी हुई भाव-सामग्री को गठी हुई भाषा में बाँध कर रखना निबन्ध कहलाता है। भाषा की शिथिलता और शैली की जटिलता निबन्ध-सौन्दर्य को कम करती है तथा नीरसता को बढ़ाती है। अतः निबन्ध लिखते समय इस बात का पूरा-पूरा ध्यान रखना चाहिए कि निबन्ध की भाषा सरल, सुबोध तथा परिमार्जित हो और शैली प्रसादगुण युक्त हो। निबन्ध का कलेवर लघु होना चाहिए तथा प्रवीण लेखक में अपने विचारों को कम-से-कम शब्दों में व्यक्त करने की क्षमता होनी चाहिए। संक्षिप्तता निबन्ध का विशेष गुण होता है।

निबन्ध के कलेवर को हम तीन भागों में बाँट सकते हैं :

(१) आरम्भ। (२) मध्य। (३) अन्त।

(१) निबन्ध-लेखक को चाहिए कि निबन्ध का आरम्भ सुन्दर ढंग से करे। अपने विचारों और भावों को लेख के आरम्भ में इस प्रकार सजाकर रखे कि वे आर्कषक लगें और पढ़नेवाले के मन को अपनी ओर खींच सकें। निबन्ध का आरम्भ विषय-भूमिका से होना चाहिए। निबन्ध का आरम्भ कविता की किसी सुन्दर और भावपूर्ण पंक्ति से भी किया जा सकता है।

(२) निबन्ध के मध्य भाग का सम्बन्ध मुख्य विषय से होता है। इसमें मुख्य विषय का अधिक-से-अधिक विस्तार होना चाहिए तथा जो भी बात कही जाए वह क्रमबद्ध एवं तर्क-संगत होनी चाहिए।

(३) निबन्ध का अन्त बड़े प्रभावशाली ढंग से होना चाहिए। यदि निबन्ध की समाप्ति अच्छे ढंग से नहीं हुई तो सब करे-धरे पर पानी फिर

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA).

सकता है। निबन्ध के अन्त में लेखक को विषय के सम्बन्ध में अपना दृष्टिकोण पाठकों के सामने अवश्य रखना चाहिए। निबन्ध का सुन्दर अन्त ही निबन्ध की सफलता का द्योतक है।

हिन्दी के सबसे समर्थ निबन्ध-लेखक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल निबन्ध के चार भेद मानते हैं :

(१) विचारात्मक निबन्ध (Reflective Essays)
(२) विवरणात्मक निबन्ध (Narrative Essays)
(३) वर्णनात्मक निबन्ध (Descriptive Essays)
(४) भावात्मक निबन्ध (Emotional Essays)

(१) विचारात्मक निबन्ध में विचारों की प्रधानता रहती है तथा लेखक अपने विचार युक्ति-युक्त ढंग से प्रकट करता है।

(२) विवरणात्मक निबन्ध में किसी विशेष घटना अथवा किसी प्रसिद्ध स्थान या वस्तु आदि का विवरण होता है।

(३) वर्णनात्मक निबन्ध में वर्ण्य-विषय मुख्य होता है। लेखक का उद्देश्य आकर्षक और सुन्दर शैली से स्थान, यात्रा आदि का वर्णन करना होता है।

(४) भावात्मक निबन्धों में निबन्ध-लेखक भावों में डूबकर अपनी रचना करता है। ऐसे निबन्धों में कल्पना की ऊँची उड़ान का प्राधान्य रहता है।

अन्त में यह कहना पड़ेगा कि निबन्ध-रचना एक कला है। निबन्ध केवल परीक्षा की दृष्टि से ही उपयोगी नहीं, बल्कि इससे पढ़ने-लिखनेवालों के ज्ञान की वृद्धि होती है तथा गम्भीर अध्ययन के प्रति रुचि पैदा होती है। परीक्षार्थियों की दृष्टि से हम इस पुस्तक में विविध विषयों को लेकर कुछ निबन्ध प्रस्तुत कर रहे हैं।

मेरा देश

'उपमान-विहीन रचा विधि ने भारत के सम भारत है।'

भारत संसार का शिरोमणि देश है। इसमें प्राकृतिक सम्पदा का विपुल भण्डार है। सभी महत्त्वपूर्ण धातुएँ भारत में उपलब्ध होती हैं। सिन्धु, गंगा, यमुना, कृष्णा, गोदावरी, कावेरी और नर्मदा अपने अमृत-जल से इसकी धरती को सींचती हैं। यहाँ की उर्वरा भूमि सदैव कंचन उगलती है। ऋतु-चक्र सदैव मन को आकर्षित करता रहता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भारत-भूमि के वैभव से विदेशी सदैव आकर्षित होते रहे हैं। अनेक विदेशियों ने यहाँ किसी-न-किसी रूप में आकर ज्ञान एवं वैभव प्राप्त करने का प्रयास किया। अनेक महापुरुषों ने यहाँ जन्म लेकर मानवता का पाठ पढ़ाया। राम की मर्यादा, कृष्ण की कर्मठता, गौतम की अहिंसा, युधिष्ठिर की धर्मवीरता, कर्ण की दानवीरता, अर्जुन की युद्धवीरता एवं महावीर की करुणा चारित्रिक आदर्श के अनुपम उदाहरण हैं।

भारत का अतीत, गौरव के उच्चतम शिखर पर था। नालन्दा और तक्षशिला जैसे विद्यालय ज्ञान और विज्ञान के अध्ययन के अद्भुत केन्द्र थे। पाणिनि जैसे वैयाकरण और चाणक्य जैसे अर्थशास्त्री एवं राजनीतिज्ञ तक्षशिला विश्वविद्यालय के ही अध्यापक रहे थे। संसार की प्राचीनतम पुस्तक वेद, उपनिषद् और गीता का प्रणयन भारत में ही हुआ। वेदव्यास, भवभूति, कालिदास, विद्यापति, सूर, तुलसी आदि विद्वानों ने अपने काव्य-वैभव से विश्व को विस्मित किया।

वैज्ञानिक प्रगति के क्षेत्र में प्राचीन भारत अपनी चरम सीमा पर था। पुष्पक विमान, अग्निबाण, दूरदर्शन, अणबम सभी का आविष्कार करनेवाला देश भारत ही है। आधुनिक भारत में बोस, रमन, साहा, भटनागर, और भाभा की विज्ञान-साधना मार्ग-दर्शन कर रही है। आज आर्यभट जैसे परीक्षण करके भारत के वैज्ञानिकों ने विश्व में सम्मान अर्जित किया है। 'भास्कर' और 'एपल' की सफलता सर्वविदित है।

भारत ने संसार को उदारता एवं सर्व-धर्म-समन्वय का पाठ पढ़ाया है, इससे जो यहाँ आया, यहीं का होकर रह गया। शायद भारत के इसी लचीलेपन ने उसे कालजयी बनाया है। आज न प्राचीन मिस्र है, न रोम है, न यूनान। पर आधुनिक युग में भी भारत अपनी समस्त प्राचीनता को समेटे हुए आज भी विद्यमान है। आज यह संसार का एक महत्त्वपूर्ण देश है—संसार का सबसे बड़ा गणतन्त्र।

आज हमारे देश में नवोदित राष्ट्र की अनेक समस्याएँ हैं। निर्धनता अपना विकराल रूप धारण कर रही है। राजनैतिक उथल-पुथल भी है। अभाव के कारण अन्य अनेक समस्याएँ बलवती हो रही हैं परन्तु निस्सन्देह भारत का भविष्य उज्ज्वल है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

क्रिसमस पर्व (बड़े दिन का त्यौहार)

हमारे देश में अनेक धर्म और अनेक जातियों के लोग बसते हैं। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई—सभी भारत के निवासी हैं। धर्म-निरपेक्ष भारत में तरह-तरह के पर्व मनाए जाते हैं। क्रिसमस अथवा बड़ा दिन ईसाई-जाति के लोगों का महान् पर्व है। यह पर्व बहुत कुछ हिन्दुओं के रामनवमी और कृष्ण-जन्माष्टमी के पर्वों से मिलता-जुलता है। क्रिसमस ईसाई धर्म के प्रवर्तक जीसस क्राइस्ट (ईसा मसीह) के जन्मदिन की स्मृति में मनाया जाता है। इस पर्व की विश्व के कोने-कोने में बसनेवाले ईसाई हर्ष और उल्लास के साथ मनाते हैं। यह त्यौहार प्रतिवर्ष दिसम्बर मास की २५वीं तारीख को पड़ता है।

आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व यीशू का जन्म बेतलहम में हुआ था। इनके पिता जोज़फ जाति के यहूदी थे और माता का नाम मरियम (मेरी) था। वे लोग सुरक्षा के लिए एक नगर से दूसरे नगर में आश्रय खोजते फिरते थे। जब वे यरूशलम की ओर जा रहे थे तो बेतलहम ग्राम में रुके। वहाँ एक अस्तबल में शिशु ईसा मसीह ने जन्म लिया जो आगे चलकर संसार में ईसाईयों के पैगम्बर हुए। ईसा मसीह के जन्म की खबर सुदूर पूर्व में बसनेवाले तीन धार्मिक पुरुषों को दैवी प्रेरणा से मिली कहते हैं आकाश में एक जगमगाता तारा उगा और ये तीनों महात्मा उस तारे का अनुकरण करते हुए उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ यीशु ने जन्म लिया था। इन लोगों ने उस अलौकिक बालक को देखा और उसके चरणों में सिर झुका दिया। उस दिन से लेकर आज तक ईसाई धर्म के माननेवाले महात्मा ईसा के जन्म-दिन को मनाते हैं।

क्रिसमस पर लोग घरों की सफ़ाई और सजावट करते हैं, एक-दूसरे को भेंट और उपहार देते हैं। प्रातःकाल ही लोग गिरजाघरों में जाकर प्रार्थना करते हैं। लोग एक-दूसरे के घर मिठाइयाँ ले जाते हैं। विदेशों में रहनेवाले अपने आत्मीयजनों से मिलने उनके घर आते हैं तथा शाम के समय उत्सव के उपलक्ष में एक प्रीति-भोज का आयोजन किया जाता है जिसमें परिवार के सब सदस्य सम्मिलित होते हैं। मध्य-रात्रि से लेकर दूसरे दिन सायंकाल तक लोग राग-रंग में डूबे हुए उत्सव को मनाते हैं। संगीत, नृत्य और गान की सब जगह धूम दिखलाई पड़ती है। क्रिसमस मनाने के लिए घर के किसी मुख्य भाग में क्रिसमस-वृक्ष का निर्माण किया जाता है। इस वृक्ष को चमकीले कागजों, सुनहरे तारों, खिलौनों, फलों

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

तथा मिटाई और मेवा आदि से अलंकृत किया जाता है। इस वृक्ष के चारों ओर सब लोग एकत्रित होकर ईसा मसीह की प्रार्थना करते हैं तथा गीत गाकर सभी के लिये सुख और समृद्धि की कामना की जाती है। बच्चे इस दिन सेण्ट निकोलस (सान्ता क्लाज) के आने की प्रतीक्षा करते हैं। सेण्ट निकोलस तरह-तरह के खिलौने और उपहार बच्चों के लिए लाता है।

अन्य त्यौहारों के समान क्रिसमस का संसार में बड़ा महत्त्व है। इस त्यौहार से लोगों में सद्भावनाएँ उत्पन्न होती हैं, लोग पारस्परिक वैमनस्य को भूलकर प्यार से एक-दूसरे से गले मिलते हैं, मनुष्य में भ्रातृ-भाव और निर्मलता का प्रचार होता है। इस प्रकार क्रिसमस का पर्व सुख और शान्ति का सन्देशवाहक है।

ईद : भ्रातृ-भावना का पर्व

ईद इस्लाम धर्म का प्रसिद्ध पर्व है। इस्लाम धर्म के प्रवर्तक मोहम्मद साहब का जन्म ५७० ई० में अरब में हुआ था। बचपन में ही इनके माता-पिता का स्वर्गवास हो गया तथा चाचा अबूतालिब ने इनका पालन-पोषण किया। इनका विवाह बेगम खदीजा से हुआ तथा ४० वर्ष की आयु में ही लौकिक आकर्षणों को त्याग इन्होंने नबूवत प्राप्त की।

मोहम्मद साहब ने अपने महान् कृत्यों से मुस्लिम जाति का मार्ग-दर्शन किया। कुरान इस्लाम धर्म का पवित्र ग्रंथ है। ईद-उल-फितर का सम्बन्ध इस्लाम धर्म के पवित्र ग्रन्थ कुरान की उत्पत्ति से है। इस्लाम धर्म के अनुयायी ईद के इस पर्व पर कुरान शरीफ़ की वर्ष-गाँठ मनाते हैं।

ईद का उत्सव मनाने से पूर्व ४० दिन तक का समय साधना का समय होता है। इस समय को रमजान का समय कहा जाता है। २४ घण्टे में पाँच बार नमाज़ पढ़ते हैं, दिन में एक बार भोजन करते हैं। यह समय अधिकांशतः व्रत और उपवास में ही बीतता है। नियमपूर्वक लोग मस्जिद में जाकर खुदा की इबादत करते हैं। ४० दिन की साधना के पश्चात् ईद का महान् पर्व आता है।

ईद के दिन सभी विद्यालय, कार्यालय, मिल एवं कारखाने आदि बन्द रहते हैं। इस दिन की शोभा दर्शनीय होती है।

ईद पर मेलों का आयोजन होता है। प्रातःकाल होते ही स्त्री-पुरुष एवं बालक सभी रेशमी वस्त्र पहनकर ईदगाह या किसी मस्जिद में जाते हैं। नमाज़ पढ़कर मेला देखने जाते हैं। घर में तरह-तरह के पकवान

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

बनते हैं, मेहमानों का सत्कार होता है। सेवइयाँ इस पर्व की विशेष भोग सामग्री मानी जाती है। लोग एक-दूसरे के घर सेवइयाँ बाँटकर 'ईद मुबारक' कहते हैं। इस प्रकार ईद का दिन मुस्लिम जनता सहर्ष मनाती है।

यह दिन विशेष सामाजिक महत्त्व का है। नमाज़ के बाद लोग प्रेम-पूर्वक एक-दूसरे के गले मिलते हैं। यह पर्व सचमुच समग्र मुस्लिम सम्प्रदाय में नवजीवन का संचार करता है। यह पर्व संघर्षमय जीवन में समता एवं सरसता की सरिता बहा देता है।

होली : राग रंग का त्यौहार

भारत में अनेक पर्व मनाये जाते हैं। महत्त्वपूर्ण पर्वों में रक्षाबन्धन, दशहरा, दीपावली एवं होली हैं। होली एक ऐसा पर्व है जिसे भारत के सभी निवासी सहर्ष मनाते हैं। यह पर्व फाल्गुन मास की प्रथमा को प्रति वर्ष मनाया जाता है। इस पर्व का सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक महत्त्व है।

प्राचीनकाल में हिरण्यकश्यप नाम का क्रूर एवं दुराचारी राजा अपने आप को भगवान् मनवाने के लिए प्रजा को विवश करता था। उसके पुत्र प्रह्लाद ने उसका विरोध किया। हिरण्यकश्यप की बहिन होलिका ने प्रह्लाद को जलाने का निश्चय किया परन्तु होलिका जल गई, प्रह्लाद बच गया।

फाल्गुन के अन्त तक प्रायः जौ, चना की फसल पक कर तैयार हो जाती है। अग्नि को प्रथम अन्न की आहुति देकर लोग नए अन्न का प्रसाद वितरण कर एक-दूसरे से मिलकर हर्ष के पारावार में डूब जाते हैं।

होलिका दहन के दूसरे दिन दुलहैंडी मनाई जाती है। यह एक अद्भुत सामाजिक पर्व है। इस दिन वर्ष भर की शत्रुता, मित्रता में बदल जाती है। लोग एक-दूसरे से गले मिलकर गुलाल लगाते हैं। रंग की पिचकारियाँ एक-दूसरे पर डालने से रस प्रवाह होता है। शिक्षित एवं सभ्य लोग चन्दन, गुलाब जल एवं इत्र की होली खेलते हैं। ग्रामीण-जन-समूह कीचड़ और मिट्टी की होली का भी आनन्द लेता है। छोटे, बड़े, धनी, निर्धन, होली के शुभ अवसर पर प्रसन्न दिखाई देते हैं।

कभी-कभी कुछ असामाजिक तत्व भंग और शराब पीकर अशोभनीय भाषा का प्रयोग करते हैं। लोगों को चोट पहुँचाकर हर्ष मनाते हैं। इस पुनीत पर्व पर दुर्व्यवहार से बचना चाहिए।

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

होली का पर्व हमें समता, सहज प्रेम, सहृदयता एवं एकता का पाठ पढ़ाता है। समाज में फैले अनेक मतभेद समाप्त करने में सहायक होता है। यह पर्व पारस्परिक शत्रुता मिटाकर प्रेम के भाव को शक्तिशाली बनाता है।

महाकवि सूरदास

सूर-सूर, तुलसी ससी, उड्गन केसव दास।
अब के कवि खद्योत सम, जहँ तहँ करत प्रकास॥

सूरदास वस्तुतः हिन्दी के अमर कवि हुए, जिनकी वाणी से असख्य हृदय-पुष्प खिल उठे एवं निर्जीव जनता को जीने का नवीन उत्साह मिला। सूरदास, वल्लभाचार्य के प्रमुख शिष्य थे। अष्ट-छाप के कवियों में इनका महत्त्वपूर्ण स्थान था। इन्होंने अनेक कृतियों की रचना की। 'सूर-सागर' इनका अन्यतम ग्रन्थ है। कृष्ण-काव्य के ये उत्कृष्ट कवि माने जाते हैं। इनके काव्य में भक्ति, जीवन-दर्शन एवं कवित्व की त्रिवेणी बहती है।

सूर की जन्म तिथि संवत् १५०४ वैशाख शक्ल-पंचमी स्वीकार की जाती है। ये जाति के सारस्वत ब्राह्मण थे। इनके पिता का नाम रामदास था। ये जन्मान्ध थे, पर यह अभी विवादग्रस्त है। इनका जन्म स्थान सीही (रुनकता) नामक ग्राम माना जाता है। मथुरा में गऊ-घाट पर रहते हुए इन्होंने अपने जीवन का बहुत-सा समय बिताया। ये अलौकिक प्रतिभा-सम्पन्न कवि थे। संवत् १६१० में इस महान् कवि ने यह नश्वर संसार त्याग दिया।

सूरदास ने ब्रजभाषा में रचना की। सूर-सारावली, साहित्य लहरी, सूर-सागर, उनके कुछ प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं। सभी रचानाएँ भक्ति से ओत-प्रोत हैं। श्री कृष्ण की सख्य भाव की भक्ति इनकी मुख्य उपासना विधि रही है। वात्सल्य रस के ये उत्कृष्ट कवि माने जाते हैं। यद्यपि सूरदास का काव्य-क्षेत्र वात्सल्य, श्रृंगार एवं भक्ति तक सीमित रहा परन्तु इनकी वाणी की सरसता के समक्ष विश्व का कोई अन्य कवि नहीं टिक सकता।

इनका अधिकांश काव्य गीत-काव्य है, जिसमें विभिन्न राग-रागनियों का समावेश है। भाषा सर्वत्र सरल एवं सुबोध है। माधुर्य एवं प्रसाद गुणों की अधिकता है। 'कंस-वध' आदि के वर्णन में ओज गुण का भी समावेश है। इनका 'भ्रमर-गीत' वियोग-श्रृंगार का अनूठा नमना है।

अपनी भक्ति-परक संगीतमय रचना के कारण सूरदास कालजयी कवि हैं।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अमर साहित्यकार प्रेमचन्द

अंग्रेज़ी साहित्य में जो स्थान डिकिन्स को, रूसी साहित्य में टॉलस्टाय एवं गोर्की को प्राप्त है, वही हिन्दी-साहित्य-जगत में मुन्शी प्रेमचन्द को मिला है। कथा-साहित्य में मुन्शी जी का अद्वितीय स्थान है, उन्हें उपन्यास-सम्राट् कहा जाता है।

प्रेमचन्द के पिता का नाम मुन्शी अजायबराय, माता का नाम आनन्दी देवी और स्वयं का नाम धनपतराय था। साहित्य-जगत में धनपतराय मुन्शी प्रेमचन्द के नाम से विख्यात हुए। इनका जन्म ३१ जुलाई सन् १८८० में लमही ग्राम में हुआ। प्रेमचन्द का सम्पूर्ण जीवन संघर्षों में व्यतीत हुआ। सरस्वती के इस वरद् पुत्र से लक्ष्मी रूठी ही रही।

मुन्शी प्रेमचन्द ने हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण करने के उपरान्त अध्यापन कार्य आरम्भ किया। अध्यापन के साथ अध्ययन एवं लेखन भी सुचारु रूप से चलता रहा। कुछ काल तक आपने डिप्टी इन्सपेक्टर ऑफ़ स्कूल के पद पर कार्य किया। पर बाद में नौकरी छोड़ दी और कलम पकड़ ली। आपने मर्यादा, माधुरी एवं हंस का सम्पादन भी किया। इनकी प्रथम रचना 'संसार का सबसे अनमोल रत्न' 'ज़माना' नामक पत्र में प्रकाशित हुई, राष्ट्रीय भावनाओं से परिपूर्ण रचना 'सोज़-ए-वतन' पर अंग्रेज़ी सरकार ने प्रतिबन्ध लगा दिया।

प्रेमचन्द पहले उर्दू में लिखते थे, परन्तु बाद में उन्होंने हिन्दी में लिखना शुरू कर दिया। अपने अल्प जीवन में उन्होंने लगभग दस उपन्यास, तीन नाटक एवं तीन सौ कहानियों का सर्जन किया। गबन, गोदान, सेवासदन, रंगभूमि, कर्मभूमि, निर्मला और प्रेमाश्रम इनके प्रमुख उपन्यास हैं।

ग्रामीण जीवन के यथार्थ को आदर्श के परिधान से सुसज्जित कर, पाठक के सामने लाने में प्रेमचन्द दक्ष थे। उनके साहित्य में तत्कालीन कृषक एवं श्रमिक के जीवन का यथार्थ-चित्रण समाज में क्रान्ति लाने में सफल हुआ। मानवतावाद के समर्थक मुन्शी प्रेमचन्द गाँधीजी की विचारधारा से प्रभावित थे पर अपने जीवन के अन्तिम दिनों में उनका झुकाव मार्क्सवाद की ओर हो गया।

प्रेमचन्द ने साहित्य को नवजीवन प्रदान किया। फ़ारसी मिश्रित बोलचाल की भाषा में मानव-मनोभावों का सजीव चित्रण किया। इनका

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

साहित्य समाज का दर्पण तो है ही, साथ ही दीपक भी है। अपनी साहित्य साधना से अमर लेखक प्रेमचन्द, भविष्य में भी सर्वदा मानव-कल्याण भावना के प्रेरणा-स्रोत बने रहेंगे।

शान्तिदूत जवाहरलाल नेहरू

भारतीय जनता के हृदय-सम्राट् जवाहरलाल नेहरू वस्तुतः महा-मानव थे। आपका जन्म १४ नवम्बर, १८८९ को आनन्द भवन, इलाहाबाद में हुआ। आपके पिता थे पं० मोतीलाल नेहरू तथा माता श्रीमती स्वरूप रानी। शिक्षा आरम्भ में घर पर, फिर इंग्लैंड के हैरो स्कूल एवं कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में प्राप्त की। ट्रिनिटी कालिज से कानून में दक्षता प्राप्त कर वे बैरिस्टर बनकर भारत लौटे। भारत में उनका सम्पर्क राष्ट्र-पिता महात्मा गाँधी जी से हुआ तथा उन्हीं के परामर्श पर इन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया।

नेहरू जी का 'विश्व-बन्धुत्व' की भावना में विश्वास था। उनकी धारणा थी कि प्रान्तीयता, भाषा-विषयक-वैमनस्य, साम्प्रदायिकता एवं आर्थिक विषमता मानव को पशु बनाती है। नेहरूजी स्वतंत्र भारत के प्रथम प्रधानमंत्री थे। अपने कार्यकाल में इन्होंने भारत की प्रतिष्ठा को सम्पूर्ण विश्व में ऊँचा उठाया। अहिंसा में इनकी पूर्ण आस्था थी। अपना पक्ष विजयी होते हुए भी संयुक्त-राष्ट्रसंघ के युद्ध-विराम के निर्णय को इन्होंने १९४९ में स्वीकार कर लिया।

नेहरू पंचशील-सिद्धान्तों के संस्थापक थे। आपने बाण्डुग कान्फ्रेन्स में विश्व के तटस्थ राष्ट्रों को शान्ति का मार्ग दिखाया। चीन ने १९६२ में नेहरूजी के साथ विश्वासघात किया, फिर भी उनका बर्ताव शान्तिमय रहा। उनकी शान्ति-नीति कायरता-जन्य न होकर बुद्ध और गाँधीजी की अहिंसा से उत्पन्न नैतिक शक्तियुक्त थी। वे विश्व नागरिक थे। न्यायप्रियता, निष्पक्षता एवं शान्ति-प्रियता नेहरूजी के सम्पूर्ण जीवन के महत्त्वपूर्ण उद्देश्य थे।

२७ मई १९६४ को सम्पूर्ण विश्व नेहरूजी के असामयिक निधन पर शोक-सागर में डूब गया। भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व नेहरू जी की नीतियों के लिए उनका ऋणी रहेगा। महामानव नेहरू ने महायुद्धों से पीड़ित मानवता के घावों पर अहिंसा का मरहम लगाया। संयुक्त-राष्ट्र-संघ यदि नेहरूजी के सिद्धान्तों पर आरूढ़ रहा तो आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि भविष्य में विश्व महायुद्ध का विष सदैव के लिए विनष्ट हो जाएगा तथा पूर्ण शान्ति स्थापित हो जाएगी।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

लोकनायक जयप्रकाश नारायण

श्री जयप्रकाश का जन्म बिहार के शाहबाद ज़िले के 'सिताबदियारा' कस्बे में सन् १९०२ में हुआ। पिता हरसूदयाल नहर विभाग में ज़िलेदार थे एवं माता फूलरानी बड़ी कर्त्तव्यपरायण तथा कोमल स्वभाव की थीं। उनकी शिक्षा-दीक्षा सिताबदियारा और पटना में हुई। सन् १९१९ में हाई स्कूल परीक्षा-प्रथम श्रेणी में पास की और उन्हें छात्रवृत्ति मिलने लगी। विज्ञान लेकर इण्टर पास की तथा पैसा न होने पर भी ये ऊँची शिक्षा के लिए अमेरिका चले गए। वहाँ मज़दूरी करते-करते मज़दूर-आन्दोलन में शामिल हो गए। १९२९ में इन्होंने समाजशास्त्र में एम०ए० पास की।

भारत में आकर गाँधी और नेहरू के विचारों से प्रभावित हुए। उन का विवाह गाँधीजी की शिष्या प्रभावती से हुआ (जिनका १५ अप्रैल, १९७३ को देहान्त हो गया था)।

उसी साल वर्धा में उनकी जवाहरलाल नेहरू से भेंट हुई। दोनों एक दूसरे के मित्र बन गए। लाहौर कांग्रेस के बाद, १९३० में जवाहरलाल ने जयप्रकाश को कांग्रेस के श्रमिक-अनुसन्धान-विभाग का सचिव बना दिया।

सन् १९३३ में, सत्याग्रह में भाग लेने पर जयप्रकाश को नासिक जेल में रखा गया। यहाँ राममनोहर लोहिया, अच्युत पटवर्धन, यूसुफ मेहर-अली, मीनू मसानी आदि की संगति में रहकर इन्हें समाजवादी विचार-धारा का गहरा अध्ययन करने का अवसर मिला। ये पक्के समाजवादी हो गये। समाज के लिए व्यक्ति को बलिदान करना चाहिए, व्यक्ति से समाज ऊपर है, अपने स्वार्थ की बजाय सारे समाज के कल्याण की चिन्ता करनी चाहिए—इस विचार के प्रचार में जयप्रकाश का सारा जीवन व्यतीत हुआ।

१९३१-३२ में जो स्वाधीनता आन्दोलन चले, उनमें जयप्रकाश नारायण पूरी तरह कूद पड़े। सारे देश का दौरा करके उन्होंने गाँवों, कस्बों और नगरों में भाषण देकर नवयुवकों में आज़ादी की आग जगाई।

सन् १९३४ में, बिहार में भीषण भूकम्प आया। तब जयप्रकाश ने इतनी सेवा की कि बच्चे-बच्चे की ज़बान पर इनका नाम आ गया। उसी साल पटना में आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में कांग्रेस समाजवादी दल की स्थापना हुई। जयप्रकाश नारायण महासचिव बनाये गए। कई बार जेल गये। सन् १९३९ में द्वितीय विश्व-युद्ध छिड़ गया। जयप्रकाश ने इस युद्ध में ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों को घसीटे जाने का विरोध किया।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

१९४२ में बम्बई कांग्रेस ने 'अंग्रेजो ! भारत छोड़ो' का प्रस्ताव पास किया। उन्होंने क्रान्ति का सफल संचालन किया। फिर पकड़े गए तथा अप्रैल, १९४६ में रिहा किए गए।

१९४७ में भारत स्वतन्त्र हुआ। तब जवाहरलाल ने जयप्रकाश से एक मन्त्रिपद संभालने को कहा। परन्तु जयप्रकाश ने इनकार कर दिया। फिर भी भारत के अधिकांश लोग यही समझते रहे कि नेहरूजी के बाद जयप्रकाशजी ही भारत के प्रधानमन्त्री बनेंगे। परन्तु पद का लोभ इन्हें छू भी नहीं गया। ये विनोबा भावे के सर्व-सेवा-संघ में शामिल होकर कार्य करने लगे। इन्होंने भूदान आन्दोलन में बहुत काम किया। सारे भारत में इनके नैतिक आदर्शों तथा विचारों का प्रचार हुआ। लोग इन्हें 'लोकनायक' मानने लगे। चम्बल के डाकुओं ने इनकी प्रेरणा से हथियार डाल दिये।

३१ दिसम्बर, १९७४ को जयप्रकाश नारायण ने बिहार-आन्दोलन चलाया। इसका लक्ष्य था—सम्पूर्ण सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिवर्तन। मार्च १९७७ में जयप्रकाश नारायण 'लोकनायक' की उपाधि से विभूषित किए गए। उन्हीं के आशीर्वाद से केन्द्र में जनता सरकार बनी। उनका स्वास्थ्य बिगड़ता गया। चिकित्सा के अनेक प्रयास किए गए। ८ अक्तूबर, १९७९ को पटना में उनका स्वर्गवास हो गया। उनकी कर्मठता देशभक्ति एवं न्याय-प्रियता के लिए भारतवासी सदैव उनके ऋणी रहेंगे।

हाकी का जादूगर—ध्यानचन्द

ध्यानचन्द हाकी के सर्वाधिक लोकप्रिय खिलाड़ी थे। हाकी-जगत में भारत शिखर का स्थान लेता रहा है, इसका श्रेय ध्यानचन्द को ही था। इस महान् खिलाड़ी का जन्म २९ अगस्त, सन् १९०७ में झाँसी में हुआ। यहीं से इन्होंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। आरम्भ से ही व्यायाम और खेलकूद के शौकीन ध्यानचन्द सेना में भर्ती हो गए। इनके हाकी जीवन का श्रीगणेश सेना में आने पर ही हुआ। वे 'झाँसी हीरोज' हाकी टीम के प्रमुख खिलाड़ी बन गए।

कुछ ही समय में ध्यानचन्द के खेल की धाक सम्पूर्ण देश में जम गई। ध्यानचन्द अग्रिम-पंक्ति के मुख्य खिलाड़ी (सैण्टर फारवर्ड) के रूप में खेला करते थे। सन् १९२६ में ये प्रथम बार सेना की टीम के साथ न्यूजीलैण्ड और आस्ट्रेलिया गए। सन् १९३५ में ये दूसरी बार हाकी टीम के कप्तान बनकर न्यूजीलैण्ड और आस्ट्रेलिया गए। भारतीय टीम ने कुल मिलाकर

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

४८ मैच खेले तथा ५९६ गोल किए, इनमें से २०१ गोल अकेले ध्यानचन्द ने किए थे।

ध्यानचन्द ने तीन बार ओलम्पिक खेलों में भाग लिया। १९२८ में एम्स्टर्डम (हालैंड), १९३२ में लासएंजिलिस (यू० एस० ए०) तथा १९३६ में बर्लिन (जर्मनी) कप्तान बनकर गए। जर्मन डिक्टेटर हिटलर की उपस्थिति में भारतीय टीम ने उत्साहपूर्वक हाकी का खेल खेला तथा जर्मनी भारत से एक के मुकाबले में आठ गोल से हार गया। ध्यानचन्द को विश्व का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी होने का श्रेय मिला। भारतीय टीम के साथ ध्यानचन्द ने सम्पूर्ण यूरोप में भ्रमण किया, अनेक मैच खेले और उनमें शानदार सफलता प्राप्त की। इन्होंने विदेशों में २०७ मैच खेले और ५५५ गोल किए। अपने खिलाड़ी जीवन में कुल १७८३ गोल किए। वस्तुतः हाकी-जगत में ये अनुपम मापदण्ड स्थापित कर गए हैं।

भारतीय नवयुवकों का पथ-प्रदर्शक यह प्रसिद्ध खिलाड़ी ३ दिसम्बर, १९७९ को अपना पार्थिव शरीर छोड़ स्वर्ग सिधार गया।

ओलम्पिक खेल

'ओलम्पिक' विश्व का सबसे भव्य और सबसे रंगीन खेल-समारोह है। हर चार साल बाद दुनिया के कोने-कोने से यौवन की मस्ती में डूबे, सुन्दर तथा स्वस्थ युवक-युवतियाँ अपने मनोबल, शारीरिक सामर्थ्य एवं खेल-कौशल की श्रेष्ठता सिद्ध करने के लिए इन खेलों में एकत्र होते हैं। ओलम्पिक-विजेता बनने के लिए प्रतियोगी वर्षों पहले से कठोर साधना करके अपने खेल की तैयारी करते हैं और प्रतियोगिता में उतरकर अविश्वसनीय कार्य कर दिखाते हैं।

प्राचीन ओलम्पिक की शुरूआत एक धार्मिक मेले के रूप में यूनानियों ने ७७६ ईस्वी पूर्व की थी। ओलम्पिक खेलों के दिनों में यूनान में लड़ाई-झगड़े और युद्ध आदि बन्द कर दिए जाते थे। चार वर्ष में अन्तर से यह खेल-समारोह ११०२ वर्षों तक अर्थात् सन् ४२६ तक होते रहे। इन खेलों के कारण समाज में खिलाड़ियों का सम्मान होने लगा। रोमन सम्राटों ने जब यूनान पर अधिकार कर लिया, तब उन्होंने इन खेलों को बन्द करवा दिया।

इसके १४७० वर्ष बाद फ्रांस के एक शिक्षक बेरन पीयरद कुबर्टिन के प्रयासों से, आधुनिक ओलम्पिक खेलों की शुरूआत ६ अप्रैल, सन् १८९६

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

को हुई। यह समारोह ५० हज़ार दर्शकों की उपस्थिति में, एथेंस के प्राचीन ओलम्पिक मैदान में हुआ। सर्वप्रथम तिकड़ी कूद (हाप स्टेप एण्ड जम्प) प्रतियोगिता में जेम्स कोनोली को विजय प्राप्त हुई। मेराथन दौड़ में बाजी मारी यूनान के लुई ने। अमरीकी खिलाड़ियों ने सबसे अधिक पदक जीते। कुल १३ राष्ट्रों के २८५ खिलाड़ियों ने भाग लिया और ४२ प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ।

सन् १९०० में दूसरा ओलम्पिक-समारोह पेरिस में हुआ, जिसमें २० राष्ट्रों के १०६७ खिलाड़ियों ने भाग लिया। सन् १९०४ में तीसरा ओलम्पिक सेण्ट लुई (अमरीका) में हुआ, जिसमें ११ राष्ट्रों के ४९६ खिलाड़ियों ने भाग लिया। १९०८ में चौथा ओलम्पिक लन्दन में हुआ, जिसमें २२ राष्ट्रों के २०५९ खिलाड़ी शामिल हुए। ओलम्पिक खेलों में हाकी को सबसे पहले इसी समारोह में सम्मिलित किया गया।

१९२२ में पाँचवाँ ओलम्पिक स्टाकहॉम में हुआ, जिसमें २८ राष्ट्रों के १५३१ प्रतिस्पर्धी थे। इनमें ५७ महिलाएँ थीं।

१९१६ का ओलम्पिक समारोह प्रथम महायुद्ध के कारण न हो सका। सातवें ओलम्पिक का आयोजन १९२० में, एण्टवर्प (बेल्जियम) में हुआ। इसमें १९ राष्ट्रों के २६०६ प्रतिस्पर्धी सम्मिलित हुए। सन् १९२४ का ओलम्पिक पेरिस में हुआ। इसमें ४४ देशों के ५५३३ प्रतिस्पर्धियों ने भाग लिया। १९२८ में ओलम्पिक समारोह अमस्टर्डम (हालैंड) में हुआ, जिसमें ४६ राष्ट्रों के ३०१५ प्रतिस्पर्धियों नें भाग लिया (इनमें २९० महिलाएँ थीं)। भारत की हाकी टीम ने पहली बार प्रतियोगिता में उतरकर हाकी में स्वर्णपदक जीता—टीम के कप्तान जयपालसिंह थे।

दसवें ओलम्पिक का अयोजन लास एंजिल्स (अमरीका) में हुआ, जिसमें ३७ राष्ट्रों के १४०८ प्रतिस्पर्धी शामिल हुए। भारत ने दूसरी बार हाकी का स्वर्णपदक जीता—कप्तान लालशाह बुखारी थे।

ग्यारहवाँ ओलम्पिक १९३६ मे, बर्लिन (जर्मनी) में हुआ। यहीं से ओलम्पिक की मशाल को ओलम्पिया ग्रामस्थ जीयस के मन्दिर से ओलम्पिक-क्रीड़ाङ्गण तक लाने की प्रथा प्रारम्भ हुई। इस ओलम्पिक में ५३ देशों के ५००० खिलाड़ियों ने भाग लिया। जर्मनी के प्रतिस्पर्धियों ने इस ओलम्पिक में ३१ स्वर्णपदक जीते, अमरीकियों ने २६। भारत ने तीसरी बार हाकी का स्वर्णपदक जीता—कप्तान थे ध्यानचन्द जो हाकी के जादूगर कहलाए। १९४० में द्वितीय विश्वयुद्ध के कारण टोकियो ओलम्पिक

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

न हो सका। १९४४ में भी युद्ध के ही कारण लन्दन में यह समारोह न हो सका।

१९४८ में लन्दन ओलम्पिक में ५९ राष्ट्रों के ४४६८ प्रतिस्पर्धियों ने भाग लिया। भारत ने चौथी बार हाकी का स्वर्णपदक जीता—कप्तान किशनलाल थे। १९५२ में हेलसिंकी में १५वाँ ओलम्पिक हुआ। इसमें ६९ राष्ट्रों के ५८६७ खिलाड़ियों ने भाग लिया। रूस को २३ स्वर्णपदक तथा ५४ अन्य पदक प्राप्त हुए। भारत ने पाँचवीं बार हाकी में स्वर्णपदक जीता—कप्तान के० डी० सिंह 'बाबू' थे। १९५६ में ओलम्पिक मेलबोर्न में हुआ, जिसमें ६७ देशों के ४००० खिलाड़ी शामिल हुए। भारत ने हाकी में पाकिस्तान को १—० से हराकर स्वर्णपदक जीता—कप्तान बलबीर सिंह थे। १९६० में ओलम्पिक रोम में हुआ। रूस ने ४२ स्वर्ण, २९ रजत तथा ३१ काँस्य पदक जीतकर धूम मचा दी। इस बार हाकी में भारत पाकिस्तान के हाथों हार गया।

१९६४ में ओलम्पिक पहली बार एशिया में—टोकियो (जापान) में हुआ। इसमें जापानियों ने ६ स्वर्ण, ५ रजत, ८ काँस्य पदक जीते। भारत ने हाकी में पाकिस्तान को हराकर स्वर्ण पदक जीता।

१९६८ में यह समारोह मेक्सिको में हुआ, जिसमें ११२ राष्ट्रों के ७१०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिनमें ९०० महिलाएँ थीं। इस बार हाकी का स्वर्णपदक पाकिस्तान ने जीता।

१९७२ में ओलम्पिक म्यूनिख में हुआ, जिसमें १२३ देशों के ७८६३ खिलाड़ियों ने भाग लिया। इनमें १२५१ महिलाएँ थीं। २२५५ टीम अधिकारी थे। ४० लाख दर्शकों ने खेल का आनन्द लिया। रूस ने सर्वाधिक पदक (९९) जीते—५० स्वर्ण, २७ रजत, १२ काँस्य। अमरीका ने ३३ स्वर्ण, ३१ रजत, ३० काँस्य पदक जीते। सन् १९७६ और ८० में ये खेल क्रमशः कनाडा और रूस में आयोजित किए गए।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि ओलम्पिक समारोह विश्व के देशों को एक-दूसरे के निकट लाने का एक सूत्र बनते जा रहे हैं—प्रायः समस्त विश्व के देश इनमें भाग लेने लगे हैं।

ओलम्पिक में सबसे अधिक महत्त्व मैराथन की दौड़ का, दूसरे नम्बर पर एथलैटिक प्रतियोगिताओं का होता है, यद्यपि तैराकी, घुड़सवारी, नौका दौड़, चक्का-फेंक, हैमरथ्रो, निशानेबाजी, हॉकी, फुटबाल, घुड़दौड़, मोटर दौड़, कुश्ती आदि के मुकाबिले भी होते हैं। प्रायः अन्तिम मुकाबला घुड़दौड़ का होता है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

भारत को ओलम्पिक में चमकने के लिए बहुत कुछ प्रयत्न करना होगा।

बस की आत्मकथा

मेरा नाम बस है। मेरा काम जनता को अपनी गोद में बिठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना है। मेरा जीवन सदैव दूसरों के काम आने में व्यस्त रहता है। मेरे मन में सदैव परोपकार का भाव रहता है, परन्तु लोग मेरे साथ निर्दयतापूर्ण व्यवहार करते हैं। लोग यह नहीं सोचते कि यात्रा करते समय उन्हें मेरे साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए। लेकिन मेरी प्रार्थना कौन सुनता है ?

लोग हर प्रकार का सामान मुझ पर लादकर ले जाते हैं। कुछ लोग शराब पीकर ऊल-जलूल बातें करते हैं। बच्चे मेरी सीट फाड़ देते हैं, मेरा रूप बिगाड़ देते हैं। ड्राइवर और कण्डक्टर तो मेरे साथ मन चाहा अन्याय करते हैं। मुझे निर्जीव समझकर मेरी गोद तो क्या मेरे सिर पर भी अनेक सवारियाँ लाद देते हैं। मेरा चालक मुझे बेदर्दी से मोड़ता है, खाली सड़क मिलने पर वहुत दौड़ाता है। आराम का अवसर मुझे कभी-कभी मिलता है।

मेरा जन्म टाटा महोदय के कारखाने में हुआ। मेरा निर्माण होने पर मुझे दिल्ली परिवहन निगम की मुद्राओं ने अपनाया। मेरे यहाँ आने पर भव्य स्वागत हुआ। मेरी देखभाल के लिए अनेक कर्मचारी नियुक्त किए गए, लेकिन सभी कामचोर थे। काम बहुत लिया जाने लगा और सेवा का नाम नहीं। घोड़ा चार सवारी ढोता है परन्तु उसका मालिक उसकी जी भरकर सेवा करता है, प्यार से उसकी पीठ थपथपाता है, थकान दूर करने के लिए मालिश करता है और कोमल घास, चने का दाना आदि बढ़िया भोजन खिलाता है।

पर हाय ! अपना ऐसा भाग्य कहाँ ? टूटी-फूटी सड़कों पर चलना, सैंकड़ों मील की यात्रा करना तथा चालकों की निर्दयता सहना ही मेरे भाग्य में लिखा है। आज वक्त से पहले ही मेरा बुढ़ापा आ गया है। शरीर के अंग-प्रत्यंग ने जवाब दे दिया है। बस अब रुकने के सिवाय कोई चारा नहीं।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ऋतुराज वसन्त

हमारा देश भारत प्रकृति का पालना है। प्रकृति यहाँ अपने अनेक रंग-बिरंगे मोहक रूपों में देखने को मिलती है। वर्ष की छह ऋतुएँ ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, हेमन्त और वसन्त क्रम से आकर स्वयं धरती का श्रृंगार करती हैं। ऋतुओं का यह चक्र शायद ही संसार में कहीं देखने को मिले। वसन्त, ऋतुओं की इस माला का सबसे चमकता हुआ मोती है। शिशिर के बाद हेमन्त ऋतु आती है। तब शीतकाल का प्रकोप कम होने लगता है। पर वनस्पति पर वीरानी छा जाती है। तभी प्रकृति की सूनी माँग में सिन्दूर भरता ऋतुराज वसन्त आता है। वसन्त की मादकता धरती के कण-कण में समा जाती है। वसन्तागमन पर इतना मधु बरसता है कि मास का नाम ही मधु-मास पड़ जाता है।

वसन्त ऋतु हेमन्त और शिशिर की समाप्ति का सन्देश लेकर आता है। शिशिर के भयानक शीत से जड़ और चेतन दोनों ठिठुर जाते हैं, वनस्पति पाले से झुलस जाती है, लोग ठण्ड से त्राण पाने के लिये त्राहि-त्राहि करने लगते हैं, शीत काल की तीक्ष्ण हवा तीर की तरह हड्डियों तक को बेध देती है तथा शरीर की शिराओं का रक्त सर्द होकर जमने लगता है— ऐसे अवसर पर जन-समुदाय वसन्त की बाट जोहता है। वसन्त आता है और सबको कष्ट-मुक्त करता है। पशु-पक्षी, पेड़-पौधे तथा जन-समुदाय वसन्त के आगमन पर सब मुस्कराने लगते हैं, धरती पर ठिठुरन कम हो जाती है। मौसम अत्यन्त सुहावना और गुलाबी हो जाता है, हर्षोन्माद की लहर से वातावरण सरस बन जाता है। धरती अँगड़ाई लेकर फिर से चेतन हो जाती है। वह हँसती, मचलती, थिरकती बड़ी ही मधुर मालूम पड़ती है।

ऋतुराज के स्वागतार्थ वन-प्रान्तर में वृक्ष, लता-गुल्म अपना श्रृंगार करते हैं। खेत में खड़ी सरसों वासन्ती रंग की साड़ी पहने प्रियतम वसन्त के आगमन की खुशी में बल खाती और लहराती मालूम पड़ती है। दाक्षणी वायु के मन्द-मन्द झोंकों से लहराता हुआ उसका आँचल सबके हृदय पर मोहिनी डाल देता है। जंगल में दूर-दूर तक हरीतिमा-ही-हरीतिमा दिखलाई पड़ती है। स्थान-स्थान पर स्वच्छ जल के झरने कल-कल के संगीत से मखरित हो उठते हैं। सरोवरों में भरा हुआ स्वच्छ जल सूर्य के आलोक में चाँदी के समान चमकने लगता है। शाखों पर बैठे हुए पक्षियों का कलरव और कोयल की सुरीली तान मानो इस वसन्तोत्सव में शहनाई गूंज उठती है। रस के लोभी भ्रमर फूलों पर मँडराते हैं, तितलियाँ फूलों की

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

गोद में बैठकर अभिमान से फूली नहीं समातीं। सब ओर मकरन्द और पराग की धूम मची होती है। लगता है, वसन्त की मस्ती में सब अपना होश खो बैठे हों, पूरी सृष्टि राग-रंग में डूबी हुई प्रतीत होती है।

फागुन और चैत के महीने वसन्त के महीने होते हैं। फागुन में वसंत पंचमी महोत्सव मनाया जाता है। इस दिन ज्ञान की देवी सरस्वती का पूजन होता है तथा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम मनाए जाते हैं।

वसन्त ऋतु में न अधिक ठण्ड पड़ती है और न ज़्यादा गर्मी। अतः यह ऋतु स्वास्थ्य की दृष्टि से भी उत्तम ऋतु है। इस मौसम में लोग कठोर परिश्रम कर सकते हैं तथा भूख-प्यास भी खूब लगती है, जिससे शारीरिक शक्ति बढ़ती है।

वसन्त में ही होली का पर्व मनाया जाता है। इस अवसर पर पकी हुई फसलें खेतों में खड़ी होती हैं। हर्ष और आनन्द में डूबे हुए कृषक नाचने लगते हैं। डफ और अलगोझों पर रसियों का अलाप गूँज उठता है—लगता है संसार में सब ओर सुख-ही-सुख है। वसन्त इस प्रकार जन-जीवन में नई चेतना और स्फूर्ति का संचार करता है। सभी देशों के कवियों ने विश्व-साहित्य में वसन्त की मादकता का वर्णन किया है।

पर्वतीय प्रदेश नैनीताल की यात्रा का वर्णन

भारत के उत्तर प्रदेश में कछुए (कूर्म) की पीठ जैसा एक पठार है उसे प्राचीन काल में कूर्मांचल नाम से पुकारा जाता था। उसी का अपभ्रंश है "कुमायूँ"। यह प्रदेश हमारे प्राचीन इतिहास में बड़ा महत्त्व रखता था। इसी कुमायूँ प्रदेश में नैनीताल की सुन्दर नगरी बसी है। यह नगरी पर्यटकों का स्वर्ग है। इसी नगरी को देखने के लिए हमारे स्कूल के विद्यार्थियों का एक दल नैनीताल गया। रेल द्वारा हम काठगोदाम पहुँचे। काठगोदाम से हम लोगों ने बस ली।

पर्वतों से लिपटी सर्पाकार सड़कों पर से जब हमारी बस नैनीताल की ओर दौड़ने लगी तो लगा कि पर्वतीय-सुषमा हमें सम्मोहित कर रही है। काठगोदाम से ३५ किलीमीटर दूर पर्वतों की चोटियों में खेलती हुई नैनीताल की नगरी है। नैनीताल झीलों वाला क्षेत्र है, इसमें छोटी-बड़ी पन्द्रह झीलें हैं। यह नगरी लगभग डेढ़ किलोमीटर लम्बी तथा एक किलो-मीटर चौड़ी है। नैना झील का आकार नयन जैसा है; यह भी कहते हैं कि इसका सम्बन्ध माता पार्वती के नयन से है। झील के किनारे पर नयना देवी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

का प्राचीन मन्दिर है। ताल के किनारे पर बसा होने के कारण नगरी का नाम नैनीताल पड़ गया है।

नैनीताल में हम पर वहाँ के निवासियों की सरलता तथा दीनता का गहरा प्रभाव पड़ा। कठोर भूमि से जीविका खुरच लेनेवाले पर्वत-निवासी वहाँ की प्रकृति के समान ही सरल तथा ईमानदार हैं। उनके चरित्र में यदि कोई अभाव है तो वह है छल, कपट तथा कटुता का। नैनीताल की नगरी में आगन्तुकों के ठहरने के लिए अनेक होटल और 'रेस्ट-हाउस' हैं। हमारा दल भी एक होटल में जाकर ठहर गया।

सौभाग्यवश हम शुक्ल पक्ष में नैनीताल गए, जब रात को चन्द्रमा अपनी पूरी कलाओं से उदित हुआ करता है। एक दिन चाँदनी रात में हमारा दल नौका-विहार को निकला। हमारी नौका की पतवार जब शान्त जल में छप शब्द के साथ पड़ती थी, तब उसके द्वारा सम्पन्न लहरें करवट बदल-बदल कर पुनः सो जाती थीं। तभी दल के कुछ विद्यार्थियों ने इस मादक वातावरण में संगीत छेड़ दिया। चारों ओर के घिरे हुए पहरेदार वृक्ष मानो सिर झुकाए, कान लगा के हमारे संगीत को सुनने में मस्त थे। उस चन्द्रिका-चर्चित रात्रि का नौका-विहार हमारे दल के लोगों के मस्तिष्क को गहराई तक छू गया और वह चिरकाल तक मीठी स्मृतियों की याद दिलाता रहेगा।

एक दिन दल ने पर्वतारोहण करने की ठानी। हम लोग चीना पीक नामक शिखर पर गए। शिखर पर पहुँचकर हमें अपने परिश्रम का बड़ा मीठा फल मिला। हमारे सामने अनन्त दूरी तक फैली हुई हिमाच्छादित अलकनन्दा, त्रिशूल के तुंग शिखर शोभायमान थे। हिम से ढके श्वेत पर्वत भगवान् शंकर के अट्टहासों के संगठित समूह जान पड़ते थे। नैनीताल समुद्र तट से प्रायः १८०० मीटर ऊपर है तथा चीना पीक उससे भी ६०० मीटर ऊपर है। इस ऊँचे शिखर से झील का नयनाकार स्पष्ट हो जाता है और मखमली बिछावन पर सोई हुई झील किसी मध्ययुगीन मलिका-सी प्रतीत होती है।

पर्यटकों की सुख-सुविधा के लिए नैनीताल में एक छोटा-सा बाज़ार भी है। इसके अतिरिक्त सिनेमा-गृह, जलपान-गृह, खेल के मैदान, उपवन आदि की भी सुन्दर व्यवस्था है। यह नगरी हर प्रकार से मनोरम है।

नैनीताल की रमणीक नगरी की शोभा का खूब आनन्द उठाकर हमारे दल के लोगों ने यहाँ से प्रस्थान किया। जिस दिन हम लोग वहाँ से

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

चले, आकाश मेघों से ढक गया था। शीतल वायु शीतलतर होती चली गई। झंझा के वेग ने मेघों की झोली को झकझोरकर जल तथा ओलों को उँडेल दिया। चारों ओर बर्फ़ के अम्बार छा गए। दृश्य हरित से श्वेत हो गया। नैनीताल की नगरी मानो श्वेत-दुशाला ओढ़े हमारे दल को विदा दे रही हो। प्रकृति के पालने में पली उस अपूर्व नगरी से तृप्त नेत्रों और खाली जेबों के साथ हमने विदा ली।

विज्ञान—अभिशाप या वरदान

विज्ञान का अभिप्राय है—प्राकृतिक शक्तियों का विशेष ज्ञान। इससे यह स्पष्ट है कि विज्ञान पदार्थ-जगत का ऊपरी अध्ययन न करके प्रत्येक तत्व की तह तक पहुँचने का प्रयत्न करता है। विज्ञान भौतिक जगत की घटनाओं का, सूर्य-चन्द्र-ग्रह नक्षत्र आदि का, चिकित्सा का, जीव-वनस्पति, पशु-पक्षी और मनुष्य-जगत का सब प्रकार से गम्भीर अध्ययन करता है। पृथ्वी के गर्भ में स्थित नाना धातुओं, मिट्टी के विविध प्रकारों, वातावरण के विविध परिणामों, समुद्र की गहराइयों और पर्वतों की ऊँचाइयों का भी अध्ययन करता है। चिन्तन, तर्क, प्रयोग एवं परीक्षण के बिना विज्ञान किसी बात को ठीक नहीं मानता। विज्ञान प्रत्यक्ष जगत में विश्वास रखता है, परोक्ष में नहीं। आज के युग में प्रकृति का कोई भी विषय ऐसा नहीं, जहाँ तक विज्ञान की पहुँच न हो। निरन्तर अनुसन्धान, छानबीन और आविष्कार के द्वारा विज्ञान ने ऐसे साधन मनुष्य को प्रदान किए हैं जो अत्यन्त चमत्कार पूर्ण हैं, साथ ही उनके कारण मानव-जीवन सुख-सुविधा-मय हो गया है।

आज विज्ञान द्वारा रेलवे ट्रेन, मोटर, ट्राम, जलयान, वायुयान, हलीकाप्टर, राकेट आदि बनाए जा चुके हैं, जिनके द्वारा स्थान की दूरी बहुत कम कर दी गई है। जिन स्थानों पर मनुष्य वर्षों और महीनों में पहुँचता था वहाँ अब दिनों और घण्टों में पहुँच जाता है। राकेट इतना तीव्रगामी यान है कि उस पर सवार होकर मनुष्य चार लाख किलोमीटर दूर चाँद की भी यात्रा कर आया है। अब वह डेढ़ करोड़ किलोमीटर दूर मंगल ग्रह पर जाने की तैयारी कर रहा है।

विज्ञान के साधनों द्वारा हम केवल दूर-से-दूर स्थान पर ही नहीं पहुँच सकते अपितु सहस्रों किलोमीटर की दूरी पर स्थित वस्तु को भी दूर-दर्शक यन्त्र की सहायता से देखने में समर्थ हो गए हैं। अन्वीक्षण यन्त्र द्वारा हम सूक्ष्मातिसूक्ष्म अदृश्य पदार्थों को देखने की सामर्थ्य प्राप्त कर चुके हैं।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

रेडियो द्वारा न केवल हज़ारों किलोमीटर दूर स्थित नगर के समाचार क्षण भर में सुन सकते हैं, अपितु टेलीविज़न की सहायता से वहाँ बोलनेवाले का चित्र प्रत्यक्ष देख सकते हैं। टेलीविज़न द्वारा कोई भी चित्र, दृश्य या अभिनय हज़ारों किलोमीटर की दूरी पर ज्यों-का-त्यों प्रदर्शित किया जा सकता है।

विज्ञान ने समाचार-प्रेषण (संचार) के क्षेत्र में कम आश्चर्यजनक चमत्कार नहीं किए। तार, टेलीफोन, टेलीप्रिन्टर, बेतार के तार आदि यन्त्रों द्वारा दिन-रात समाचारों का एक स्थान से दूसरे स्थान पर संचार किया जाता है।

अब पलक मारते ही कैमरे द्वारा चित्र खींच लिया जाता है और असंख्य चित्रों की माला चलचित्र बन जाती है। इनके द्वारा व्यक्तियों को चलते-फिरते, चेष्टाएँ और अभिनय करते साथ ही प्रत्यक्ष बोलते दिखलाना विज्ञान का ही चमत्कार है।

आज मुद्रण-यन्त्र ज़रा-सी देर में समाचार-पत्र या पुस्तक की सहस्रों प्रतियाँ छाप देते हैं; रोटेरी मशीन एक रात में समाचार-पत्रों की लाखों प्रतियाँ छाप देती है। आफ़सैट मशीनें चित्रों, विज्ञापनों, कैलेंडरों को धड़ाधड़ छाप देती हैं।

एक्स-रे भी विज्ञान का एक अद्भुत चमत्कार है। इसकी सहायता से लकड़ी, चमड़ा, लोहा, हड्डी, आदि के अन्दर की वस्तु का चित्र लिया जा सकता है। एक्स-रे की सहायता से ही डाक्टर लोग (रेडियोलोजिस्ट) शरीर के विभिन्न भागों का फ़ोटो लेकर रोग की निश्चित जानकारी प्राप्त कर लेते हैं।

विज्ञान ने मनोरंजन तथा आमोद-प्रमोद के लिए नाना चमत्कारपूर्ण साधनों को जन्म दिया है। इनमें ग्रामोफ़ोन, सिनेमा और रेडियो सर्वविदित हैं।

विद्युत भी विज्ञान का एक अद्भुत चमत्कार है। इसके द्वारा एक महान् शक्ति मनुष्य के वश में हो गई है। इसके बल से बल्ब और ट्यूबें प्रकाश करते हैं, पंखे हवा करते हैं, हीटर खाना तैयार करते हैं, भट्टियाँ धातुओं को पिघलाती, ढालती और जोड़ती हैं। इसी शक्ति से तकलियाँ सन, रेशम, ऊन कातती हैं और खड्डियाँ (पावरलूम्स) कपड़ा बुनती हैं। इसी की शक्ति से रेल भी चलती है तथा लिफ्ट के द्वारा ऊँचे भवनों की

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

ऊँची मंजिल पर पल भर में पहुँचा जा सकता है। ट्रामें शहरों में इसी की शक्ति से दौड़ती-फिरती हैं।

भाप की शक्ति से रेल तथा जलयान चलते हैं। पेट्रोल से मोटरें तथा वायुयान चलते हैं। डीज़ल से रेल के इन्जन तथा ट्रैक्टर चलते हैं।

सार रूप में हम कह सकते हैं कि विज्ञान की उन्नति से मनुष्य को निम्नलिखित लाभ हुए हैं :

१. स्थान की दूरी कम हो गई है।
२. समय की बचत होने से आयु दीर्घ हो गई है।
३. रोगों के निदान और चिकित्सा में भारी सहायता प्राप्त हुई है।
४. अन्न उगाने, उपयोगी वस्त्र बनाने, औद्योगिक समान बनाने तथा गृह और पुल-बाँध निर्माण में कल्पनातीत सुविधा प्राप्त हुई है।
५. मनुष्य की सुख-सुविधा, मनोरंजन आदि में वृद्धि हुई है।
६. विद्या के प्रचार में सहायता मिली है।
७. सागर के अन्तराल से बहुमूल्य पदार्थ प्राप्त करने की शक्ति प्राप्त हुई है।
८. ग्रह-नक्षत्रों का रहस्य खोज निकालने के साधन बनाने का द्वार खुल गया है।
९. प्राकृतिक कोप—बाढ़, सूखा, भूकम्प आदि-से सुरक्षा के उपाय खोजने का मार्ग खुल गया है।

परन्तु विज्ञान से जहाँ इतने लाभ हुए हैं वहाँ हानियाँ भी कुछ कम नहीं हुईं। बन्दूक, रिवाल्वर, मशीनगन, टैंक, डाइनामाइट, पनडुब्बी, विमान बेधक तोपें, बम वर्षक वायुयान, विषैली गैस, परमाणु-बम और उद्‌जन वम आदि संहारक अस्त्र भी विज्ञान ने ही दिए हैं। इसलिए आज मानव सोच में पड़ गया है कि विज्ञान मानव का शत्रु है या उपकारक मित्र ? विज्ञान मानव के लिए वरदान है या एक अभिशाप है ?

परन्तु यह तो सदुपयोग तथा दुरुपयोग पर आश्रित है। मनुष्य को विज्ञान से मानव हितकारी काम ही लेने चाहिए, मानव को नष्ट करनेवाले शस्त्रों की रचना और प्रयोग करने से हमें दूर ही रहना चाहिए। वैज्ञानिक अनुसन्धानों तथा यन्त्रों का प्रयोग रचनात्मक कार्य में ही किया जाना चाहिए।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

समाचार-पत्र

समाचार-पत्र विज्ञान के युग की सबसे महत्त्वपूर्ण देन है। मुद्रण कला के प्रचार के साथ समाचार-पत्रों का जन्म हुआ, समाचार-पत्र के माध्यम से घर बैठे ही हम देश-विदेशों में घटनेवाली घटनाओं का पता चला लेते हैं। शिक्षित समुदाय के लोगों के लिए तो समाचार-पत्र उनके जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। अनपढ़ लोग भी समाचार-पत्र की खबरें सुनने को उत्सुक रहते हैं।

समाचार-पत्र ज्ञान वृद्धि का उत्तम साधन है। समाचार-पत्र पढ़ने-वाले व्यक्ति के लिए संसार की सीमाएँ सिकुड़ कर छोटी हो जाती हैं, नए-नए समाचार पढ़ कर उसकी कूप-मण्डूकता दूर होती है। समाचार-पत्र को पढ़ने से बुद्धि पैनी और मस्तिष्क विकसित होता है।

समाचार-पत्रों की उपयोगिता में आज किसी को तनिक भी सन्देह नहीं है। व्यापारी समाचार-पत्रों में विज्ञापन देकर अधिक लाभ कमाते हैं, सिनेमा मालिक अपने चलचित्रों का इनके द्वारा ज़ोर-शोर से प्रचार करते हैं, डॉक्टर बड़ी-बड़ी बीमारियों के इलाज की औषधियों का इनके द्वारा प्रचार करते हैं, वैज्ञानिक अपनी खोजों और आविष्कारों को इनके सहारे दुनिया के सामने रखते हैं और नौकरी और नीलाम की सूचनाएँ अधिकारी और व्यापारी इनमें निकलवाते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि समाचार-पत्रों में विविध विषयों को लेकर समाचार छापे जाते हैं। समाचार-पत्रों के बलबूते पर ही दुनिया के सब काम-काज चलते हैं। राजनीतिक लेख, व्यापारिक सूचनाएँ, साहित्यिक चर्चाएँ, भाषण और व्याख्यान, खेल-कूद सम्बन्धी खबरें, स्थानीय सूचनाएँ, तापमान सम्बन्धी आँकड़े, सभी कुछ तो इनमें पढ़ने को मिला है। समाचार-पत्र हमें दुनिया की हर बात से अवगत कराते हैं।

समाचार-पत्रों का एक दूसरा पहलू भी है। उपयोगिता के साथ-साथ ये पढ़नेवालों का मन-बहलाव व मनोरंजन भी करते हैं। उनमें छपे कार्टून, हास्य-विनोद के लेख, चुलबुले चुटकले और विनोदपूर्ण वार्ताएँ पाठकों के दिल में गुदगुदी पैदा करती हैं।

चुनाव के समय समाचार-पत्र बड़े ही काम की चीज़ होते हैं। पार्टियाँ अपना प्रचार इनसे करती हैं। उम्मीदवार अपनी योजनाएँ तथा विचार जनता तक समाचार-पत्रों से पहुँचाते हैं। समाचार-पत्र यदि किसी

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

दल-विशेष की बड़ाई करते हैं, तो किसी दल-विशेष की टाँग खींचते हैं। सच तो यह है कि इनके बल पर ही चुनाव लड़े और जीते जाते हैं।

जहाँ समाचार-पत्रों से अनेक लाभ हैं वहाँ उनसे कुछ हानियाँ भी हैं। कुछ समाचार-पत्र झूठी और गलत खबरें छाप कर लोगों को सचाई से दूर रखते हैं। ऐसे भी समाचार-पत्र देखे गए हैं जो देश में भेदभाव और साम्प्रदायिकता को भड़काते हैं और देश की एकता में विष घोलते हैं। कुछ समाचार-पत्र लोगों की अकारण, आलोचनाएँ और अनुचित निन्दा करते हैं। खराब समाचार-पत्र अश्लील साहित्य छापकर पढ़नेवालों की रुचि खराब करते हैं तथा चरित्र-हीनता फैलाते हैं। कभी-कभी समाचार-पत्रों के गलत विज्ञापनों से गन्दी चीज़ें खरीद कर लोग ठगे जाते हैं। अतः लोगों को चाहिए कि वे अच्छे समाचार-पत्रों का ही चयन करें। अच्छे समाचार-पत्र राष्ट्र की प्रगति और उत्थान में सहायक होते हैं। अच्छे पत्रों की वृद्धि पर ही देश की सुख और समृद्धि निर्भर करती है।

समाचार-पत्र कई प्रकार के होते हैं। प्रतिदिन निकलनेवाले पत्र को 'दैनिक समाचार-पत्र' कहते हैं। साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक उसके अन्य प्रकार हैं। 'समाचार-पत्र' कभी-कभी अपने विशेषांक आदि भी निकालते हैं; जैसे होली-विशेषांक, दीपावली-विशेषांक और गणतन्त्र दिवस विशेषांक आदि। इस प्रकार के विशेषांक बड़े आकर्षक होते हैं क्योंकि इनमें चुनी हुई पाठ्य-सामग्री होती है। अन्त में यह कहे बिना नहीं रहा जाता कि समाचार-पत्र आज के युग की आवश्यकता बन गया है।

भारतीय संस्कृति

किसी विद्वान ने संस्कृति की परिभाषा इस प्रकार की है—'यह मन, आचार अथवा रुचियों का परिष्कार है।' एक अन्य विद्वान ने कहा है— 'संस्कृति का अर्थ स्वभाव, चरित्र, विचार और कर्म की वे प्रकट अच्छाइयाँ हैं, जो शिष्ट लोगों के जीवन का अंग होती हैं तथा जिनका अनुकरण परिवार, वर्ग, समाज यहाँ तक कि राष्ट्र की विशेषता बन जाता है।'

संस्कृति के अन्दर धर्म, समाज, नीति, राजनीति, दर्शन (फिलॉसफी) साहित्य, परम्पराएँ, मानवीय मूल्य तथा सौन्दर्य-बोध आदि सभी बातें आ जाती हैं।

भारतीय संस्कृति एक प्राचीन संस्कृति है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता समन्वय है—यह जीवन में योग तथा त्याग का समन्वय करती है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

यह सबको सुखी और प्रसन्न देखना चाहती है। यह वसुधा को ही कुटम्ब मानने में विश्वास रखती है। इसका परम उद्देश्य है—सर्वजनहित तथा सर्वजनसुख।

इस संस्कृति ने बताया है कि व्यक्ति जिस रूप में ईश्वर की अर्चना करे, उसी रूप में उसे ईश्वर स्वीकार करता है—केवल श्रद्धा सच्ची होनी चाहिए। हमारी संस्कृति में वैदिक काल से जो ईश्वर के विविध रूपों को मानने की स्वतन्त्रता थी वह निरन्तर बनी रही, जैसा कि कहा है—

'जिसकी उपासना शैव शिव के रूप में, वेदान्ती ब्रह्मा के रूप में, बौद्ध जन बुद्ध के रूप में, नैयायिक सृष्टिकर्ता के रूप में, जैन अर्हंत के रूप में और मीमांसक लोग कर्म के रूप में करते हैं, वह त्रिलोकीनाथ आपकी कामनाओं को पूर्ण करे।'

यही कारण है कि हमारी संस्कृति में ईश्वर को भिन्न-भिन्न नामों से पुकारने की विशाल हृदयता बराबर बनी रही है और भारतवासियों के मन इस बारे में कभी संकीर्ण नहीं बने। यह है भारतीय संस्कृति की प्रथम विशेषता।

भारतीय संस्कृति की दूसरी विशेषता यह है कि वह आनन्द-प्रधान है। यह सिखलाती है कि सुख-दुःख में, हानि-लाभ में, जय-पराजय में, उत्थान-पतन में, हर्ष-विषाद में, मानसिक सन्तुलन और समभाव बनाए रहो। यह गुण इस संस्कृति को माननेवाले मनुष्यों में बहुत सीमा तक रहा है। शायद यही कारण है कि जहाँ यूनान, मिस्र, रोम आदि की संस्कृतियाँ संसार से मिट गईं, वहाँ भारतीय संस्कृति अक्षुण्ण बनी रही। भारतीय साहित्य, संगीत, मूर्तिकला, चित्रकला, नृत्यकला तथा वास्तुकला (भवन-निर्माण कला) को देखने से स्पष्ट होता है कि यहाँ आनन्द ही जीवन का लक्ष्य रहा है। उपनिषदों में भी यही कहा गया है।

भारतीय संस्कृति की तीसरी विशेषता है, कर्मवाद। यहाँ किसी को कर्म से मुक्ति नहीं—चारों वर्णों और चारों आश्रमों के लोगों के लिए नियत कर्म आजीवन करते रहने का आदेश है और वेद ने जो आदेश दिया था कि 'सौ वर्ष तक कर्म करते हुए जीवित रहने की इच्छा करें' वह आदेश बराबर दोहराया जाता रहा है।

भारतीय संस्कृति की चौथी विशेषता यह है, कि इसमें विचारों की स्वतन्त्रता रही है। यहाँ वेदों के एकेश्वरवाद को, उपनिषदों के ब्रह्मवाद

 Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

को, पुराणों के अवतारवाद को बौद्धों के शून्यवाद को, सन्तों के निर्गुणवाद को विकसित होने की खुली छूट मिल रही है। दूसरे शब्दों में, अपना-अपना मत प्रकट करने या विचार प्रकट करने या विचार परिवर्तन करने की यहाँ सदा स्वतन्त्रता रही है। ज़बर्दस्ती राज-दण्ड के ज़ोर से किसी को कोई एक विशेष मत मानने के लिए बाध्य नहीं किया जाता रहा।

इसी विशाल हृदय स्वतन्त्रता तथा उदारता के कारण इस देश में सर्व-धर्म समभाव पनपता आया है। मत या विचार को लेकर यहाँ शस्त्र प्रयोग नहीं हुआ, बल्कि शास्त्रार्थ होता रहा है। वेदों और उपनिषदों की उदारता दर्शनशास्त्रों, जातक ग्रन्थों, रामायण और महाभारत में भी दिखाई पड़ती है। यहाँ के महाकवि—अश्वघोष, कालिदास, भास और भवभूति आदि मानव मात्र की कल्याण-कामना करते आए हैं।

पश्चिम के विद्वान इसी कारण इस संस्कृति पर मुग्ध होकर इसका गुणगान करने पर बाध्य हुए और कर्लायल, इमर्सन, थोरो, वाल्ट, ह्विट-मैन, कांट, शोपनहावर, विक्टर काजिन, श्लेगल और मैक्समूलर जैसे दार्शनिकों ने बड़ी श्रद्धा से भारतीय संस्कृति की सराहना की है।

इस संस्कृति में यह भी एक बड़ी विशेषता है कि यह सब को अपनाने, सबको गले लगाने, सबके गुणों को ग्रहण करने, सबकी विशेषताओं की सराहना करने की शिक्षा देती है। भारत में शक, हूण, कुषाण, ग्रीक, सिथियन, पारसी, यहूदी, मुसलमान आदि अनेक जातियों के लोग आए और इस संस्कृति में सब-के-सब समाते गए। कबीर, नानक, चिश्ती, बुल्ले-शाह आदि सन्त फकीर इस संस्कृति में समन्वय लानेवाले हुए और उन्होंने विषमता को दूर करने का प्रयत्न किया।

आधुनिक काल में राममोहन राय, दयानन्द, विवेकानन्द, रामतीर्थ, गोखले, महात्मा गाँधी, लाजपतराय आदि महानुभावों ने इस संस्कृति में पुनः प्राणों का संचार किया। उन्होंने भी यही दुहराया—

'निर्वैरः सर्वभूतेषु'; अर्थात् सब प्राणियों के प्रति वैर-रहित भावना होनी चाहिए।

'सब सुखी हों, सब निरोग हों, सब कल्याण के कार्य देखें, कोई भी प्राणी दुःखी न हो।' मानव मात्र की इस कल्याण कामना में ही भारतीय संस्कृति का मूल तत्व छिपा है। भौतिकता से ऊबा हुआ पश्चिम आज भारतीय संस्कृति की ओर आशा भरी दृष्टि से देख रहा है।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

अभ्यास के लिए निबन्ध

(१) हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ कवि।
(२) दिल्ली है दिल हिन्दुस्तान का।
(३) रक्षा-बन्धन।
(४) बादल की आत्मकथा।
(५) रविवार का दिन मैंने कैसे बिताया ?
(६) मेरा देश।
(७) सुनील गावस्कर।
(८) पर्वतारोही तेनसिंह।
(९) भारत के बढ़ते चरण।
(१०) फैशन का भूत।
(११) परिश्रम स्वर्ग से भी बढ़कर बहुमूल्य वस्तु है।
(१२) कष्ट-सहिष्णुता सुखों की कुंजी है।
(१३) स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री।
(१४) एक काल्पनिक विमान यात्रा।
(१५) सब दिन होत न एक समान।
(१६) ब्लैक आउट का रिहर्सल।
(१७) देश के प्रति विद्यार्थियों का कर्त्तव्य।
(१८) दीर्घायु होने के उपाय।
(१९) मेरा कंजूस मित्र।
(२०) किसी मैच का आँखों देखा वर्णन।
(२१) मैं बड़ा होकर क्या बनूंगा ?
(२२) हम सब सुमन एक उपवन के।
(२३) अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।
(२४) भगवान् श्रीकृष्ण।
(२५) हमारा सुखी परिवार।
(२६) एन० सी० सी०।
(२७) "मजहब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना।"
(२८) "क्यू" का महत्त्व।

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

(२९) कुतुबमीनार पर से दिल्ली नगर के दृश्य का वर्णन।
(३०) दूरदर्शन द्वारा शिक्षा।
(३१) आदर्श विद्यार्थी।
(३२) सह-शिक्षा।
(३३) मेरी प्रिय पुस्तक।
(३४) परोपकार।
(३५) समय का सदुपयोग।
(३६) गुरु नानक।
(३७) रिक्शावाला।
(३८) सांध्य-सौन्दर्य।
(३९) अनुशासन और युवा जगत।
(४०) दुर्गा-पूजा।

G.N.D. 806

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)

Digitization by Hindu-Heritage-Foundation of America. HHFA(USA)